राजभाषा पत्रिका

अंक : 42

2025

रेल मुक्ता

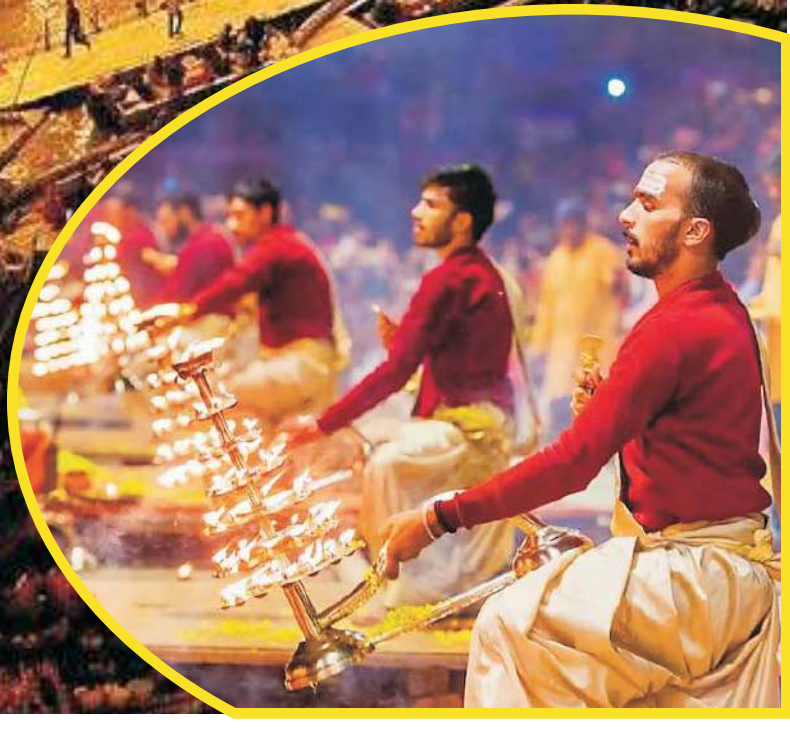

पूर्व मध्य रेल

पंडित दीनदयाल

उपाध्याय मंडल

शुभकामना संदेश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय मंडल नित्य प्रति सफलता के नये आयाम गढ़ रहा है। जहाँ एक ओर हम रेल यात्रा को सुलभ, संरक्षित एवं सुरक्षित करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं, वहीं मंडल से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'रेल मुक्ता' हमारे कार्यों को न केवल जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रही है, बल्कि हिंदी के प्रयोग-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभा रही है। सृजनात्मकता हमारे विकास यात्रा की बुनियाद है। भावनाओं की अभिव्यक्ति और तकनीक का प्रसार इस यात्रा की धुरी है। पत्रिका के 42वें अंक में रचनाकारों की सृजनात्मकता पत्रिका को एक नया स्वरूप प्रदान करती है।

हिंदी देश को एकता के सूत्र में बाँधने में सबसे सफल माध्यम रही है और इसलिए हिंदी को और समृद्ध एवं जन-जन की भाषा बनाने के लिए इसकी मौलिकता एवं प्रासंगिता बनाए रखना हमारे रचनात्मक क्षमता का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

इस पत्रिका को आकर्षक, सारगर्भित एवं उपयोगी बनाने के लिए मैं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएँ देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो।

धन्यवाद!

(उदय सिंह मीना)

मंडल रेल प्रबंधक

राजभाषा पत्रिका

42वाँ अंक

रेल मुक्ता

संरक्षक
उदय सिंह मीना
मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक
दिलीप कुमार
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
सह
अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक
राजेश कुमार
राजभाषा अधिकारी
सह
सहायक कार्मिक अधिकारी

सहयोग
विनोद कुमार
वरिष्ठ अनुवादक (प्रभारी)
रवि भूषण
वरिष्ठ अनुवादक
प्रिंस कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
पूनम कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक
कैलाश नाथ
टंकण अधीक्षक

संपर्क

राजभाषा अधिकारी
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व मध्य रेल, डीडीयू नगर
चंदौली, उत्तर प्रदेश 232101
फोन : 05414-272136
मोबाइल : 09794848603

आवरण

देव दीपावली

मुद्रण

पुष्पक प्रिंटर्स स्टेशनर्स
पीडीडीयू नगर, मो.: 9935611528

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक/ कवि	पृष्ठ सं.
1.	शुभकामना संदेश	मंडल रेल प्रबंधक	2
2.	प्रधान संपादक की कलम से	दिलीप कुमार	4
3.	भ्रष्टाचार निवारण नियम	राजेश कुमार	5
4.	भारतीय रेल के डिजिटल युग की ओर बढ़ते कदम	मनीष कुमार	6
5.	भारतीय रेल दुर्घटना प्रोटोकॉल	अजय कुमार	9
6.	नैतिक ज्ञान		10
7.	बाल मन	डॉ. चन्द्रशेखर झा	11
8.	महाकुंभ: आस्था का महासंगम और भारतीय रेल	सतीश कुमार	12
9.	आर पी एफ रेलवे की सुरक्षा के रखवाले	शमीम अंसारी	14
10.	मोटे अनाज यानी श्रीअन्न	मुखराम सिंह	17
11.	बीएचयू हॉस्टल के दिनों की यादें	अमिताभ कुमार	18
12.	धन पिपासु	नरेन्द्र कुमार	19
13.	रेल यात्रा और हिंदी: एक अनमोल रिश्ता	ममता कुमारी	20
14.	रेल सेवा (आचरण) नियम-1966	राजेश कुमार	26
15.	'क' को क्या कहकर पुकारूँ?	रामजी प्रसाद 'भैरव'	29
16.	बुद्धू	विनोद कुमार	31
17.	बसमतिया	रवि भूषण	32
18.	रामभरोसे	दिनेश चंद्र	34
19.	ताड़ीघाट का पुल	शिव प्रसाद सिंह	36
20.	सुरक्षा की नई कहानी-भारतीय रेल की जुबानी	अजय कुमार	41
21.	लू से बचें और सहेजें जीवन	डॉ. चंद्रशेखर झा	41
22.	कविता	राजमणि मिश्र	42
23.	हिंदी तो दिल में	प्रेम प्रकाश प्रेम	42
24.	बचपन, माली की चिंता	प्रिंस कुमार	43
25.	सीटी-रेल अच्छा खेल	प्रभंजन कुमार गुप्ता	44
26.	डीडीयू मंडल की गतिविधियां		45

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के हैं, इसके लिए संपादक मंडल जिम्मेदार नहीं है।

निःशुल्क वितरण

प्रधान संपादक की कलम से

डीडीयू मंडल की गृह पत्रिका 'रेल मुक्ता' का निरंतर प्रकाशन हर्ष का विषय है। 42वाँ अंक इस शृंखला में निश्चय ही एक बहुमूल्य भूमिका अदा करेगा। भारतीय रेल के बहुमुखी विकास में राजभाषा हिंदी के योगदान को अभिव्यक्ति की संवाहिका के रूप में सदैव देखा जाता रहा है।

मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक परिवेश का निर्माण भारतीय रेल के लिए शुभ संकेत है, जहाँ एक ओर रेल के तकनीकी पक्ष से पाठकों को अवगत कराया जा रहा है वहीं दूसरी ओर साहित्यिक लेखनी हमारी भाषा एवं सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण बनाये रखने में बहुमूल्य योगदान करेगी।

पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का यह अंक पाठकों को निश्चय ही अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहेगा। 'रेल मुक्ता' की विकास यात्रा में आपका सुझाव सदैव आमंत्रित है।

धन्यवाद!

दिलीप कुमार
14/12/22

(दिलीप कुमार)
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
सह
अपर मंडल रेल प्रबंधक

भ्रष्टाचार निवारण नियम

- राजेश कुमार

रेल संगठन में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने व रोक हेतु अनुशासनिक कार्रवाई के लिये बनाये गये नियमों का इतिहास -

1. भारतीय इतिहास में भ्रष्टाचार अनादि काल से है। चौथी शताब्दी में कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में राजकोष के गबन के 40 तरीकों का उल्लेख किया था। सदियों से, दुनिया ने जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में भ्रष्ट आचरण का सामना किया है। आज हमारे सामने चुनौती एक ऐसा वातावरण बनाने की है जिसमें सत्यनिष्ठा और ईमानदारी कायम रहे और भ्रष्टाचारियों को तुरंत दंडित किया जाए। इसलिए रेल प्रशासन द्वारा भ्रष्टाचार की शिकायतों की जाँच करने, निवारक जाँच करने, प्रणाली में सुधार का सुझाव देने और अनियमितताओं के दोषियों को उचित दंड मिले। इसके लिये अनुशासन एवं अपील नियम-1966 बनाया गया है।

2. भारतीय रेलवे सबसे बड़ा सरकारी संगठन है, जिसमें 13 लाख से अधिक कर्मचारियों के बीच लगभग 18000 अधिकारी हैं। इस संगठन का इतिहास 165 साल पुराना है और जो 66,000 किलो मीटर लंबे रूट और 7100 रेलवे स्टेशनों पर प्रतिदिन 23000 से अधिक रेलगाड़ियों का संचालन करता है, जिसमें 2.3 करोड़ से अधिक यात्री आते-जाते हैं और प्रतिदिन 30 लाख टन से अधिक माल ढुलाई करता है, जो अपनी रेलगाड़ियों को 24 X 7 चलाता है, हालांकि, इसके अधिकारियों और कर्मचारियों की एक बड़ी संख्या को ईमानदार और अपने काम के प्रति समर्पित माना जाता है, यह भी कहा जा सकता है कि कई ऐसे भी हैं जिनकी ईमानदारी संदिग्ध है।

भ्रष्टाचार के निवारण हेतु विभिन्न जाँच एजेंसियाँ एवं इसका विकास

1. **विशेष पुलिस स्थापना-** सरकार ने भ्रष्टाचार की समस्या की गंभीरता को देखते हुए, दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम, 1946 के अनुसार, विशेष पुलिस स्थापना (एसपीई) की स्थापना की।

2. **भारतीय रेलवे जाँच समिति-** रेलवे के कामकाज का सामान्य सर्वेक्षण करने के लिए 1947 में भारतीय रेलवे जाँच समिति गठित की गई थी। इस समिति ने भ्रष्टाचार की पहचान और इससे निपटने की उपया ढूँढना था। इस दिशा में पहली संगठनात्मक प्रतिक्रिया अप्रैल, 1948 में रेलवे बोर्ड द्वारा प्रत्येक क्षेत्रीय रेलवे पर भ्रष्टाचार के मामलों की रोकथाम का पता लगाने और विभागीय जाँच के लिए एक स्वतंत्र भ्रष्टाचार निरोधक विभाग स्थापित की गई, जो विभागीय/प्रक्रियात्मक अनियमितताओं से संबंधित मामले, जिनके परिणामस्वरूप व्यापारियों, यात्रियों, ठेकेदारों, अन्य व्यक्तियों/फर्मों को विशेष लाभ पहुँचाया गया।

3. **रेलवे भ्रष्टाचार जाँच समिति-** रेल मंत्रालय द्वारा 9 सितंबर 1953 को रेलवे भ्रष्टाचार जाँच समिति की नियुक्ति की गई थी। यह एक संसदीय समिति थी, जिसके अध्यक्ष आचार्य जे.बी. कृपलानी थे। इसका संक्षिप्त विवरण भारतीय रेलवे में भ्रष्टाचार के मुद्दों के संपूर्ण दायरे को देखना था सार्वजनिक व्यवहार में रेलवे कर्मचारियों के बीच भ्रष्टाचार की सीमा, उनके द्वारा अपनाए गए भ्रष्टाचार के तरीके, भ्रष्टाचार के कारण, जनता की जिम्मेदारी, नियमों और विनियमों में खामियाँ जो भ्रष्टाचार की गुंजाइश छोड़ती हैं और इस बुराई को मिटाने के लिए प्रशासनिक और कानूनी उपाय करना था। कृपलानी समिति की सिफारिशों के अनुसार, ये सतर्कता इकाइयाँ 1956 में सभी क्षेत्रीय रेलों पर स्थापित की गईं और वरिष्ठ वेतनमान अधिकारियों के अधीन रखी गईं।

4. **प्रशासनिक सतर्कता प्रभाग-** गृह मंत्रालय ने अगस्त, 1955 में भारत सरकार के सभी मंत्रालयों की भ्रष्टाचार-विरोधी गतिविधियों के निर्देशन और समन्वय का समग्र उत्तरदायित्व निर्वहन हेतु गठन किया गया।

5. **केंद्रीय जाँच एजेंसी-** रेलवे बोर्ड में फरवरी, 1957 से एक केंद्रीय जाँच एजेंसी गठित किया गया। जिसका प्रशासनिक प्रमुख निदेशक (सतर्कता) थे। इस एजेंसी को खुफिया जानकारी एकत्र करने, रेलवे अधिकारियों के बीच भ्रष्टाचार के महत्वपूर्ण मामलों की जाँच करने, अन्य पूछताछ करने और महत्वपूर्ण जाँचों में विशेष पुलिस विभाग और राज्य पुलिस के साथ संपर्क करने के कार्य सौंपे गए थे।

6. रेलवे बोर्ड ने सतर्कता संगठन का प्रशासनिक नियंत्रण मुख्य सुरक्षा अधिकारी से प्रत्येक क्षेत्रीय रेलवे के स्तर पर वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (एसडीजीएम) को हस्तांतरित कर दिया।

7. **भारतीय रेलवे पर सतर्कता संगठन की वर्तमान संरचना -** भारतीय रेलवे पर सतर्कता की संरचना को विभिन्न समितियों की सिफारिशों द्वारा सतर्कता संगठन का नेतृत्व प्रधान कार्यकारी निदेशक (सतर्कता) जिसे पहले सलाहकार, सतर्कता के रूप में जाना जाता था, जो रेल मंत्रालय के मुख्य सतर्कता अधिकारी हैं और रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष को रिपोर्ट करते हैं। वह रेल मंत्रालय और सीवीसी के बीच एक कड़ी हैं।

वह भारत सरकार में अतिरिक्त सचिव के पद पर हैं।

रेलवे बोर्ड के सतर्कता निदेशालय में अधिकारियों और कर्मचारियों की एक टीम सहायता की जाती है। क्षेत्रीय रेलवे के स्तर पर, सतर्कता संगठन का नेतृत्व वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (एसडीजीएम) करते हैं, जिन्हें क्षेत्रीय रेलवे के मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में भी नामित किया गया है। सीवीओ सीधे महाप्रबंधक/इकाई के प्रमुख को रिपोर्ट करता है। वह आमतौर पर भारत सरकार के संयुक्त सचिव के पद पर होता है। उन्हें रेलवे सेवाओं के विभिन्न विषयों से लिए गए सतर्कता अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है-मुख्य सतर्कता अधिकारी (वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड), उप मुख्य सतर्कता अधिकारी (चयन ग्रेड/कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड), सतर्कता अधिकारी (वरिष्ठ वेतनमान) और सहायक सतर्कता अधिकारी (कनिष्ठ वेतनमान) और निरीक्षक, निरीक्षक, कार्यालय कर्मचारी आदि होते हैं।

सतर्कता मामलों से उत्पन्न अनुशासन एवं अपील (डी एंड ए) संबंधी पूछताछ के लिए एसडीजीएम के प्रशासनिक नियंत्रण में एक जाँच संगठन है। इस संगठन में जांच अधिकारी (वरिष्ठ वेतनमान), सहायक जांच अधिकारी (कनिष्ठ वेतनमान) और जाँच निरीक्षक कार्यरत हैं जो सर्तकता संबंधित अनुशासनिक मामले जाँच कर रिपोर्ट देते है जिसके अनुसार अनुशासनिक पदाधिकारी अपने विवेक से कार्य करते हैं।

राजभाषा अधिकारी
सह
सहायक कार्मिक अधिकारी
पू.म.रे./डीडीयू

भारतीय रेल के डिजिटल युग की ओर बढ़ते कदम

ATVM, UTS ऑन मोबाइल ऐप और पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस

- मनीष कुमार

भारतीय रेल देश की जीवन रेखा है, और यह निरंतर तकनीकी प्रगति के माध्यम से यात्रियों की सुविधा को सर्वोपरि रखते हुए कार्य कर रही है। रेलवे द्वारा समय-समय पर यात्रियों की सुविधा और अनुभव को बेहतर बनाने के लिए नई तकनीकों को अपनाता रहा है। यात्रियों की बढ़ती संख्या और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए टिकटिंग प्रणाली को आधुनिक और सहज बनाने के उद्देश्य से भारतीय रेल ने ATVM, UTS ऑन मोबाइल ऐप और पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस जैसे तकनीकी साधनों को अपनाया है। ये सभी नवाचार रेलवे की 'डिजिटल इंडिया' की परिकल्पना को साकार करने में सहायक हैं। ये सेवाएं न केवल यात्रियों को लंबी कतारों से बचाती हैं, बल्कि टिकट बुकिंग प्रक्रिया को भी तेज, सरल और पर्यावरण के अनुकूल बनाती हैं। इसके साथ ही, रेलवे ने पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस (PTD) और फैसिलिटेटर्स की मदद से इन सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाया है।

डिजिटल टिकटिंग के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए इन नवाचारों के विशेषताएँ, फायदे और उपयोग की विधि सहित समुचित जानकारी से लोगों का जागरूक होना अत्यंत ही आवश्यक है।

ऑटोमैटिक टिकट वेंडिंग मशीन (ATVM)

भारतीय रेल ने यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए टिकटिंग प्रणाली में कई तकनीकी सुधार किए हैं। इन्हीं प्रयासों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, ऑटोमैटिक टिकट वेंडिंग मशीन (ATVM) जो रेलवे स्टेशनों पर त्वरित और सहज टिकट प्राप्ति का माध्यम बन चुकी है।

ATVM एक टच स्क्रीन आधारित मशीन है, जिससे यात्री बिना टिकट काउंटर की कतार में लगे, स्वयं ही टिकट निकाल सकते हैं। यह प्रणाली खासतौर पर अनारक्षित General टिकट और प्लेटफॉर्म टिकट की तत्काल आवश्यकता को देखते हुए विकसित की गई है।

मुख्य विशेषताएँ

* स्पर्श स्क्रीन इंटरफेसः यात्रियों को सरल और स्पष्ट विकल्प प्रदान करता है।
* स्मार्ट कार्ड से भुगतानः नकदी की आवश्यकता नहीं, टच एंड गो सुविधा।
* बाहुभाषी समर्थनः हिंदी, अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध।

* टिकट के कई विकल्पः जनरल टिकट, प्लेटफॉर्म टिकट, मासिक पास का नवीनीकरण आदि।

ATVM के लाभ

* लंबी कतारों से छुटकाराः टिकट खिड़की की भीड़ से बचाव।
* समय की बचतः टिकट प्राप्त करने की प्रक्रिया में तेजी।
* आत्मनिर्भरता में वृद्धिः यात्री खुद टिकट बना सकते हैं।
* 24X7 सुविधाः व्यस्त समय में भी सहज टिकटिंग।
* डिजिटल भुगतान को बढ़ावाः कैशलेस लेनदेन से पारदर्शिता।

उपयोग की विधि

* रेलवे स्टेशन परिसर में स्थित ATVM पर जाएँ।
* स्मार्ट कार्ड को मशीन पर टच करें।
* स्क्रीन पर दिए गए विकल्पों से गंतव्य स्टेशन, यात्रा वर्ग, टिकट संख्या आदि चुनें।
* 'प्रिंट टिकट' विकल्प पर टैप करें।
* मशीन से तुरंत टिकट प्रिंट होकर निकल आता है।
* स्मार्ट कार्ड न होने पर, भुगतान के अन्य विकल्प जैसे QR कोड, UPI इत्यादि भी उपलब्ध है।

फैसिलिटेटर्स की भूमिका

ATVM मशीनों के उपयोग को बढ़ावा देने और यात्रियों को सहायता प्रदान करने के लिए रेलवे ने फैसिलिटेटर्स नियुक्त किए हैं। ये प्रशिक्षित कर्मचारी यात्रियों को मशीन का उपयोग करने में मदद करते हैं और उन्हें डिजिटल टिकटिंग के लाभों के बारे में जागरूक करते हैं।

फैसिलिटेटर्स के कार्यः

* यात्रियों को ATVM मशीन का उपयोग सिखाना।
* डिजिटल भुगतान प्रक्रिया में सहायता करना।
* तकनीकी समस्याओं का समाधान करना।

ATVM ने रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने के अनुभव को तेज, सुविधाजनक और आधुनिक बना दिया है। यह मशीनें रेलवे की डिजिटलीकरण यात्रा का हिस्सा हैं, जो यात्रियों को सशक्त बनाते हुए समय और संसाधनों की बचत करती हैं। रेलवे द्वारा ATVM का व्यापक प्रसार यात्रियों को 'क्यू-लेस' और 'कैश-लेस' सेवा की ओर प्रोत्साहित करता है।

UTS ऑन मोबाइल ऐप
Unreserved Ticketing System

डिजिटल इंडिया की परिकल्पना को साकार करते हुए भारतीय रेल ने टिकटिंग प्रणाली को आधुनिक और स्मार्ट बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम उठाया हैः UTS ऑन मोबाइल ऐप। यह ऐप अनारक्षित यात्रा टिकटों को पाने का एक तेज, सरल और पर्यावरण-अनुकूल माध्यम बन गया है, जिससे यात्री अब अपने मोबाइल से ही टिकट बुक कर सकते हैं।

UTS (Unreserved Ticketing System) ऑन मोबाइल ऐप एक आधिकारिक रेलवे मोबाइल एप्लिकेशन है जो यात्रियों को जनरल टिकट, प्लेटफॉर्म टिकट, और सीजन पास की बुकिंग की सुविधा देता है। यह एंड्रॉइड और IOS दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है और बिना लाइन में लगे टिकट खरीदने की सुविधा प्रदान करता है।

मुख्य विशेषताएं

* पेपरलेस और पेपर टिकट दोनों विकल्प।
* जीपीएस आधारित लोकेशन ट्रैकिंगः टिकट बुकिंग केवल स्टेशन से निर्धारित दूरी के भीतर ही।
* रिचार्जेबल R-Wallet और UPI कार्ड से भुगतान की सुविधा।
* मासिक/ द्वैमासिक पास का नवीनीकरण।
* बुकिंग हिस्ट्री व टिकट कैंसिलेशन का विकल्प।

प्रमुख लाभ

* कतारों से मुक्तिः टिकट काउंटर पर खड़े रहने की जरूरत नहीं।
* समय की बचतः कुछ ही सेकंड में टिकट बुकिंग।
* पर्यावरण के अनुकूलः पेपरलेस टिकट विकल्प से कागज की बचत।
* डिजिटल भुगतान को बढ़ावाः नकदी की आवश्यकता समाप्त।
* हर समय, हर जगह सेवाः भीड़भाड़ के समय में भी सुविधा उपलब्ध।

उपयोग की विधि

* अपने स्मार्टफोन में UTS on Mobile ऐप को Google Play Store या Apple App Store से डाउनलोड करें।
* ऐप में पंजीकरण करें और लॉगिन करें।
* 'बुक टिकट' विकल्प पर क्लिक करें और अपनी यात्रा

की जानकारी (स्टेशन, यात्री संख्या, टिकट प्रकार) भरें।
* पेमेंट मोड (R-Wallet, UPI डेबिट/ क्रेडिट कार्ड) चुनें।
* टिकट बुक होते ही मोबाइल स्क्रीन पर QR कोड या पेपरलेस टिकट प्रदर्शित होता है।
* टीटीई को टिकट दिखाने के लिए ऐप में 'शो टिकट' पर टैप करें।

रेलवे वॉलेट (R-Wallet)

UTS ऐप के साथ एक विशेष रेलवे वॉलेट (R-Wallet) भी जुड़ा होता है। इसे 100 रुपये के न्यूनतम अमाउंट से रिचार्ज किया जा सकता है और टिकट बुकिंग के समय तुरंत भुगतान के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

UTS मोबाइल ऐप भारतीय रेल की डिजिटल प्रगति की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय पहल है। इससे यात्रियों को टिकट प्राप्त करने में सुविधाएं और पारदर्शिता मिलती है। यह ऐप न सिर्फ समय की बचत करता है, बल्कि पर्यावरण-संरक्षण और डिजिटलीकरण को भी बढ़ावा देता है। आज जब देश स्मार्टफोन युग में प्रवेश कर चुका है, रेलवे की यह पहल यात्रियों को एक स्मार्ट, सुलभ और सशक्त यात्रा अनुभव प्रदान कर रही है।

पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस (PTD)

भारतीय रेल ने स्टेशन पर अनारक्षित टिकटिंग को अधिक तेज, पारदर्शी और यात्रियों के लिए सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस PTD को लागू किया है। यह डिवाइस रेलवे के वाणिज्यिक स्टाफ को सशक्त बनाता है ताकि वे प्लेटफॉर्म, स्टेशन परिसर या भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में यात्रियों को तुरंत टिकट प्रदान कर सकें।

पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस एक हैंडहेल्ड, बैटरी चालित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जिसका उपयोग स्टेशन स्तर पर वाणिज्यिक कर्मचारी जैसे टिकट निरीक्षक, बुकिंग क्लर्क (मोबाइल मोड में) अथवा चेकिंग स्टाफ द्वारा किया जाता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से जनरल टिकट, प्लेटफॉर्म टिकट, जुर्माना रसीद आदि जारी करने के लिए किया जाता है।

मुख्य विशेषताएँ

* मोबाइल की तरह हाथ में पकड़ने योग्य उपकरण।
* जनरल/ प्लेटफॉर्म टिकट, चालान आदि जारी करने की सुविधा।
* इनबिल्ट या ब्लूटूथ प्रिंटर से रसीद प्रिंट करने की क्षमता।
* डिजिटल भुगतान (UPI कार्ड) की स्वीकृति (जहाँ उपलब्ध)।
* रीयल टाइम डाटा ट्रांसफर (नेटवर्क उपलब्धता के अनुसार)।
* ऑफलाइन मोड में कार्य करने की सुविधा।

उपयोग की स्थिति

* स्टेशन परिसर में भीड़ के समय मोबाइल टिकटिंग के लिए।
* विशेष आयोजनों (मेला-त्यौहार) में अस्थायी काउंटर की जगह।
* अनियमित यात्रियों से जुर्माना वसूलने हेतु।
* चेकिंग स्टाफ के लिए प्लेटफॉर्म स्तर पर।

प्रमुख लाभ

* **यात्री सुविधा में वृद्धिः** टिकट काउंटर तक जाने की आवश्यकता नहीं।
* **राजस्व में सुधारः** बिना टिकट यात्रा की संभावना कम होती है।
* **द्रुत सेवाः** कुछ ही क्षणों में टिकट या चालान निर्गत।
* **डिजिटल रिकॉर्डिंगः** सभी लेनदेन स्वचालित रूप से संग्रहित।
* **स्थान लचीलापनः** कर्मचारी कहीं से भी सेवा दे सकते हैं।

पोर्टेबल टिकटिंग डिवाइस ने रेलवे के वाणिज्यिक कार्यों को अधिक चुस्त, पारदर्शी और यात्रियों के लिए सुलभ बनाया है। इससे स्टेशन स्तर पर सेवा में लचीलापन आता है और राजस्व बढ़ाने में भी सहायता मिलती है। भारतीय रेल द्वारा अपनाई गई यह तकनीक भविष्य की एक डिजिटल और स्मार्ट रेलवे व्यवस्था की नींव है।

सहायक वाणिज्य प्रबंधक
डीडीयू मंडल, पूर्व मध्य रेल

भारतीय रेल दुर्घटना प्रोटोकॉल

- अजय कुमार

भारतीय रेल विश्व की सबसे बड़ी रेल व्यवस्थाओं में से एक है। लाखों यात्री प्रतिदिन इससे जुड़ते हैं। इतनी बड़ी व्यवस्था में दुर्घटनाएँ होने की संभावना को पूरी तरह समाप्त करना कठिन है, परंतु उनका प्रभाव न्यूनतम करना और समय पर राहत पहुँचाना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य से भारतीय रेल दुर्घटना प्रोटोकॉल तैयार किया गया है। यह प्रोटोकॉल दुर्घटनाओं की सूचना देने, राहत और बचाव कार्य चलाने तथा विभिन्न अधिकारियों व विभागों की भूमिकाओं को स्पष्ट करता है।

दुर्घटना की परिभाषा

रेलवे कार्य में यदि कोई ऐसी घटना घटे जिससे यात्रियों, कर्मचारियों, इंजन, डिब्बों, पटरियों या अन्य संपत्ति की सुरक्षा प्रभावित हो, उसे दुर्घटना माना जाता है।

* गंभीर दुर्घटना वह है जिसमें यात्रियों की मृत्यु हो, गंभीर चोट लगे, रेलवे संपत्ति को दो करोड़ रुपये से अधिक की क्षति हो या जिसे रेल सुरक्षा आयुक्त द्वारा जाँच योग्य माना जाए।
* परिणामी दुर्घटनाएँ वे हैं, जिनमें टक्कर, पटरी से उतरना, आग लगना या लेवेल क्रॉसिंग पर हादसा होना शामिल है।
* असामान्य घटनाएँ जैसे बम धमाका, विस्फोट, अपहरण, डकैती, आत्महत्या आदि।
* विविध घटनाएँ जैसे बाढ़, भूस्खलन, पशुओं का गाड़ियों से टकराना, पुल टूटना आदि।

दुर्घटना की सूचना देने की प्रक्रिया

रेल अधिनियम 1989 की धारा 113 के अनुसार, जब भी कोई गंभीर दुर्घटना घटती है तो नजदीकी स्टेशन मास्टर या संबंधित रेलसेवक को तुरंत जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक तथा स्थानीय थाने को सूचना देनी होती है। साथ ही राज्य सरकार और रेल सुरक्षा आयुक्त को भी इसकी जानकारी दी जाती है। रिपोर्ट में समय, स्थान, दुर्घटना की प्रकृति, मृतक या घायलों की संख्या, कारण और यातायात पर प्रभाव का विवरण देना आवश्यक है।

सूचना का प्रवाह :

दुर्घटना की सूचना का प्रवाह नीचे से ऊपर तक इस प्रकार तय है-

* सबसे पहले गार्ड, लोको पायलट या स्टेशन मास्टर नियंत्रण कार्यालय को सूचना देंगे।
* इसके बाद मंडल स्तर पर सभी अधिकारियों को सूचित किया जाएगा।
* फिर जोनल कार्यालय और अंततः रेलवे बोर्ड तथा मंत्रालय तक जानकारी पहुँचाई जाएगी।
* जनता और मीडिया को सूचना केवल जन संपर्क अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक, महाप्रबंधक या रेल मंत्री स्तर पर दी जाती है।

गंभीर दुर्घटना के समय कार्यवाही

* **मौके पर मौजूद कर्मचारी (गार्ड, चालक, सहायक चालक, टीटीई, स्टेशन मास्टर, आर पी एफ):** ट्रेन और पटरी की सुरक्षा करना, घायलों को प्राथमिक उपचार देना, अस्पताल पहुँचाना, साक्ष्य सुरक्षित रखना, मंडल नियंत्रण कक्ष, दुर्घटना राहत चिकित्सकीय वाहन और दुर्घटना राहत ट्रेन तुरंत रवाना करना, स्थानीय प्रशासन, पुलिस, आपदा प्रबंधन बल और अस्पतालों को सूचित करना।

मंडल मुख्यालय अधिकारी: राहत कार्यों की निगरानी करना, अतिरिक्त कर्मचारियों और संसाधनों की व्यवस्था करना, यात्री सहायता केंद्र स्थापित करना।

जोनल मुख्यालय और रेलवे बोर्ड: महाप्रबंधक और उच्च अधिकारियों तक सूचना पहुँचाना, मंत्रालय और मीडिया को आधिकारिक जानकारी देना।

वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी की भूमिका: गंभीर दुर्घटना होने पर वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी (Sr. DSO) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

* वे मंडल के सुरक्षा शाखा के मुखिया होते हैं और दुर्घटना की प्रारंभिक सूचना प्राप्त होते ही तुरंत कार्रवाई करते हैं।
* वे दुर्घटना की विस्तृत जानकारी को जोनल सुरक्षा अधिकारी तक पहुँचाते हैं।
* सुरक्षा नियंत्रण कक्ष तथा रेलवे बोर्ड की सुरक्षा शाखा को सूचित करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की होती है।
* दुर्घटना की स्थिति, राहत व बचाव कार्य और बहाली की प्रगति की नियमित रिपोर्ट वे उच्च अधिकारियों को देते रहते हैं।
* वे यह भी सुनिश्चित करते हैं कि दुर्घटना संबंधी सूचना सही, त्वरित और पारदर्शी हो तथा इसे सुरक्षा सूचना प्रबंधन प्रणाली (SIMS) पर तुरंत अपलोड किया जाए।
* इस प्रकार, Sr. DSO मंडल स्तर पर दुर्घटना प्रबंधन और उच्च स्तर के साथ समन्वय का प्रमुख स्तंभ हैं।

विभिन्न विभागों की भूमिकाएँ

* चिकित्सा विभागः घायलों का उपचार, अस्पताल तक पहुँचाना
* यांत्रिक, विद्युत और अभियंत्रण विभागः पटरियों की बहाली, दुर्घटना राहत क्रेन और ट्रेन का संचालन।
* वाणिज्य विभागः यात्रियों की सहायता, उनके सामान की सुरक्षा व स्थानांतरण की व्यवस्था व अनुग्रह राशि देना।
* सुरक्षा बलः भीड़ नियंत्रण और कानून-व्यवस्था बनाए रखना।
* सामान्य प्रशासनः संपूर्ण समन्वय, राहत और बचाव की निगरानी तथा जनता को सही जानकारी देना।

उद्देश्य : इस प्रोटोकॉल का सबसे बड़ा उद्देश्य है - 'शून्य दुर्घटना मिशन' अर्थात दुर्घटनाओं को रोकना, और यदि कोई दुर्घटना घटती है तो राहत व बचाव कार्य को अत्यंत शीघ्र, प्रभावी और समन्वित तरीके से संचालित करना।

सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी
डीडीयू मंडल

नैतिक ज्ञान

मैं जितने साल जी चुका हूँ, उससे अब कम साल मुझे जीना है। यह समझ आने के बाद मुझमें यह परिवर्तन आया है :

1. किसी प्रियजन की विदाई से अब मैं रोना छोड़ चुका हूँ क्योंकि आज नहीं तो कल मेरी बारी है।

2. उसी प्रकार, अगर मेरी विदाई अचानक हो जाती है, तो मेरे बाद लोगों का क्या होगा, यह सोचना भी छोड़ दिया है क्योंकि मेरे जाने के बाद कोई भूखा नहीं रहेगा और मेरी संपत्ति को कोई छोड़ने या दान करने की जरूरत नहीं है।

3. सामने वाले व्यक्ति के पैसे, पावर और पोजीशन से अब मैं डरता नहीं हूँ।

4. खुद के लिए सबसे अधिक समय निकालता हूँ। मान लिया है कि दुनिया मेरे कंधों पर टिकी नहीं है। मेरे बिना कुछ रुकने वाला नहीं है।

5. छोटे व्यापारियों और फेरीवालों के साथ मोल-भाव करना बंद कर दिया है। कभी-कभी जानता हूँ कि मैं ठगा जा रहा हूँ, फिर भी हँसते-मुस्कुराते चला जाता हूँ।

6. कबाड़ उठाने वालों को फटी या खाली तेल की डिब्बी वैसे ही दे देता हूँ, पच्चीस-पचास रुपये खर्च करता हूँ, जब उनके चेहरे पर लाखों मिलने की खुशी देखता हूँ तो खुश हो जाता हूँ।

7. सड़क पर व्यापार करने वालों से कभी-कभी बेकार की चीज भी खरीद लेता हूँ।

8. बुजुर्गों और बच्चों की एक ही बात कितनी बार सुन लेता हूँ। कहने की आदत छोड़ दी है कि उन्होंने यह बात कई बार कही है।

9. गलत व्यक्ति के साथ बहस करने की बजाय मानसिक शांति बनाए रखना पसंद करता हूँ।

10. लोगों के अच्छे काम या विचारों की खुले दिल से प्रशंसा करता हूँ। ऐसा करने से मिलने वाले आनंद का मजा लेता हूँ।

11. ब्रांडेड कपड़ों, मोबाइल या अन्य किसी ब्रांडेड चीज से व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना छोड़ दिया है। व्यक्तित्व विचारों से निखरता है, ब्रांडेड चीजों से नहीं, यह समझ गया हूँ।

12. मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ जो अपनी बुरी आदतों और जड़ मान्यताओं को मुझ पर थोपने की कोशिश करते हैं। अब उन्हें सुधारने की कोशिश नहीं करता क्योंकि कई लोगों ने यह पहले ही कर दिया है।

13. जब कोई मुझे जीवन की दौड़ में पीछे छोड़ने के लिए चालें खेलता है, तो मैं शांत रहकर उसे रास्ता दे देता हूँ। आखिरकार, ना तो मैं जीवन की प्रतिस्पर्धा में हूँ, ना ही मेरा कोई प्रतिद्वंद्वी है।

14. मैं वही करता हूँ जिससे मुझे आनंद आता है। लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे, इसकी चिंता छोड़ दी है। चार लोगों को खुश रखने के लिए अपना मन मारना छोड़ दिया है।

15. फाइव स्टार होटल में रहने की बजाय प्रकृति के करीब जाना पसंद करता हूँ। जंक फूड की बजाय बाजरे की रोटी और आलू की सब्जी में संतोष पाता हूँ।

16. अपने ऊपर हजारों रुपये खर्च करने की बजाय किसी जरूरतमंद के हाथ में पाँच सौ हजार रुपये देने का आनंद लेना सीख गया हूँ। और हर किसी की मदद पहले भी करता था और अब भी करता हूँ।

17. गलत के सामने सही साबित करने की बजाय मौन रहना पसंद करने लगा हूँ। बोलने की बजाय चुप रहना पसंद करने लगा हूँ। खुद से प्यार करने लगा हूँ।

18. मैं बस इस दुनिया का यात्री हूँ' मैं अपने साथ केवल वह प्रेम, आदर और मानवता ही ले जा सकूंगा जो मैंने बाँटी है' यह मैंने स्वीकार कर लिया है।

19. मेरा शरीर मेरे माता-पिता का दिया हुआ है। आत्मा परम कृपालु प्रकृति का दान है और नाम समाज का दिया हुआ है... जब मेरा अपना कुछ भी नहीं है, तो लाभ-हानि की क्या गणना?

20. अपनी सभी प्रकार की कठिनाइयाँ या दुख लोगों को कहना छोड़ दिया है, क्योंकि मुझे समझ आ गया है कि जो समझता है उसे कहना नहीं पड़ता और जिसे कहना पड़ता है वह समझता ही नहीं।

21. अब अपने आनंद में ही मस्त रहता हूँ क्योंकि मेरे किसी भी सुख या दुख के लिए केवल मैं ही जिम्मेदार हूँ' यह मुझे समझ आ गया है।

बाल मन

डॉ. चन्द्रशेखर झा

बच्चे की छुट्टी, होली के दो दिन पहले हुई थी। मेरे ओ.पी.डी. कक्ष में तीन दिन की तेज बुखार की शिकायत लेकर स्वयं के इलाज के बाद मेरे ओ.पी.डी. कक्ष में आये थे। स्व इलाज और देर से आने की वजह शायद रंगोत्सव मनाने में कोई व्यवधान न आये यही रही होगी।

प्रथम दृष्टया बच्चे के चेहरे पर संक्रमण के लक्षण प्रतीत हो रहे थे, जिसे अमूमन चिकित्सकीय भाषा में 'टॉक्सिक लुक' कहते है। शारीरिक परीक्षण के उपरांत बच्चे की स्थिति को देखते हुए एक क्षण रूककर क्योंकि इसके समानान्तर मेरे जेहन में ये भी बात चल रही थी कि बीमारी तो ठीक है लेकिन कहीं न कहीं बच्चे के अन्दर चल रहे अंतर्द्वंद्व के स्पष्ट भाव परिलक्षित हो रहे थे। वैसे मेरे मन में यह भी चल रहा था कि यदि मैं बच्चे को भर्ती करता हूँ तो बच्चे की होली और बच्चे के बीच मैं ही आऊँगा। फिर मैने बच्चे के हक में उसे समुचित इलाज के लिये भर्ती करने का मन बनाया। मेरा यह निर्णय इतना त्वरित था कि बच्चे के अभिभावक मेरे मन के उहापोह को भाँप गए होंगे, फिर मैंने बच्चे के माता-पिता से अपने अंतर्गत भर्ती करने और समुचित इलाज की बात बतायी। सुनते ही माता-पिता एक दूसरे की ओर देख रहे थे, लेकिन माँ के चेहरे पर एक छिपी हुई मुस्कराहट और पिता के चेहरे पर कोई भाव नहीं था, जो कि मेरे लिये यह समझने के लिये पर्याप्त था कि निर्णय तो नारी शक्ति के ही हाथ में है। इसी दरम्यान मैंने उन्हें बच्चे के स्वास्थ्य और उसमें निहित उनका लाभ और मेरे द्वारा बताया गया इलाज ही एकमात्र उपाय समझा दिया।

इसी क्रम में मैंने बच्चे के चेहरे से नजर कभी नहीं हटाई,

चेहरा बिल्कुल उतरा था। तीन स्पष्ट कारण बिल्कुल समझ आ गयी कि एक तो उसके अन्दर पल रहा संक्रमण और दूसरा उसके बालमन में चल रही होली की तैयारी में व्यवधान की आशंका और तीसरा भर्ती होने तथा सुई का डर। यह समझना बच्चे के लिये इसलिए भी आसान था कि बीती सर्दियों में भी इन्फ्लूएन्जा के संक्रमण की वजह से साँस फूलने की वजह से बच्चा वार्ड में मेरे अंतर्गत भर्ती हुआ था। मैं बच्चे के अभिभावक से बहुत धीमे स्वर में बात कर रहा था क्योंकि बच्चे की तीक्ष्ण बुद्धि और उसका उतरा चेहरा यह बताने के लिये पर्याप्त था कि ये दहाड मार कर मेरे ओ.पी.डी. कक्ष में ही रोएगा। मेरे पर्ची लिखने के दौरान ही उसकी माँ ने मुझे बताया कि ये अपनी बीमारी से ज्यादा पिचकारी जीन्स ट्राउजर की खरीददारी के लिये परेशान है। पर्ची पूर्ण होने के बाद मैंने शिशु वार्ड के अधीक्षक को अंग्रेजी में दिशा निर्देश दिये one child is going to be admitted under me. Admit Under me. सुनते ही जिस बात की आशंका थी वही हुआ। बच्चा फूट-फूट कर रोने लगा माता-पिता के लाख समझाने के बाद भी बच्चा मान नहीं रहा था। पिताजी ने तो घुटने टेक दिये थे, लेकिन माँ प्रयास में लगी हुई थी। प्रतीक्षारत मरीजों की लम्बी कतार को देखते हुए मैंने मामला अपने हाथ में लेने की सोची। बड़े प्यार से उसका नाम लेकर, अमूमन मैं अपनी मरीजों को नाम से ही संबोधित करता हूँ। महादेव जी की महती कृपा से बच्चे मेरे साथ बड़े ही सहज महसूस करते हैं। चाहे वह बीमार ही क्यों न हो अश्रुपूरित नयन और भीगे गाल तथा डगमगाते हुए कदम से बच्चा मेरे पास आया, पास आते ही कंधे पर हाथ रखते हुए मैंने बच्चे को खुद से चिपकाया और बच्चे की सहजता का अहसास होते ही मैंने बच्चे की माँ से मुखातिब होते हुए एक नकली डॉट लगायी कि अभी तक इसकी पिचकारी, जीन्स, पैंट और चश्मा क्यों नहीं खरीदा? बच्चे की सहज भाव से चिपकते हुए मैंने यह भाँप लिया कि यह डाँट काम कर गई, क्योंकि बच्चे के भाव थोड़े बदल गये थे क्योंकि बच्चे को यह आश्चर्य हो रहा था कि मेरी प्राथमिकता चिकित्सक महोदय को कैसे पता?

सामान्यतया मैं यह महसूस करता हूँ कि जब भी मैं बच्चे के पक्ष में खड़ा होकर उनके अभिभावक से कुछ कहता बच्चे बड़े खुश होते कहीं न कही यह पैरेन्टिंग स्टाइल पर यह प्रश्न चिह्न खड़ा करता है कि लाख सम्पूर्ण अभिभावक समझने के बाद भी बाल मन को समझने में असफल है।

खैर! मैंने कुछ हल्के फुल्के प्रश्न बच्चे किये कि कैसी पिचकारी चाहिए - बैग वाली? मेरा निर्देश - बैग वाली

खरीद देना मेरा दूसरा निर्देश सुनते ही बच्चा ठहठहा कर हंस पड़ा। निर्देश यह था - तुमने तो जीन्स ट्राउजर पहन रखी है तो क्या दूसरी ट्राउजर इसी के ऊपर पहनोगे? बच्चे को सहज भाव से मेरे कक्ष से बाहर जाते देख मैंने राहत की सॉस ली।

पांच दिन के इलाज के बाद होली के दो दिन पूर्व मेरे समक्ष माता-पिता के आश्वासन के बाद की छुट्टी होते ही बच्चे की मॉगों को पूरा करेंगे बच्चा खुश होकर माता-पिता के निर्देश पर चरण स्पर्श करते हुए धूम-धाम से रंगोत्सव मनाने की कल्पना लिये घर की ओर चल पड़ा। होली के बाद चश्मा पहने ही बच्चा धन्यवाद ज्ञापित करने मेरे ओ.पी.डी. कक्ष में आया और आज उसकी मुस्कान भय से परे विजयी मुस्कान थी। माता-पिता ने भी धन्यवाद एवं आभार की औपचारिकता पूरी करते हुए ताकत की दवा लिखने का आग्रह किया। इतने वर्षों के चिकित्सकीय अनुभव में मैंने भूख, पैसे और ताकत की कमी ही पाई लेकिन वो स्वभाविक रूप से मुझसे भूख और ताकत की कमी का ही निराकरण पूछते हैं।

बच्चे के जाते ही 'बाल मन' को सही से पढ़ने के सुखद एहसास ने हृदय को पुलकित कर दिया।

अपर मु.चि.अधीक्षक (शिशु रोग विशेषज्ञ)
चिकित्सा विभाग/ पू.म.रे.,गया

महाकुंभः आस्था का महासंगम और भारतीय रेल

(डीडीयू मंडल द्वारा यात्रियों और तीर्थयात्रियों के लिए अभूतपूर्व व्यवस्थाएँः सुगम-सुरक्षित यात्रा की नई मिसाल)

सतीश कुमार

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का सबसे विराट आयोजन-महाकुंभ मेला, न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक समरसता, मानव एकता और सांस्कृतिक गौरव का जीवंत उदाहरण भी है। करोड़ों श्रद्धालु जब एक स्थान पर एकत्र होते हैं, तो उनके सुगम आवागमन की जिम्मेदारी का सबसे बड़ा दायित्व भारतीय रेलवे पर होता है। यही कारण है कि रेलवे की भूमिका इस महायात्रा में सिर्फ एक परिवहन साधन की नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण और व्यवस्था के स्तंभ के रूप में होती है।

देश की धरती पर जब महाकुंभ जैसा विराट धार्मिक आयोजन होता है, तो न केवल श्रद्धा का सागर उमड़ता है, बल्कि व्यवस्थाओं की परीक्षा भी होती है। महाकुंभ मेला, जो हर 12 वर्षों में आयोजित होता है, विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक समागम है, जहाँ करोड़ों श्रद्धालु एकत्र होकर पुण्य स्नान करते हैं। इस महासंगम को सफल बनाने में भारतीय रेल की भूमिका एक नायक की तरह होती है। रेलवे ही वह धागा है जो देश के कोने-कोने से आने वाली आस्था की डोर को जोड़ता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय मंडल ने महाकुंभ 2025 के अवसर पर यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और सेवा के क्षेत्र में जो कार्य किए, वे संगठनात्मक कुशलता, दूरदर्शिता और कर्तव्यनिष्ठा का अद्भुत उदाहरण हैं। यात्रियों और तीर्थयात्रियों की सुविधा हेतु जिस कुशलता और संवेदनशीलता से कार्य किया गया, वह न केवल अनुकरणीय है, बल्कि रेलवे की सेवाभावना का प्रतीक भी है। भीड़ नियंत्रण से लेकर चिकित्सा सुविधा, टिकटिंग व्यवस्था से लेकर सुरक्षा प्रबंध तक-प्रत्येक पहलू पर विशेष योजनाएं बनाकर उन्हें सफलतापूर्वक लागू किया गया।

स्टेशनों पर संभावित तीर्थयात्रियों के भीड़ का आकलन कर, भीड़ प्रबंधन हेतु सभी संभव प्रयास किये गए। स्टेशनों पर उपलब्ध यात्री होल्डिंग एरिया की समीक्षा कर अतिरिक्त अस्थायी यात्री होल्डिंग एरिया विकसित किए गए। इनमें वाटरप्रूफ टेंट, स्वच्छ शौचालय, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट, पीने का पानी, उद्घोषणा प्रणाली और चौबीसों घंटे सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित की गई।

यात्रियों को आसानी से मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से स्टेशनों पर बेहतर साइनेज और डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड लगाए गए। प्लेटफार्म, एफ.ओ.बी., सर्कुलेटिंग एरिया और मुख्य प्रवेश मार्ग पर भी इनका प्रावधान किया गया। ये यात्रियों को प्लेटफॉर्म नंबर, यात्री होल्डिंग एरिया और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी आसानी से उपलब्ध करने में बहुत ही सहायक सिद्ध हुई।

यात्रियों को बेहतर सही सूचना और समय पर जानकारी उपलब्ध कराने के लिए लगातार उद्घोषणाएँ की गई। यात्रियों की सहायता के लिए पूछताछ केंद्र और हेल्पडेस्क चौबीसों घंटे कार्यरत किये गए। अत्यधिक भीड़ की स्थिति में भगदड़ जैसी किसी भी स्थिति से बचने के लिए स्टेशन एरिया में और प्लेटफार्म के लिए अलग-अलग रास्ते बनाकर भीड़ को नियंत्रित किया गया।

यात्रियों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने हेतु त्वरित प्रतिक्रिया टीम (QRT) गठित की गई। यह टीम यात्रियों को प्लेटफार्म बदलने, चढ़ने-उतरने में सहायता

करती रही। एकतरफा यात्री मूवमेंट के लिए अस्थायी बैरिकेड्स लगाए गए ताकि क्रॉस मूवमेंट से बचा जा सके।

हर प्लेटफार्म पर भीड़ की निगरानी एवं सुरक्षा व्यवस्था के लिए पूर्ण योजना के तहत कर्मचारियों की तैनाती की गयी। स्टेशन पर नियुक्त अधिकारी और विभिन्न विभागों से तैनात पर्यवेक्षकों द्वारा पूर्ण जिम्मेदारी एवं सेवाभाव से निरंतर निगरानी एवं प्रबंधन किया गया।

रेलवे की पूर्ण प्रबंधन प्रणाली में, यात्रियों की सुरक्षा डीडीयू मंडल की सर्वोच्च प्राथमिकता रही। रेलवे सुरक्षा बल (RPF) और राजकीय रेलवे पुलिस (GRP) द्वारा स्टेशनों और ट्रेनों में गश्त बढ़ा दी गई। सीसीटीवी कैमरे, वॉकी-टॉकी संचार, और जिला पुलिस बल की सहायता से संपूर्ण स्टेशन को सुरक्षा कवच प्रदान किया गया। सीसीटीवी कैमरों की व्यापक निगरानी और आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों की तैनाती से यात्रियों को सुरक्षित महसूस करने में अत्यंत ही निर्णायक भूमिका निभायी। महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए विशेष उपाय किए गए हैं, जिससे वे बिना किसी चिंता के यात्रा कर सकीं।

विशेष रेल सेवाओं की प्रभावी व्यवस्था की दिशा में, प्रयागराज से आने-जाने वाली कुंभ स्पेशल ट्रेनों की योजना बेहद सुनियोजित रही। प्लेटफॉर्मों का नामांकन (PF 1-2, 3-4, 7-8) दिशा अनुसार किया गया, जिससे ट्रेनों की आवाजाही व्यवस्थित रही। यात्रियों की बढ़ती संख्या के अनुसार खाली रेक तैयार रखे गए, जिससे आवश्यकता पड़ने पर विशेष ट्रेनें तुरंत चलाई जा सकी। टीएक्सआर टीम की अतिरिक्त तैनाती से तकनीकी समस्याओं का समाधान त्वरित हुआ और ट्रेनों की देरी न्यूनतम रही।

किसी भी आपातकालीन परिस्थिति से निपटने के लिए स्टेशन पर प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, प्रशिक्षित मेडिकल स्टाफ और एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध कराई गई जो आवश्यकतानुसार तुरंत सहायता के लिए तैयार रही। विभिन्न आकस्मिक परिस्थितियों में स्टेशनों पर एवं गाडियों में जिस प्रकार से यात्रियों को प्रथम सहायता के रूप में सी.पी.आर. देकर जीवन रक्षा किया गया, यह रेल प्रशासन की सही योजना, स्टाफ की कुशलता के साथ-साथ कर्तव्य के प्रति तत्परता को दर्शाता है।

दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों की सुविधा के लिए व्हीलचेयर और समर्पित सहायता काउंटरों की व्यवस्था की गई है, जिससे उनकी यात्रा सुगम बन सके। डीडीयू एवं गया स्टेशन पर नियंत्रण कक्ष (Control Room) चौबीसों घंटे सक्रिय रहा। वरिष्ठ अधिकारियों की निगरानी, कैमरों से सीधी फीड और जिला प्रशासन के सहयोग से पूरी प्रक्रिया सतत रूप से संचालित होती रही।

पवित्र कुम्भ के महासंगम और आस्था के इस पर्व में निरंतर भीड़ प्रबंधन, यात्रियों के मार्गदर्शन, भीड़ का आकलन जैसे विभिन्न चुनौतियों में भी टिकट जांच की दिशा में भी रेलवे लगातार प्रयासरत्त रहा जिसके परिणामस्वरूप 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक की अवधि में यात्री आय में 25.97% की वृद्धि दर्ज की गई, जो एक बड़ी उपलब्धि रही।

उपरोक्त अनुसार, महाकुंभ 2025 जैसे विराट आयोजन को सफल बनाने में डीडीयू मंडल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। यह आयोजन जहाँ एक ओर रेलवे के लिए एक बड़ी चुनौती था, वहीं दूसरी ओर इसे अवसर में बदलने की मिसाल भी बना। यात्रियों की आस्था, विश्वास और सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए जो व्यवस्थाएं की गईं, वे भारतीय रेलवे की सेवा भावना और कार्यकुशलता की परिचायक हैं। रेलवे न केवल गाड़ियों का संचालन करता है, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था को सुगमता से गंतव्य तक पहुंचाने का पुण्य कार्य भी करता है और महाकुंभ 2025 इसका सजीव प्रमाण है।

मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य) कार्यालय
डी.डी.यू., पूर्व मध्य रेल

हिंदी में वे सभी गुण और क्षमताएं हैं, जिनके आधार पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

मैथिली शरण गुप्त

कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

रेलवे सुरक्षा बल: आर पी एफ रेलवे की सुरक्षा के रखवाले

- शमीम अंसारी

रेलवे सुरक्षा बल भारत के रेलवे नेटवर्क की सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाता है। अपराध, चोरी और रेलवे में गड़बड़ी रोकने के लिए आर पी एफ लगातार काम करता है। इस लेख में हम आर पी एफ का संक्षिप्त इतिहास, इसका ढांचा, विभिन्न स्तरों पर इसके कर्तव्य और रेलवे की सुरक्षा में इसके योगदान को जानेंगे।

रेलवे सुरक्षा बल का संक्षिप्त इतिहास

आर पी एफ की शुरुआत 19वीं सदी में हुई जब भारत में पहली बार रेलवे सेवा शुरू हुई। उस समय रेलवे में चोरी और तोड़फोड़ जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। शुरू में रेलवे कंपनियों ने अपनी सुरक्षा टीमों का गठन किया और उनका काम रेलवे संपत्ति को सुरक्षित रखना था।

1957 में आर पी एफ अधिनियम पास हुआ और आर पी एफ को औपचारिक सुरक्षा बल का दर्जा मिला। आर पी एफ अपराधियों को गिरफ्तार करके उनका अपने कार्यालय में रिकॉर्ड दर्ज करके कानूनी कार्यवाही के लिए उन्हें जीआरपी (राजकीय रेल पुलिस) को सौंप देता है। समय के साथ, रेलवे सुरक्षा में नए बदलाव आए और आर पी एफ ने उन बदलावों के अनुसार खुद को ढाला। आज, आर पी एफ एक सुव्यवस्थित संगठन है जो पूरे भारत में रेलवे की सुरक्षा करता है।

आर पी एफ का ढांचा

आर पी एफ भारतीय रेल मंत्रालय के अंतर्गत आता है। इसका ढांचा रेलवे की सुरक्षा के लिए प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करता है।

* महानिदेशक (डीजी) इस बल के सर्वोच्च अधिकारी हैं।
* उनके नीचे अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी), महानिरीक्षक (आईजी) और उपमहानिरीक्षक (डीआईजी) जैसे अधिकारी होते हैं।
* डिवीजनल सिक्योरिटी कमांडर विभिन्न रेलवे डिवीजनों में सुरक्षा का जिम्मा संभालते हैं।

आर पी एफ में कुछ विशेष इकाइयाँ भी हैं:

* महिला सुरक्षा विंग (महिला शक्ति सेवा): महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए।
* कैनाइन स्क्वॉड: बम जैसी संदिग्ध वस्तुओं का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित कुत्तों की टीम।
* साइबर सेल: डिजिटल सुरक्षा और साइबर क्राइम रोकने के लिए।

आर पी एफ के विभिन्न स्तरों पर कर्तव्य

आर पी एफ के अधिकारी अपने रैंक और इलाके की जरूरतों के हिसाब से अलग-अलग जिम्मेदारियाँ निभाते हैं।

1. महानिदेशक और वरिष्ठ अधिकारी

* नीति बनाना और रणनीति तैयार करना: रेलवे की सुरक्षा के लिए नीति और योजना बनाते हैं।
* अन्य एजेंसियों के साथ समन्वय: अपराध रोकने के लिए पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर काम करते हैं।

2. डिवीजनल और जोनल अधिकारी

* सुरक्षा संचालन की निगरानी: अपने इलाके में सुरक्षा संचालन का प्रबंधन करते हैं।
* विशेष टास्क फोर्स: ड्रग्स, मानव तस्करी और चोरी जैसी समस्याओं पर ध्यान देते हैं।

3. निरीक्षक और उप निरीक्षक

* दैनिक गश्त और निरीक्षण: ट्रेन और स्टेशनों पर निगरानी रखते हैं।
* अपराध जांच: चोरी और अन्य अपराधों की जांच करते हैं।
* यात्रियों की सहायता: यात्रियों की शिकायतों पर ध्यान देते हैं और यथा संभव उनकी सहायता करते हैं।

4. कांस्टेबल और सहायक स्टाफ

* प्राथमिक सुरक्षा कार्य: ट्रेनों, स्टेशनों और रेलवे परिसर में गश्त लगाते हैं।
* भीड़ नियंत्रण: भीड़ को नियंत्रित कर यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

आर पी एफ के मुख्य संस्थान

1. जेआर आर पी एफ अकेडमी लखनऊ: इसमें आर पी एफ के निरीक्षकों, प्रमोटी अधिकारियों और यूपीएससी से चुने गये अधिकारियों का प्रशिक्षण होता है, इसकी स्थापना 1955 में उत्तर रेलवे के कांस्टेबुलरी ट्रेनिंग सेंटर के तौर पर हुई थी। यह संस्थान अपने उच्च कोटि के

गुणवत्ता पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कारण निरंतर प्रगति करता रहा और 2007 में इसे रेल मंत्रालय के केंद्रीकृत प्रशिक्षण संस्थान होने के गौरव प्राप्त हुआ।

2. जोनल ट्रेनिंग सेंटर: भारतीय रेलवे में आर पी एफ के निम्नलिखित 11 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र है।

1. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, बांदीकुई
2. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, खड़गपुर जेडटीआई
3. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, मोकामाघाट
4. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, वलसाड
5. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, गोरखपुर
6. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, दोमहानी
7. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, सुबेदारगंज
8. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, तिरुचिरापल्ली
9. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, मौला अली, हैदराबाद
10. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, नासिक रोड
11. आर पी एफ प्रशिक्षण केंद्र, कांचरापाड़ा

3. रेलवे प्रोटेक्शन स्पेशल फोर्स (आरपीएसएफ)

यह आर पी एफ का विशेष सशस्त्र विंग है, आर पी एफ के इस सशस्त्र शाखा की स्थापना 1962 में भारत पर चीनी हमले के दौरान भारतीय सेना को रेलवे के माध्यम से जनशक्ति और सामग्री यातायात में संचार प्रदान करने के लिए की गई थी। अपने महत्वपूर्ण दायित्वों के सफलतापूर्वक निर्वहन के उपलब्धियों के कारण आरपीएसएफ आज रेलवे सुरक्षा बल का अभिन्न अंग बन चुका है। रेलवे के परिचालन में अपराधियों, आतंकवादियों, असामाजिक तत्वों, किस प्रकार का विद्रोह, आंदोलनों आदि के कारण जब आर पी एफ को विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है तो आरपीएसएफ उनको हर संभव सहयोग कर स्थिति पर नियंत्रण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. कमांडो फॉर रेलवे सिक्यूरिटी (कोरस)

रेलवे परिचालन में किसी भी तरह के बाधा उत्पन्न करने वालों से निपटने के लिए रेलवे ने रेलवे सुरक्षा बल में विश्व स्तर के विशिष्ट प्रशिक्षण युक्त कमांडो का एक विंग बनाने की घोषण 14.08.2019 को किया। इसका मुख्यालय जगधारी हरियाणा में है। आर पी एफ के जवानों में से चयनित योग्य जवानों को कमांडो की विशेष ट्रेनिंग दी जाती है जो किसी विपरीत स्थिति से निपटने में हर तरह से सक्षम होते है।

5. डॉग्स ट्रेनिंग सेंटर

विस्फोटक और अपराधिक घटनाओं को रोकने और उन पर नियंत्रण के लिए प्रशिक्षित डॉग्स की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। डॉग्स ट्रेनिंग के लिए रेलवे में तीन ट्रेनिंग सेंटर है।

1. एनआर के- 9 दयाबस्ती दिल्ली
2. एसआर के- 9 पोद्नुर
3. सीआर के- 9 पुणे

6. वाटिका- आर पी एफ गजटेड ऑफिसर्स मेस

उत्तर रेलवे के अधीन यह वाटिका ब्रार स्क्वायर दिल्ली में स्थित है, 15.06.2003 को इस मेस का उद्घाटन तत्कालीन रेल मंत्री श्री नीतीश कुमार ने किया था। इस केंद्रीय मेस का प्रयोग आर पी एफ के क्रियाकलापों, मीटिंग के आयोजन और गेटटुगेदर के लिए किया जाता है।

रेलवे सुरक्षा में आर पी एफ का योगदान

बच्चों को बचाने, महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने, मादक पदार्थों की तस्करी से लड़ने और आपात स्थितियों को संभालने जैसे कार्यों के साथ, आर पी एफ लाखों यात्रियों के लिए सुरक्षा और विश्वास का प्रतीक है।

प्रमुख उपलब्धियां

1. ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते

खोए और परित्यक्त बच्चों को उनके परिवारों से मिलाने के लिए, आर पी एफ ने तीन वर्षों में 44,306 बच्चों को बचाया, जिसमें 2024 में 14,756 बच्चों को बचाया गया।

2. ऑपरेशन महिला सुरक्षा

इसके तहत अकेली या बच्चों के साथ यात्रा कर रही महिलाओं को उनकी यात्रा के आरंभ से अंत तक आर पी एफ की महिला अधिकारिओं द्वारा सुरक्षा प्रदान किया जाता है, इस पहल के तहत, 2024 में एक लाख से अधिक व्यक्तियों को महिलाओं के कोच में अनधिकृत यात्रा के लिए दंडित किया गया। 'मेरी सहेली' टीम महिला यात्रियों को उनकी यात्रा के दौरान पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती है।

3. ऑपरेशन मातृशक्ति

ट्रेन यात्रा के दौरान प्रसव पीड़ा वाली महिलाओं की मदद के लिए, आर पी एफ ने तीन वर्षों में 589 प्रसवों में सहायता की, जिसमें 2024 में 174 प्रसव शामिल हैं।

4. ऑपरेशन एएएचटी (एक्शन अगेंस्ट ह्यूमन ट्रैफिकिंग)

मानव तस्करी से लड़ने के लिए, आर पी एफ ने एंटी-ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट्स बनाई हैं। पिछले तीन वर्षों में, 2,614 पीड़ितों को बचाया गया और 753 तस्करों को गिरफ्तार किया गया। 2024 में ही, 1,007 व्यक्तियों को तस्करों से बचाया गया।

5. मिशन जीवन रक्षा

आपात स्थितियों में कार्रवाई करते हुए, आर पी एफ ने 2022 से 2024 के बीच 8,455 जीवन बचाया।

6. ऑपरेशन नार्कोस

मादक पदार्थों की तस्करी से लड़ते हुए, आर पी एफ ने 2022 से 2024 के बीच रुपये 387 करोड़ के मादक पदार्थ जब्त किए व 3,944 अपराधियों को गिरफ्तार किया।

7. ऑपरेशन डिग्निटी

संकट में पड़े वयस्कों की सहायता के लिए, आर पी एफ

ने तीन वर्षों में 10,911 व्यक्तियों को बचाया, जिसमें 2024 में 4,047 मामले शामिल हैं।

8. ऑपरेशन अमानत

खोई हुई संपत्तियों को खोजने और लौटाने में, आर पी एफ ने तीन वर्षों में रुपये 172 करोड़ की संपत्ति लौटाई, जिसमें 2024 में रुपये 71 करोड़ की संपत्ति शामिल है।

9. ऑपरेशन रेल सुरक्षा

रेलवे संपत्ति की सुरक्षा करते हुए, आर पी एफ ने 2024 में चोरी का माल वापस लाते हुए 5,787 अपराधियों को गिरफ्तार किया।

10. ऑपरेशन यात्री सुरक्षा

यात्रियों की शिकायतों का समाधान करते हुए, आर पी एफ ने तीन वर्षों में 8 लाख से अधिक शिकायतें हल कीं, जिनमें से 2024 में 3.55 लाख शिकायतों का समाधान किया गया।

11. ऑपरेशन उपलब्ध

टिकट दलाली से निपटने के लिए, आर पी एफ ने 2024 में 4.975 दलालों को गिरफ्तार किया और रुपये 11.48 करोड़ के टिकट जब्त किए जो एक बड़ी उपलब्धि है।

12. ऑपरेशन दूसरा

ट्रेन और प्लेटफार्म पर अनधिकृत विक्रेताओं को हटाने के लिए, आर पी एफ ने 2024 में 2.59 लाख मामलों का समाधान किया।

13. ऑपरेशन सतर्क

तस्करी और बिना कागजात वाले सामानों को जब्त कर- के आर पी एफ प्रवर्तन एजेंसियों का भी सहयोग करती है। इस ऑपरेशन के अंतर्गत आर पी एफ ने 2024 में 4,065 अपराधियों को गिरफ्तार किया।

14. ऑपरेशन भूमि

रेलवे भूमि पर अतिक्रमण हटाने के लिए, आर पी एफ ने 2024 में 1,185 अभियान चलाए।

15. ऑपरेशन संरक्षा

रेलवे के दुरुपयोग को रोकते हुए, आर पी एफ ने 2024 में 3,597 पथराव की घटनाओं को संभाला और खतरनाक पदार्थ ले जाने के लिए 172 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।

16. ऑपरेशन साथी

रेलवे ट्रैक के पास के समुदायों को सशक्त बनाने के लिए, आर पी एफ ने 2024 में 96,000 व्यक्तियों को प्रशिक्षण और रोजगार का अवसर प्रदान किया।

17. ऑपरेशन जन जागरण

सुरक्षा जागरूकता फैलाने के लिए, आर पी एफ ने 2024 में 1.64 लाख पर्चे वितरित किए और सोशल मीडिया पर 6.53 लाख अभियानों का आयोजन किया।

18. ऑपरेशन सहयोग

टिकट जांच, कोविड प्रोटोकॉल लागू करने और स्वच्छता अभियानों में सहायता के लिएए आर पी एफ ने यह विशेष अभियान चलाया।

19. ऑपरेशन जनादेश

चुनावों के दौरान शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित करने के लिए आर पी एफ ने 2024 में 25,000 से अधिक कर्मियों को तैनात किया।

निष्कर्ष: रेलवे सुरक्षा बल भारतीय रेलवे प्रणाली की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो प्रतिदिन लाखों यात्रियों को सुरक्षित यात्रा का अनुभव प्रदान कराती है। रेलवे की सुरक्षा में उनका योगदान सशक्त और सराहनीय है। आर पी एफ की उपलब्धियों का गौरवशाली इतिहास, इसे रेलवे का एक महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली स्तंभ बनाता है।

डिस्क्लेमर- उपलब्धियों के उपरोक्त आंकड़े दिनांक 08.08.2025 को आर पी एफ के आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार हैं। इस लेख में सभी बातें सिर्फ सामान्य जानकारी के लिए हैं। किसी भी त्रुटि के लिए लेखक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं हैं। आधिकारिक सूचना के लिए संबंधित कार्यालय से संपर्क करें।

लेखा सहायक
मंडल लेखा कार्यालय, डीडीयू

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

सुभाष चंद्र बोस

अगर हिन्दुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है, तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।

महात्मा गांधी

मोटे अनाज यानी श्रीअन्न

- मुखराम सिंह

प्राचीन काल से ही भारत में मोटे अनाजों का सेवन हो रहा है ये अनाज कम कार्बन फुट प्रिंट वाली ऐसी फसलें हैं - जो प्रोटीन, फाइबर और खनिजों से भरपूर होते हैं, इनमें कम कार्बोहाइड्रेट होने से इनका 'ग्लाइसेमिक इंडेक्स' कम होता है, जिस कारण मधुमेह और हृदय रोग को नियंत्रित करने में कारगर होते हैं।

ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण हमारी मिट्टी धीरे-धीरे शुष्क होती जाएगी और गेहूँ तथा चावल का उत्पादन महंगा होता जाएगा ऐसे में पोषण और सुरक्षा देने में मोटे अनाज कारगर होंगे। श्रीअन्न-बाजरा, ज्वार, रागी को सुपर फूड कहा जाता है, ये अन्न मधुमेह, हृदय रोग, बाल कुपोषण और एनीमिया जैसी कई स्वास्थ्य समास्याओं को दूर करने की क्षमता रखते है। श्रीअन्न की किस्मों को उन्नत बनाना होगा, क्योंकि हरित क्रांति के समय, गेहूँ व चावल का अधिक उत्पादन प्रति हेक्टेयर से किसानों ने मोटे अनाजों से दूरी बना ली थी। चूंकि हमारे देश में आज रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के अंधाधुध उपयोग से मिट्टी खराब हो रही है, ऐसे में मोटे अनाज- कम खाद-पानी में, विपरीत मौसम में भी-अच्छा उत्पादन कर सकते हैं, बस हमें इनके भंडारण, कुशल प्रसंस्करण और बाजार तथा पहुँच विकसित करनी होगी। 'रेडी टू ईट' तथा शानदार रेसिपी बनाकर, मल्टीग्रेन आटा इत्यादि उपायों से इनको हर घर पहुंचाना होगा, तभी हम भारत को विश्व की मधुमेह तथा हृदय रोगियों की राजधानी बनने से रोक पाएँगे। जीवन शैली से जुड़ी व्याधियों और जलवायु परिवर्तन की चुनौती से मुकाबला करने में श्रीअन्न बेहद उपयोगी है। ये किफायती प्रकृति के कारण पर्यावरण हितैषी भी है और कृषि जैव - विविधता में महत्वपूर्ण योगदान के अलावा ये हमें खाद्य सुरक्षा भी उपलब्ध कराते है। कीट-पतंगो के हमले से बीमारियों से सुरक्षा में ये सक्षम है। हमारे देश को अधिक विविधता पूर्ण, टिकाऊ और स्वस्थ भारत की ओर अग्रसर करने में 'श्रीअन्न' बहुत महत्वपूर्ण है। विश्व में बाजरा उत्पादन में भारत प्रथम है। विश्व का कुल 40% बाजरा भारत में ही उत्पादित होता है। अब हम कृषि आयातक से कृषि निर्यातक की स्थिति में है, तथापि अपनी वृहद जनसंख्या के पोषण हेतु हमें द्वितीय-हरित क्रांति की जरूरत है, जिसके गेटवे श्रीअन्न ही है। भारत की 50% जनसंख्या अभी भी कृषि पर निर्भर है और कृषि को आर्थिक रूप से सक्षम बनाए बिना 'विकसित भारत' का सपना दिवास्वप्न जैसा ही है।

मोटे अनाजों में शामिल है- बाजरा, रागी, ज्वार, मक्का, सावां, कंगनी, चीना, कोटो, कुटकी और कुट्टू इत्यादि। मोटा अनाज खाने से कई प्रकार के लाभ होते है जैसे -

1. इम्यूनिटी मजबूत करता है।
2. हड्डियाँ मजबूत रहती हैं।
3. डायबिटीज पर नियंत्रण करता है।
4. आँखें स्वस्थ्य रहती है - जो कि मोबाइल, लैपटाप और स्मार्ट टी.बी. की वजह से खराब हो रही है।
5. ब्लड प्रेशर - नियंत्रित रहता है।
6. कोलेस्ट्रॉल में LDL/HDL का अनुपात बढ़िया रखता है।
7. पाचन तंत्र - मजबूत रखता है।
8. एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है।

इन्हीं सब लाभों को देखकर, भारत सरकार के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित (IYM-2023) किया गया है।

आइए अब देखते है मोटे अनाजों में कौन-कौन से पोषक तत्व पाए जाते है -

1. ज्वार - यह ग्लूटेन मुक्त प्रोटीन का बेहतरीन स्रोत और मधुमेह रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद है।
2. बाजरा - विटामिन बी-6 फोलिक अम्ल से भरपूर है। खून की कमी को दूर करता है।
3. रागी - इसमें प्राकृतिक कैल्शियम पाया जाता है, जो कि हड्डियों को मजबूत करता है।
4. सावाँ - इसमें फाइबर बहुत होता है, आयरन का भी स्रोत है, जिससे कब्ज दूर होती है, एसिडिटी में आराम मिलता है और एनीमियां दूर होता है।
5. कंगनी - यह शरीर की आंतरिक सफाई करता है और डिटॉक्सीफिकेशन के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही साथ ब्लडप्रेशर को नियंत्रित रखता है। इसके सेवन से खराब कोलोस्ट्राल कम हो जाता है।
6. कोदो - यह बवासीर तथा घेंघ रोग में आराम पहुँचाता है।
7. कुटकी - यह एन्टी ऑक्सीडेंट का प्रचुर स्रोत है, इसमें मैग्नीशियम भरपूर होता है, जिससे हृदय रोगो में राहत होती है।
8. कुट्टू - बालों को गिरने से रोकता है। दमा में आराम पहुँचाता है।

इस प्रकार हमनें देखा कि श्रीअन्न के उत्पादन में किसानों की लागत कम, मिट्टी तथा पर्यावरण सुरक्षित तथा उपभोक्ता को अनेकों फायदे, नुकसान कुछ नहीं इसलिए हम सबको अपने भोजन में श्रीअन्न का उपभोग अवश्य बढ़ाना चाहिए।

टी.जी.टी.
पूर्व मध्य रेल इंटर कालेज, डीडीयू

बीएचयू हॉस्टल के दिनों की यादें

- अमिताभ कुमार

स्थान: महामना की बगिया कहा जाने वाला बीएचयू (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का हॉस्टल) जेठ की तपती दोपहरी में।

सॉरी, आषाढ़ की तपती। आजकल जेठ हो या आषाढ़ गर्मी एक समान कृपा कर रही है। खिड़की से दिखता बिरला हॉस्टल का पिछला हिस्सा जहां पके हुए जामुन के गिरने से फर्श काली हो गई है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय। महामना ने चंदा मांग मांग कर इतना बड़ा परिसर बनाया। वहीं, वो अपने ख्यालों में खोया प्रेम की भीख मांगने की योजना बना रहा था। घंटो हॉस्टल की खिड़की से वृक्षों के फलों को निहारा करता। अब तो पक्षी भी आपस में उसे वेल्ला, नकारा, बेकार कहते होंगे। वर्तमान में तो यही स्थिति थी। दरअसल, क्लास की एक लड़की उसे पसंद आ गई थी। बनारस आए उसे कुछ ही दिन हुए थे। पढ़ने में मेधावी वह पढ़ाई में सबकी मदद भी कर दिया करता था। फिर क्या, एक दिन वो भी आई, सांवली नहीं हल्की गोरी होगी वह, लंबी, लंबे लंबे बाल, पतली कमर, पतले होठ और मीठी सी अल्ट्रासोनिक आवाज। जिसका वेवलेंथ सीधे दिल को भेद देती। मुस्कुराहट भी हार्टबीट पर प्रभाव डालती। पढ़ाई का वो कांसेप्ट तो क्लियर हो गया, पर एक नया अध्याय खुल गया।

आदत नही थी चैटिंग की पर नई लत लग गई थी। रात के दो कब बज जाते पता भी नही चलता। हां, पर एक बात थी उस बंगालन में। रूठती कम थी। ऐसा लगता था कि वो राजी है। एक स्थाई हां उसके चेहरे पे विराजमान रहती। कम से कम नखरे, हां वो बात बहुत जल्दी जल्दी बोलती थी जिससे बिहारी (वह) थोड़ा धीरे धीरे समझता। हालांकि उसकी बातों से ज्यादा ध्यान उसके चेहरे पर रहता, वो बस सर हिला दिया करता था। जब वो मुस्कुराती तो ऐसा लगता जैसे रोहतास के पानी भरे खेतों में हरी हरी धान की फसल लहलहा रही हो। अपनी कल्पना में तो सब कुछ कंट्रोल में था पर हकीकत में कई प्रतिद्वंदी थे। कुछ ऐसे भी थे जो उसे दिल की बात बोल देने के लिए उकसाते। रोग बाहर से दिखने में कंट्रोल में था पर अंदर ही अंदर तड़प बढ़ती जा रही थी। दिल में उठते हसरतों के तूफान किनारों को तोड़ने के लिए बेताब थे। प्यार का बुखार रोज 1 डिग्री बढ़ रहा था।

महामना की बगिया यानी बीएचयू के कैंपस में उसे जहां भी कपल दिखाई देते उसे अपना फ्यूचर दिखाई देता। कल इसी पेड़ के नीचे, इसी मैदान में सांझ ढले, उसी किनारे पे, उस चैराहे पे, यहां वहां वो हाथ में हाथ डाल के घूमेगा। कभी वीटी यानी विश्वनाथ मंदिर की कोल्ड कॉफी तो कभी भीड़ भाड़ वाली लंका की चाय, तो कभी अस्सी पर नौकायन और कंधे पर हाथ रख के सेल्फी। रात के दो बजे तक चैटिंग और बातचीत कर उसे ऐसा लगता जैसे अच्छे दिन अब आने ही वाले हों। पर फिर वो रात भी गुजर जाती। अरमानों के सागर में गोते लगाने से थी की हुई आंखों के साथ वो भी सो जाता पर मोबाइल बिल्कुल सीने से चिपका कर। उसके दिल की धड़कन मोबाइल के नोटिफिकेशन के वाइब्रेशन से SYNC हो गई थी। वो पढ़ रहा था हरिवंश राय बच्चन की वो पंक्तियां-

धिक रे मनुष्य तुम स्वच्छ, स्वस्थ, निश्छल चुम्बन। अंकित कर सकते नहीं प्रिया के अधरों पर।

पंक्तियों ने उत्तेजित कर दिया। अब उसने कुछ करने की ठान ली। घंटो पशोपेश में डूबा रहा। कल, हां कल, उस बंगालन को 'आमी जे तोमार' कहना ही है। रात भर आराम से सोया इस दृश्य निश्चय के बाद। खिड़की से आने वाली शीतल हवा उसे जैसे कह रही हो 'शांत गदाधारी भीम शांत'। अस्तु.....

आज गर्मी कुछ कम थी। कभी धूप कभी छांव, हवा भी अच्छी बह रही थी। शाम के 5 बज रहे थे। वीटी पर कोल्ड कॉफी पीते हुए उसे तलब तो हुई कि आज आर या पार हो जाए। उसने तिरछी नजरों से देखा, काजल आज उसकी सुन्दरता की धार को तेज कर रहा था। उसकी सफेद दंतपंक्तियां हंसते हुए चमकती तो उसे एहसास होता कि सारा श्रृंगार उसी के लिए है। वीटी पे काफी भीड़ थी। श्रावण मास शुरू हो गया था। एक बार मन में आया कि संकटमोचन चले और इस बंगालन को भी रामभक्त हनुमान का आशीर्वाद दिलवा दें। फिर दिल में आया कि हनुमान जी ठहरे बाल ब्रहमचारी, उनका आशीर्वाद मिल गया तो फिर जोड़ी बनने से रही। फिर अस्सी का विचार मन में आया।

अस्सीघाट वाराणसी

मन वहीं नहीं भरता, इस जगह में बार-बार आने का मन करता है। गंगा किनारे की मिट्टी पर दोनो बैठे। सामने कई नाव बंधे हुए थे। दूर नावों की बुकिंग हो रही थी। शीतल मन्द पवन हौसला बढ़ा रहा था। बोल दूं क्या? सवाल उसके सामने था जवाब बिल्कुल बगल में बैठा था। अंधेरा होने को ही था। आसमान सिंदूरी हो रहा था। उसकी बालों की लट उड़ उड़ कर उसके चेहरे को बार-बार ढंक रही थी। खूबसूरती का दूसरा नाम थी वो बंगालन। बगल में बैठकर उसे स्वर्गीय सुख का अनुभव हो रहा था। गर्लफ्रेंड का सुख, जिसकी उसने कल्पना की थी सिनेमा देखकर, आज प्रत्यक्ष मिल रहा था। कुछ देर हुई। अब वो थक रहा था। क्या करें क्या न करे। असमंजस में कहीं जान न निकल जाए।

दूर रेत पर एक चिड़ियाँ अपनी छोटी चोंच से जमीन कुरेद

रही थी। तभी एक और चिड़िया वहां आई। दोनों के चोंच आपस में मिलने लगे। फिर दोनो फुर्र से उड़ गए। मन को शांति मिली। एक ज्ञान मिला। उसने एक लंबी सांस ली। धीरे से वो पीछे की दोनों हाथ कर के विश्राम की मुद्रा में हो गया। वो कुछ कह रही थी पर ये कहां कुछ सुन पा रहा था। बढ़े हुए हार्ट बीट के साथ उसने अपना दाहिना हाथ, उसके कंधे पे रख दिया। तीनों लोक, करोड़ों ग्रहों, तारों, नक्षत्रों, पृथ्वी पर बढ़ते बोझ, जनसंख्या विस्फोट, हलाला, बेरोजगारी, आतंकवाद और कई समस्याओं की अवहेलना कर बिजली की गति से उसके गालों पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। सिंदूरी आसमान की लाली उन दोनों के चेहरे पर उतर आई। बिना प्यार का इजहार किए प्यार कर लिया गया। अस्सी घाट इसका साक्षी था और साक्षी थे दूर खड़े लोग, सिंदूरी आसमान और शीतल हवा। बहती गंगा मैया भी बंगाल की ओर ही जा रही थी।

यह नियति है, भीष्म हिमालय का पानी अंततः बंगाल में ही गिरता है। उस चुम्बन की साक्षी गंगा की धारा दूर बहुत दूर निकल चुकी थी। अंधेरा हो चुका था दोनो शांत थे। एक चुम्बन ने उनके रिश्ते को कई लेवल ऊपर अपग्रेड कर दिया था। एक बात उसकी समझ में आ गई थी। प्यार हजारों लाखों शब्दों में पिरोकर नहीं किया जाता। न ही रात रात भर जाग कर आंखों में डार्क सर्कल पैदा करके प्यार किया जाता है और प्यार सिर्फ किया जाता है। दोनों हाथों में हाथ डाल कर बीएचयू कैंपस की ओर बढ़ चले। एक नया इतिहास लिखने...

वरीय सेक्शन इंजीनियर/दूरसंचार
विभागः संकेत एवं दूरसंचार
पूर्व मध्य रेल, डीडीयू

धन पिपासु

नरेन्द्र कुमार

गाँव के एक कोने में कच्ची मिट्टी से बना बुजुर्गों का घर खड़ा था। कभी यह घर हंसता-खेलता गुलजार था। यादों से भरा हुआ करता था। पर अब इसमें बस धूल, मकड़ी का झाला था, दीवारों पर जमी पुरानी यादों की परतें थीं।

विजय सिंह ने अपने बेटे किशोर सिंह को बड़े प्यार से पढ़ाया-लिखाया और शहर भेज दिया, ताकि वह बड़ा आदमी बन सके। बेटा बड़ा तो बना, पर अपने मां-बाप के लिए छोटा पड़ गया। शहर में व्यवसाय किया शहर में घर बनाया, शादी हुई, पर गांव की मिट्टी और बूढ़े मां-बाप को वह वहीं छोड़ आया। यदा कदा कभी आता तो सिर्फ वहाँ से कुछ ले जाने के लिए ही। किशोर का एक लड़का हुआ रवि जो शहर में ही पला बढ़ा। किशोर का कहना था बेटा को पढ़ाइए या शहर में बसाइए, उसने दोनों कार्य किया। विजय सिंह की पत्नी चल बसी। बेटे को खबर दी गई, वह आया पर उसके बेटे और परिवार अंतिम संस्कार में भी समय से नहीं आए।

बच्चों का पढ़ाई बहाना बना। अंतिम संस्कार में होने वाले खर्च पर भी किशोर और भाइयों के बीच किच-किच हुआ। फिर कुछ सालों बाद खुद विजय सिंह, यानी रवि के दादा भी गुजर गये। गांव वालों ने फोन किया, मगर रवि ने आने की जरूरत नहीं समझी। किशोर सिंह ने भी उसे बुलाना मुनासिब नहीं समझा। कुछ साल बाद, जब किशोर बूढ़ा हो गया, आंखें धुंधली पड़ गईं, और कमर झुक गई, तब अचानक एक दिन रवि अपने पिता के साथ गांव आया। लोगों ने देखा, तो हैरान रह गए। वह अकेला नहीं, बल्कि अपने वकील के साथ आया था। घर और खेत बेचने के लिए, कागजात तैयार करवाने के लिए।

गांव में यह खबर आग की तरह फैल गई। चौराहे पर लोग फुसफुसाने लगे– 'अब आया है ये! जब माँ-बाप को जरूरत थी, तब नहीं आया। माँ-बाप का क्रिया-कर्म सही से नहीं किया। अब दौलत बेचने आया है!' 'दादा को देखने तक नहीं आया और अब जायदाद के लिए दौड़ा चला आया है!' कुछ लोगों ने मुंह पर नहीं कहा, पर पीठ पीछे हर कोई बातें कर रहा था। पर कुछ लोग ऐसे भी थे, जो चुप न रह सकें। जब रवि घर से निकला, तो एक बुजुर्ग सामने आ खड़ा हुए और बोलने लगे– 'बेटा, जब तेरी दादी मरी थी, तब नहीं आया, जब दादा अकेले थे, तब नहीं आया, जब तेरे दादा मरे, तब भी नहीं आया... अब माल बेचने आया है? क्या यही पढ़ाई लिखाई की कीमत चुकाई तूने?' तेरा बाप जो पढ़ा-लिखा भी है और स्वयं को गर्व से पढ़ा लिखा बताता भी है, क्या यही संस्कार दिया है और इसे भी शर्म आई। धन पिपासु पशु। बाप दादा की जायदाद बेचकर बड़ा बनने चला है।

रवि अपने पिता के साथ सिर झुकाए खड़ा रहा। उसे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई। उसके पास शब्द नहीं थे, बस एक खालीपन था, जो उसके मन में धीरे-धीरे घर कर गया। उसके पास वही तीन लोग खड़े थे, जो वहाँ दलाली का कार्य करते थे। चेहरे पर कुटिल मुस्कान लिए वह भी उसे हिकारत भरी नजरों से ही देख रहे थे। घर बिक गई। खेत भी चले गए। लेकिन रवि जो लेने आया था, वह नहीं मिला। वह सोचा था कि गांव के लोग उसके ओहदा और पढ़ाई का इज्जत करेंगे। उल्टा, वह गांव वालों की नजरों में हमेशा के लिए गिर गया। सभी उसे धिक्कार और तिरस्कार की नजरों से देख रहे थे।

असिस्टेंट इलेक्ट्रिकल जेनरल
पावर हाउस, गया

रेल यात्रा और हिंदी: एक अनमोल रिश्ता

- ममता कुमारी

रेल यात्रा संबंधित अनुभव और उन अनुभव के आधार पर रेल सुविधाओं को बेहतर बनाने तथा उनमें हिंदी के प्रयोग प्रसार को बढ़ाने के उद्देश्य

रेल यात्रा केवल परिवहन के एक साधन से कहीं अधिक है, यह एक ऐसा अनुभव है जो भावनाओं, आगे बढ़ने की खुशी और गति के रोमांच को समेटे हुए है, जिसके कारण यह कई लोगों के लिए यात्रा का एक प्रिय साधन बन गया है।

प्रस्तावना: हम सभी इस तथ्य को समझते हैं कि हमारे देश में बड़ी संख्या में आबादी पूरी तरह से रेलवे पर निर्भर है, क्योंकि भारतीय रेलवे बहुत सस्ती कीमत पर यात्रियों को आराम और सुविधा प्रदान करती है। भारतीय रेलवे यात्रियों को अधिक आराम और सुविधा प्रदान करने के लिए हमेशा नए नियम, सेवाएँ और सुविधाएँ पेश करता है।

रेलगाड़ी की महत्ता: भारत जैसे विशाल और विविधता से भरे देश में सफलता से चल रहे परिवहन के विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू रेलगाड़ी है। रेलगाड़ी को प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता का एक महत्वपूर्ण परिवहन साधन माना जाता रहा है। यह सबसे सुरक्षित, तेज और सुविधाजनक विधि है जिससे विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ा जाता है। रेलगाड़ी के माध्यम से विभिन्न राज्यों और शहरों के बीच व्यापार, विज्ञान, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की जाती है। इससे लोग अपने विचारों और धार्मिक यात्राओं को भी पूरा करते हैं। रेल यात्रा हमारे देश के लोगों के लिए सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

मेरी रेल यात्रा का अनुभव

रेल की यात्रा ने हमेशा मेरे लिए एक विशेष आकर्षण रखा है। लोकोमोटिव की लयबद्ध चुगिंग, गाड़ी की कोमल लहराहट, और खिड़की के बाहर हमेशा बदलते परिदृश्य रोमांच और उत्साह का माहौल बनाते हैं। हाल ही में, मुझे एक यादगार ट्रेन यात्रा करने का अवसर मिला जिसने मुझपर एक स्थायी छाप छोड़ी।

यह एक कुरकुरी सुबह थी जब मैं हलचल भरे रेलवे स्टेशन पर पहुंची, यात्रियों की हलचल से भरा हुआ था, जो प्रियजनों को विदाई दे रहे थे और उत्सुकता से उनकी आगे की यात्रा का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही मैं ट्रेन में चढ़ी और अपनी सीट पाई, मैं मदद नहीं कर सकी लेकिन मेरे भीतर प्रत्याशा निर्माण की भावना महसूस हुई। ट्रेन ने पुरानी यादों को हवा दी और आलीशान सीटों के साथ यात्रियों को आगे की यात्रा के लिए बसने के लिए आमंत्रित किया।

जैसे ही रेलगाड़ी स्टेशन से बाहर निकली और गति पकड़ी, मुझे लगा कि मेरे माध्यम से उत्साह की वृद्धि हो रही है। खिड़की से बाहर देखते हुए, मैंने देखा कि शहर के परिचित स्थलों ने धीरे-धीरे ग्रामीण इलाकों और विचित्र ग्रामीण गांवों को फैलाया है। दृश्यों को एक पेंटिंग की तरह प्रकट करने के लिए लगा रहा था, प्रकृति के ब्रश के प्रत्येक स्ट्रोक के साथ एक नया और मनोरम परिदृश्य का खुलासा हो रहा था।

मेरी रेल यात्रा का एक मुख्य आकर्षण साथी यात्रियों के साथ बातचीत करने का अवसर था। छुट्टियों के रोमांच को शुरू करने वाले परिवारों से लेकर अनुभवी यात्रियों तक अपने कारनामों की कहानियों को साझा करने के लिए, रेलगाड़ी जीवंत बातचीत और हँसी के साथ जीवित थी। मैंने खुद को यात्रा, संस्कृति और जीवन के बारे में चर्चाओं में तल्लीन पाया, अजनबियों के साथ संबंध बनाते हुए जो रेलगाड़ी की सीमाओं को पार कर गए।

जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, मैंने खुद को शांति की स्थिति में डूबा हुआ पाया, रेलगाड़ी की कोमल लय और नीचे की पटरियों की सुखदायक क्लिक-क्लैक से लुप्त हो गया। मैंने जीवन की यात्रा को प्रतिबिंबित करने के लिए समय निकाला, इसके ट्विस्ट और टर्न, उतार-चढ़ाव के साथ, उस पल में मैं जिस यात्रा का अनुभव कर रही थी।

जैसे ही ट्रेन अपने अंतिम गंतव्य के करीब पहुंची, मैं यह जानकर उदासी महसूस किए बिना नहीं रह सकी कि मेरी यात्रा समाप्त हो रही थी। हालाँकि, मैं उन अविस्मरणीय अनुभवों और यादों के लिए भी कृतज्ञता की भावना से भर गयी थी जो मैंने रास्ते में इकट्ठा किए थे। ट्रेन से उतरते हुए,

मैं अपने साथ न केवल पोषित स्मृति चिन्ह ले गयी, बल्कि ट्रेन यात्रा की सुंदरता के लिए भटकने और प्रशंसा की एक नई भावना भी ले गयी।

अंत में, मेरी रेल यात्रा का अनुभव एक गंतव्य तक पहुंचने के साधन से कहीं अधिक था। यह खोज, संबंध और प्रतिबिंब की यात्रा थी। इसने मुझे यात्रा की सरल खुशियों और हमारे जीवन पर साझा अनुभवों के गहरे प्रभाव की याद दिला दी। जैसा कि मैंने रेलवे स्टेशन को विदाई दी, मुझे पता था कि मेरी यात्रा की यादें आने वाले वर्षों तक मेरे साथ रहेंगी।

रेल यात्रा संबंधित अनुभव-

* **अंतरिक्ष और आराम:** अगर हम अंतरिक्ष और आराम की दृष्टि से देखें तो रेल परिवहन का सबसे अच्छा साधन है। बैठने और यहां तक कि लेटने के लिए पर्याप्त जगह है, एक विशेषाधिकार जो हमें बसों, कारों या विमानों में नहीं मिलता है। बच्चे आसानी से बोर्डगेम खेल सकते हैं। समूह की सैर सबसे अधिक मजेदार हो जाती है क्योंकि हम विभिन्न खेलों और गतिविधियों का आमने-सामने बैठकर आनंद ले सकते हैं।
* **लंबी यात्रा आसान हुई:** चूंकि रेल गाड़ियाँ सोने के लिए बर्थ की पेशकश करती हैं, इसलिए रेल गाड़ियों के माध्यम से लंबी दूरी की यात्रा करना काफी आसान हो जाता है। बाथरूम सुविधा विशेष रूप से बस और कार की यात्रा के दौरान ट्रेन के मुख्य लाभों में से एक है।
* **एसी कोचों में लिनेन पर्दों की उपलब्धता:** भारतीय रेलवे के एसी कोचों में लिनेन पर्दों की उपलब्धता, खुले डिब्बों के भीतर यात्रियों को अलग-अलग बैठाकर उन्हें बेहतर गोपनीयता और आराम प्रदान करती है, साथ ही यह यात्रा को अधिक सौंदर्यपरक और व्यवस्थित अनुभव प्रदान करती है, जो विशेष रूप से लंबी यात्राओं के लिए लाभदायक है।
* **चलती ट्रेनों में भोजन की उपलब्धता, विशेष रूप से आईआरसीटीसीई-कैटरिंग और रेल रेस्ट्रो जैसी ई-कैटरिंग सेवाओं के माध्यम से:-** यात्री ट्रेन से उतरे बिना ही अपनी सीट पर आराम से बैठकर भोजन का ऑर्डर दे सकते हैं, जो लंबी यात्राओं के दौरान या स्टेशनों से अपरिचित होने पर विशेष रूप से उपयोगी है। इससे भोजन को पैक करने और ले जाने की परेशानी भी खत्म हो जाती है, जगह खाली हो जाती है और खराब होने की चिंता भी कम हो जाती है।
* **समय की बचत:** रेलगाड़ी द्वारा यात्रा करने से समय की बचत होती है, और यात्रियों को अपने गंतव्य तक तेजी से पहुंचने में मदद मिलती है।
* **वातावरण मित्र:** रेलगाड़ी एक वातावरण मित्र साधन है, क्योंकि यह वायु प्रदूषण को कम करने में सहायक है और सड़क यातायात की तुलना में कम कार्बन उत्पादन करती है।
* **सामाजिक एकता:** रेलगाड़ी में यात्रा करने से लोग विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ संबंध बना सकते हैं और राष्ट्रीय एकता को मजबूत कर सकते हैं।
* **आर्थिक विकास:** रेलगाड़ी यात्रा विभिन्न क्षेत्रों के बीच व्यापार और वित्तीय व्यवसाय को बढ़ावा देती है और राष्ट्रीय आर्थिक विकास को समर्थन करती है।
* **सुरक्षित यात्रा:** रेलगाड़ी में यात्रा करने का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह सुरक्षित होती है और दुर्घटनाओं का खतरा कम होता है।
* **विभिन्न शहरों का जोड़:** रेलगाड़ी विभिन्न शहरों और गांवों को जोड़ने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक है। यह लोगों को अलग-अलग भूभागों के बीच आसानी से यात्रा करने की अनुमति देती है।
* **राष्ट्रीय एकता:** रेलगाड़ी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है, क्योंकि यह विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों को एक साथ जोड़ती है और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करती है।
* **पर्यटन विकास:** रेलगाड़ी पर्यटन विकास को भी समर्थन करती है, क्योंकि लोग रेलगाड़ी के माध्यम से विभिन्न पर्यटन स्थलों की यात्रा करते हैं।
* **श्रम का साधन:** रेलगाड़ी के निर्माण, चलान और संभाल के लिए लाखों लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान किया जाता है, जिससे श्रमिकों को आर्थिक रूप से सहायता मिलती है।
* **आर्थिक विकास:** रेलगाड़ी व्यापार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, क्योंकि इसके माध्यम से सामान और माल व्यापार होता है और लोग अपने कारोबार को विभिन्न शहरों तक पहुँचाते हैं।
* **महिला यात्रियों की सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करना:** इस संबंध में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा 'मेरी सहेली', 'मातृ शक्ति', 'मातंगिनी' आदि जैसी विभिन्न पहल की गई

हैं। इस तरह की पहल के पीछे उद्देश्य महिला यात्रियों, विशेष रूप से लंबी दूरी की ट्रेनों द्वारा यात्रा करनेवालों के लिए एक सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करना है। रेलवे द्वारा समय-समय पर महिला सवारी डिब्बों में अप्राधिकृत यात्रा के विरुद्ध अभियान भी चलाए जाते हैं। वही ऑपरेशन मातृशक्ति गर्भवती महिला यात्रियों को उनकी यात्रा के दौरान समय पर सहायता प्रदान करने की एक पहल है। ट्रेनों में यात्रा कर रही गर्भवती माताओं का हालचाल लेने के लिए टीम मातृशक्ति हमेशा सतर्क रहती है, जोकि अन्य किसी परिवहन के साधन में नहीं पायी जाती है।

भारतीय रेलवे में सुधार के लिए सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू की गई हैं जैसेः-

1. अमृत भारत स्टेशन योजनाः-इसका उद्देश्य पूरे भारत में 1,275 रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण और वृद्धि करना है, जो बेहतर सुविधाओं, पहुंच और शहरी क्षेत्रों के साथ एकीकरण पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

* **स्टेशन पुनर्विकासः** यह योजना देश भर में 1,275 स्टेशनों के पुनर्विकास को लक्षित करती है, जिसमें प्रत्येक स्टेशन के लिए मास्टरप्लान बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिसे चरणों में निष्पादित किया जा रहा है।
* **आधुनिक सुविधाएँः** सुधारों में बेहतर प्रतीक्षा क्षेत्र, उन्नत शौचालय, लिफ्ट, एस्केलेटर, मुफ्त वाई-फाई और उन्नत यात्री सूचनाप्रणाली शामिल हैं। कुछ स्टेशनों में कार्यकारी लाउंज और व्यावसायिक बैठकों के लिए निर्दिष्ट स्थान भी होंगे।
* **स्थानीय एकीकरणः** यह योजना स्टेशनों को उनके आसपास के शहरी क्षेत्रों के साथ एकीकृत करने, मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी (बसों और मेट्रो के साथ रेल को जोड़ने) को बढ़ावा देने और विकलांग व्यक्तियों के लिये पहुँच सुनिश्चित करने पर जोर देती है।
* **स्थिरताः** पहल में पर्यावरण के अनुकूल समाधान शामिल हैं, जैसे स्टेशनों को हरियाली और अधिक आकर्षक बनाने के लिए गिट्टीरहित पटरियों और भूनिर्माण की शुरूआत।
* **हाल ही हुए परिवर्तनः** 22 मई, 2025 को, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने 18 राज्यों में 103 अमृत भारत स्टेशनों का उद्घाटन किया, जो योजना के कार्यान्वयन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इन स्टेशनों के पुनर्विकास में 1,100 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश शामिल है।

2. 2030 के लिए राष्ट्रीय रेल योजना (NRP) की भूमिकाः- भारतीय रेलवे ने हाल ही में 2030 तक 'भविष्य के लिए तैयार' रेलवे प्रणाली बनाने के लिए भारत-2030 के लिए एक राष्ट्रीय रेल योजना (NRP) तैयार की है। योजना का उद्देश्य मांग से पहले क्षमता का निर्माण करना है, जो बदले में 2050 तक मांग में भविष्य की वृद्धि को भी पूरा करेगा।

योजना की विशेषताएं : लक्षण या किस्म

* **माल ढुलाई पर फोकसः** 2030 तक माल ढुलाई में रेलवे की मॉडल हिस्सेदारी को बढ़ाकर 45% करना।
* मालगाड़ियों की औसत गति को 50 किमी प्रति घंटे तक बढ़ाकर पारगमन समय को काफी कम करना।

* **राष्ट्रीय रेल योजना, विजन 2024:** 2024 तक महत्वपूर्ण परियोजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी लाना।
* भीड़-भाड़ वाले मार्गों का 100% विद्युतीकरण और मल्टी-ट्रैकिंग।
* दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गों पर गति बढ़ाकर 160 किमी प्रति घंटा करना।
* अन्य सभी स्वर्णिम चतुर्भुज-स्वर्णिम विकर्ण (जीक्यूजीडी) मार्गों पर गति को 130 किमी प्रति घंटा तक बढ़ाना।

2. स्वर्णिम चतुर्भुज/ जीडी मार्गों पर सभी समपारों को समाप्त करना।

* हाल में उठाए गए विभिन्न सुरक्षा उपायों के परिणाम स्वरूप, दुर्घटनाओं की संख्या में तीव्र गिरावट आई है। 2004-14 के बीच होने वाली परिणाम स्वरूप ट्रेन दुर्घटनाओं की संख्या 1711 थी (प्रति वर्ष औसतन 171), जो 2014-24 के दौरान घटकर 678 हो गई है (प्रति वर्ष औसतन 68)।

* रेल दुर्घटनाओं में तेज गिरावट

रेल और रेलवे स्टेशन में आवश्यक सुविधाएँ, जिसे शामिल किया जाना चाहिए

आज इस आधुनिक युग में कई पुरानी व्यवस्थाओं को अपनी बेहतरी के लिए बदलना होगा। यदि कोई व्यक्ति भारतीय रेलवे के नियमों का उल्लंघन करता है, तो सरकार को मौजूदा दण्ड लागू करना चाहिए, नियमों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ानी चाहिए और शिकायत निवारण प्रणाली को बेहतर बनाना चाहिए। इनमें जुमार्ने का सख्त प्रवर्तन, सुरक्षित और जिम्मेदार यात्रा को बढ़ावा देनेवाले सार्वजनिक अभियान और शिकायत दर्ज करने और समय पर समाधान प्राप्त करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना शामिल हो सकता है।

1. स्वचालित दरवाजा लॉकिंग तंत्र सभी रेलगाड़ियों में: जब कोई रेलगाड़ी स्टेशन पर आएगी तो सभी दरवाजे अपने आप खुल जाएंगे और उसके रवाना होने से पहले बंद हो जाएंगे, किसी भी अनहोनी से बचने के लिए यह महत्वपूर्ण है।

2. सफाई तथा स्वच्छता: हालांकि भारतीय रेल ने रेलगाड़ियों की स्वच्छता में सुधार के लिए जैव-शौचालय, ऑनबोर्ड हाउसकीपिंग सेवा (ओबीएचएस) और स्वच्छ ट्रेन स्टेशन (सीटीएस) योजनाओं सहित विभिन्न पहलों को लागू किया है, फिर भी यात्रियों को सफाई और स्वच्छता के प्रतिकूल, विशेष रूप से गंदे शौचालयों के साथ समस्याएं मिलती हैं, और ट्रेन की स्वच्छता में अभी भी उल्लेखनीय सुधार की आवश्यकता है।

निरंतर सुधार और यात्री योगदान के क्षेत्र

* **गंदे शौचालयों की लगातार समस्या:** जैव-शौचालय के बावजूद, बड़ी संख्या में यात्री शौचालय की सफाई संबंधी समस्याओं की शिकायत करते हैं।
* **यात्री की जिम्मेदारी:** यात्रियों को कूड़ेदान का उपयोग करने, फैलाव से बचने, हैंड सैनिटाइजर जैसी व्यक्तिगत सफाई की सामग्री साथ रखने और कूड़ा-कचरा फैलाने से बचने, विशेष रूप से गैर-जैव निम्नीकरणीय कचरे से बचने के लिए योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के लिए सख्त स्वच्छता प्रोटोकॉल और कूड़ा-कचरा फैलाने पर दंडात्मक उपाय आवश्यक हैं जैसे कि कठोर जुर्माना एवं कानूनी कार्रवाई आदि शामिल है।
* **कोचमित्र सेवा:** यात्रियों को कोच से संबंधित आवश्यकताओं, जिसमें सफाई भी शामिल है, को पंजीकृत करने के लिए एकल खिड़की की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।

3. प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाने: प्लेटफार्म की अपर्याप्त लंबाई के कारण यात्रियों को पटरियों पर यात्रा करने से रोकने के लिए, सभी गेजों के लिए रेलवे प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाने की सिफारिश की गई है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सबसे लंबी रेलगाड़ी को आराम से समायोजित कर सकें और पर्याप्त प्लेटफार्म चौड़ाई, स्पष्ट चिन्हों और यात्री सुरक्षा अभियान जैसे उपायों को लागू किया जा सके।

प्लेटफार्म की लंबाई बढ़ाने और यात्री सुरक्षा के लिए मुख्य विचार:-

सुरक्षा उपाय:-

* चिन्ह और चेतावनियाँ
* उच्चस्तरीय प्लेटफार्म
* **जागरूकता अभियान:** रेलवे यात्रियों को चलती ट्रेन में चढ़ने या उतरने तथा फुटबोर्ड पर यात्रा करने के खतरों के बारे मे शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान निरन्तर चलाया जाना चाहिए।

4. ट्रैक क्रॉसिंग को रोकने के लिए सरकार और रेलवे की पहल: यात्रियों को कभी भी 'प्लेटफॉर्म के विपरीत दिशा' या ट्रैक से ट्रेन में चढ़ने या उतरने को रोका जाना चाहिए, क्योंकि यह अत्यंत खतरनाक है और इसमें अतिक्रमण, चलती ट्रेन से टकराने, या गिरती वस्तुओं और जमीन से चोट लगने के जोखिम के कारण घातक हो सकता है। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सरकार और रेलवे कई पहल कर सकती हैं, जिनमें प्लेटफार्म के बुनियादी ढांचे में

सुधार, नियमों का सख्त प्रवर्तन और जनजागरूकता अभियान शामिल हैं। साथ ही प्रौद्योगिकी एकीकरण से अनधिकृत ट्रैक क्रॉसिंग का पता लगाने के लिए उन्नत पर्यवेक्षण प्रणाली जैसे तकनीकी समाधानों की खोज और अधिकारियों को सुरक्षा में योगदान देना शामिल हो सकता है।

5. जैसा की हम सब जानते हैं कि जब ट्रेन प्लेटफार्म के पास आ रही हो तो रेलवे ट्रैक पार करना अत्यधिक खतरनाक और अवैध है, जिससे गंभीर चोट या मृत्यु हो सकती है, और यह भारतीय रेलवे अधिनियम, 1989 के तहत दंडनीय है। इसके बावजूद यात्रियों द्वारा रेलवे ट्रैक पार करके रेलगाड़ी पकड़ी जाती है। यात्रियों को दृढ़तापूर्वक सलाह दी जानी चाहिए कि वे प्लेटफार्मों के बीच आने-जाने के लिए निर्दिष्ट फुट ओवरब्रिज या सबवे का ही उपयोग करें, क्योंकि ये ट्रैक पार करने के एकमात्र सुरक्षित और कानूनी तरीके हैं और ऐसा नहीं करने पे यात्री खुद ही सख्त दण्ड के भागी बनेंगे।

6. रेलवे स्टेशनों पर भीड़-भाड़: भारतीय रेलवे को सभी स्टेशनों के लिए यह नियम लागू किया जाना चाहिए कि केवल कन्फर्म टिकटधारकों को स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म में प्रवेश करने की अनुमति दी जाए। इस कदम का उद्देश्य भीड़ को कम करना, सुरक्षा में सुधार करना और एक आसान यात्रा अनुभव सुनिश्चित करना है। बिना कन्फर्म टिकटवाले यात्रियों को प्लेटफॉर्म पर आने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह नियम बेहतर भीड़ प्रबंधन में मदद करता है और यात्री सुरक्षा को बढ़ाता है। यात्रियों को असुविधा से बचने के लिए स्टेशन पर पहुंचने से पहले अपनी टिकट स्थिति की जांच करने की सलाह दी जानी चाहिए।

7. सुरक्षा एवं संरक्षा उपाय:

* **सुरक्षा बढ़ाना:** गैरकानूनी गतिविधियों को रोकने और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्टेशनों और ट्रेनों में रेलवे सुरक्षा बल कर्मियों की उपस्थिति बढ़ाई जाए।
* **प्रौद्योगिकी एकीकरण:** रेलवे परिसर की निगरानी करने और संभावित नियम उल्लंघनों की पहचान करने के लिए सीसीटीवी निगरानी, चेहरा पहचान प्रणाली और अन्य उन्नत उपकरणों जैसी प्रौद्योगिकी का उपयोग करे।
* **वर्तमान में भारतीय रेलवे में हिंदी के प्रयोग के प्रमुख पहलू:** भारतीय रेल एवं हिंदी दोनों पूरे देश को एक सूत्र में पिरोए रखने में महत्वपूर्ण योगदान निभा रही है। राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए रेल मंत्रालय को वर्ष 2019-20 का तृतीय कीर्ति पुरस्कार तथा वर्ष 2020-21 का द्वितीय कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

देवनागरी लिपि का प्रयोग करने वाली हिंदी भारतीय रेलवे की आधिकारिक भाषा है, और आज भारतीय रेल से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ, सूचनाएँ, आरक्षण चार्ट, रेलवे की वेबसाइट, ई-टिकट, प्रशिक्षण, आधिकारिक पत्राचार और साइनेज सहित विभिन्न कार्यों में हिंदी के प्रयोग से आम जनता लाभान्वित महसूस कर रही है। 'राजभाषा' मोबाइल ऐप भी एक और अनूठा कदम है जिसमें राजभाषा से जुड़ी सभी जानकारियाँ है। यद्यपि आधिकारिक संचार और स्टेशन के नाम-पट्टों पर हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है, लेकिन क्षेत्रीय भाषाओं को भी शामिल किया जाता है, विशेष रूप से नाम-पट्टों और विशिष्ट क्षेत्रों के लिए प्रशिक्षण सामग्री में।

भारतीय रेलवे में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के लिए कुछ विशिष्ट उपाय:

1. स्वचालित दरवाजा लॉकिंग तंत्र सभी ट्रेनों में: ट्रेनों में हिंदी का उपयोग करते हुए स्वचालित दरवाजे बंद करने को बढ़ावा देने के लिए, सुरक्षा और दक्षता जैसे लाभों पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट, संक्षिप्त संदेश पर ध्यान केंद्रित करना, मौखिक घोषणाओं के साथ-साथ दृश्य संकेतों का उपयोग करना और रेलवे प्रणाली के भीतर मौजूदा संचार चैनलों का लाभ उठाना

2. हिंदी में स्वचालित दरवाजों के लिए प्रचार रणनीतियाँ व सूचनात्मक संकेत:

* **स्पष्ट निर्देश:** रेलगाड़ी के प्रवेश द्वारों और डिब्बों के अंदर स्वचालित द्वार प्रणाली के बारे में हिंदी में स्पष्ट जानकारी वाले प्रमुख संकेत प्रदर्शित करें। उदाहरणों में शामिल हैं:
* स्वचालित दरवाजे: सुरक्षित, कुशल।
* कृपया स्वचालित दरवाजों का ध्यान रखें।
* दरवाजे बंद होने से पहले घोषणा की जाएगी।
* **विजुअल एड्स:** पाठ के साथ दरवाजे के संचालन और सुरक्षा चेतावनियों को दर्शाने वाले सरल चिह्न या चित्रलेख भी रखें।

सार्वजनिक संबोधन घोषणाएँ:

* **पूर्व-रिकॉर्ड की गई घोषणाएँ:** दरवाजे बंद होने से पहले हिंदी में पूर्व-रिकॉर्ड की गई घोषणाओं का उपयोग करें, अक्सर गति सेंसर के साथ। ये स्पष्ट और श्रव्य होने चाहिए तथा इन्हें विशिष्ट गति पर या ट्रेन के प्रस्थान से पहले चालू किया जा सकता है।
* **लाइव घोषणाएँ:** ट्रेन के कर्मचारी (कंडक्टर / गार्ड) भी यात्रियों को बंद हो रहे दरवाजे के बारे में याद दिलाने के लिए हिंदी में लाइव घोषणाएँ कर सकते हैं, खासकर व्यस्त समय के दौरान।
* **सुरक्षा अनुस्मारक:** इन घोषणाओं में सुरक्षा पर जोर दें, उदाहरण के लिए, 'कृपया दरवाजों से दूर रहें, ये

स्वचालित रूप से बंद हो जाएंगे'।

दृश्य प्रदर्शन और डिजिटल स्क्रीन

* **इन-कोच स्क्रीनः** यदि रेलगाड़ियां डिजिटल स्क्रीन से सुसज्जित हैं, तो एनिमेटेड संदेश या हिंदी में लघु वीडियो प्रदर्शित करें, जिसमें बताया जाए कि स्वचालित दरवाजे कैसे काम करते हैं और बंद होने के दौरान दूर रहना क्यों महत्वपूर्ण है।
* **स्टेशन सूचना बोर्डः** स्टेशन डिस्प्ले बोर्ड और सूचना कियोस्क पर स्वचालित दरवाजा प्रणालियों के बारे में हिंदी में जानकारी शामिल करें।

यात्री शिक्षा एवं जागरूकता

* **रेल मदद और डिजिटल प्लेटफॉर्मः** डिजिटल इंडिया के रेल मदद ऐप और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके स्वचालित दरवाजों के बारे में हिंदी में जानकारी प्रसारित करें, संभवतः FAQ या संक्षिप्त सूचनात्मक लेखों के माध्यम से।
* **कर्मचारियों का प्रशिक्षणः** सुनिश्चित करें कि ट्रेन कर्मचारी यात्रियों को स्वचालित दरवाजा प्रणाली के बारे में हिंदी में अच्छी तरह से समझा सकें तथा उनके प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम हों।
* शिक्षा सामग्री-रेलवे स्टेशनों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों पर नियमों और उनके उल्लंघन के परिणामों के बारे में जानकारी देने के लिए सूचनात्मक पैम्फलेट, पोस्टर और डिजीटल सामग्री हिंदी में वितरित करे।

2. सफाई तथा स्वच्छता एवं रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म सुरक्षा के लिए हिंदी के प्रयोग को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए हिंदी का उपयोग कैसे किया जा सकता हैः

* **ऑन-बोर्ड घोषणाएँः** सरकार को रेल यात्रा के दौरान यात्रियों को उनके अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करने के लिए जनजागरूकता अभियान शुरू करना चाहिए। इन अभियानों में सफाई, स्वच्छता, सुरक्षा, संरक्षा और जिम्मेदार आचरण से संबंधित प्रमुख नियमों और विनियमों पर हिंदी में प्रकाश डाला जाना चाहिए।
* **साइनेज और पोस्टरः** इंटरैक्टिव अभियानः हिंदी में संवादात्मक अभियानों के माध्यम से यात्रियों को शामिल करें, कहानी सुनाने या लघु नाटकों का उपयोग करके स्वच्छ रेल पर्यावरण एवं रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म सुरक्षा के लाभों पर प्रकाश डालें और जिम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित करें।
* कर्मचारियों का प्रशिक्षण।
* डिजिटल प्लेटफॉर्म।

उपसंहारः भारतीय जनता के लिए रेल यात्रा एक महत्वपूर्ण साधन है, जो उन्हें सुरक्षित, समयबद्ध और आर्थिक रूप से कारगर तरीके से यात्रा करने की अनुमति देती है, जो कि अन्य परिवहन साधन में नहीं पायी जाती है। रेलगाड़ी के माध्यम से लोग विभिन्न समाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संबंध बनाते हैं और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि रेलगाड़ी का लाभ भारत के सभी नागरिकों तक पहुँचता है और उनके जीवन को बेहतर बनाता है, आजादी के बाद से भारतीय रेल ने अनंत उपलब्धियाँ अर्जित की हैं जो कि सराहनीय है, फिर भी सरकार और संबंधित संस्थानों को इसे सुरक्षित, सामर्थ्यवर्धक और प्रौद्योगिकी से अद्यतित बनाने के लिए और भी सुविधाएँ जोड़ने एवं पूर्व में बनाए हुए नियमों का सख्ती से पालन करने की आवश्यकता है। वहीं, भारतीय रेलवे जैसे राष्ट्रीय नेटवर्क में अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी का व्यापक उपयोग करने से देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच भाषाई और सांस्कृतिक विभाजन को पाटने में मदद मिलता है और निम्नवर्गों के अशिक्षित यात्रियों द्वारा रेल सुविधाओं का उचित तरीके से उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।

कर्मचारी कल्याण निरीक्षक
पूर्व मध्य रेल, डीडीयू

रेल सेवा (आचरण) नियम–1966

(Appendix-I of IREC-I (Railway Service Conduct Rules - 1966)

- राजेश कुमार

रेल कर्मचारी रेल सेवा (आचरण) नियम-1966 से शासित है, जो आचरण के स्तर को निर्धारित करता है तथा प्रत्येक रेल कर्मचारी व उसके परिवार के सदस्यों से यह अपेक्षा है कि वे इसका पालन करें।

रेल सेवा आचरण नियम (कुल 26), का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

नियम-1 नामधेय और नियम-2 परिभाषायें हैं।

नियम-3 सामान्य- (1) प्रयेक रेल सेवक हर समय

(i) पूर्ण रूप से सत्यनिष्ठ रहेगा, (ii) कर्त्तव्य परायण रहेगा, (iii) ऐसा कोई कार्य नहीं करेगा, जो किसी रेल अथवा रेल कर्मचारी के लिए अशोभनीय हो,

2) (1) पर्यवेक्षकीय पद धारण करने वाला प्रत्येक रेल सेवक अपने अधीन कार्यरत सभी रेल सेवकों की निष्ठा तथा कर्त्तव्य परायणता सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव उपाय करेगा।

2) कोई भी रेल सेवक अपने कार्य निष्पादन में अथवा उसे प्रदान किये गए अधिकारों के प्रयोग में, उस स्थिति को छोड़कर जिसमें वह किसी पर्यवेक्षक के निर्देशन में कार्य कर रहा है, अपने श्रेष्ठतम विवेक का प्रयोग करेगा, परन्तु यदि वह किसी वरिष्ठ पर्यवेक्षेक के निर्देशन में कार्य कर रहा है तो इसके लिए यथा सम्भव लिखित अनुमोदन प्राप्त करना होगा और यदि किसी कारणवश लिखित अनुमोदन तत्काल प्राप्त करना सम्भव न हो तो ऐसी स्थिति में वह कार्य निष्पादन के तुरन्त बाद उसकी लिखित पुष्टि सम्बन्धित प्राधिकारी से प्राप्त करेगा।

3. (अ) तत्परता एवं शिष्टाचार - कोई भी रेल सेवक

(i) अपनी सरकारी सेवा के दौरान अशिष्ट तरीके से कार्य व व्यवहार नहीं करेगा।

(ii) सरकारी कामकाज में आम जनता के साथ व्यवहार करते समय विलम्बकारी प्रवृत्ति नहीं अपनायेगा अथवा उसको सौंपे गए निर्धारित कार्य के निष्पादन में जानबूझकर विलम्ब नहीं करेगा।

3. (ब) सरकारी नीतियों का अनुसरण- प्रत्येक रेल सेवक सदैव

(i) विवाह के लिए निर्धारित आयु, पर्यावरण की सुरक्षा, वन्य जीवन तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षा के सम्बन्ध में सरकार द्वारा निर्धारित नीतियों का अनुसरण करेगा,

(ii) महिलाओं के प्रति अपराध उन्मूलन सम्बन्धी नीतियों का अनुसरण करेगा।

3. (स) कामकाजी महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न पर प्रतिबन्धः- (RBE 96/98, 148/98, 02/15, 105/15,114/15)

(1) कोई भी रेल सेवक किसी भी कार्यस्थल पर किसी भी महिला के लैंगिक उत्पीड़न सम्बन्धी किसी कार्य में लिप्त नहीं होगा,

(2) प्रत्येक रेल सेवक, जो कार्यस्थल का प्रभारी है, अपने कार्यस्थल पर किसी भी महिला का लैंगिक उत्पीड़न रोकने के लिए समुचित कदम उठायेगा,

स्पष्टीकरण -

नियम-4:- कम्पनी/फर्म में रेल सेवक के नजदीकी रिश्तेदार को रोजगार- कोई भी रेल सेवक अपने पद या प्रभाव का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस्तेमाल करके किसी कम्पनी/फर्म में अपने परिवार के किसी सदस्य को रोजगार नहीं दिलाएगा।

नियम-5:-राजनैतिक गतिविधियों और चुनावों में भाग लेना- कोई भी रेल सेवक किसी राजनैतिक पार्टी अथवा ऐसे संगठन से जो राजनैतिक गतिविधियों से जुड़ा हो, वह न तो उसका सदस्य होगा न ही उससे कोई सम्बन्ध रखेगा। प्रत्येक रेल सेवक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह अपने परिवार के सदस्यों को किसी भी राष्ट्र विरोधी आंदोलन अथवा गतिविधियों में भाग लेने से रोकेगा।

नियम-6:- रेल सेवक द्वारा संघ अथवा संगठन में शामिल होना- कोई भी रेल सेवक ऐसे किसी संघ या संगठन की सदस्यता ग्रहण नहीं करेगा और न ही उसकी किन्ही गतिविधियों में भाग लेगा जिसका उद्देश्य भारत की एकता, अखंडता व सम्प्रभुता को नुकसान पहुँचाना हो।

नियम-7:- प्रदर्शन- कोई भी रेल सेवक किसी ऐसे प्रदर्शन में भाग नहीं लेगा जिससे भारत की एकता एवं सम्प्रभुता, राष्ट्र की सुरक्षा, विदेशी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों, जनता की शांति एवं सुव्यवस्था, शालीनता एवं नैतिकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता हो या किसी न्यायालय की मानहानि होती है अथवा किसी अपराध को बढ़ावा मिलता हो।

नियम-8:- प्रेस एवं रेडियों से सम्बन्ध रखना- कोई भी रेल सेवक सरकार की पूवार्नुमति के बिना कलात्मक, साहित्यिक व वैज्ञानिक मामलों को छोड़कर किसी पुस्तक प्रकाशन अथवा समाचार पत्र के सम्पादन का कार्य नहीं

करेगा और ना ही प्रेस, रेडियों व टीवी से कोई सम्बन्ध ही रखेगा।

नियम-9:- सरकार की आलोचना- कोई भी रेल सेवक अपने नाम से या किसी अन्य व्यक्ति के नाम से किसी रेडियो प्रसारण या किसी लेखन या प्रकाशन के माध्यम से सरकार की ऐसी आलोचना नहीं करेगा और न ही इस सम्बन्ध में किसी प्रेस से ऐसा पत्राचार करेगा और न आम जनता के समक्ष ऐसा वक्तव्य देगा जिससे केन्द्र सरकार या राज्य सरकार की घोषित वर्तमान किसी नीति की विपरीत आलोचना होती है अथवा केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो अथवा केन्द्र सरकार व किसी विदेशी सरकार के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो, अथवा

नियम-10:-किसी जांच समिति अथवा प्राधिकारी के समक्ष गवाही देना- कोई भी रेल सेवक सरकार की पूर्व स्वीकृति के बिना किसी व्यक्ति जाँच समिति या अधिकारी के समक्ष गवाही नहीं देगा अथवा जाँच के दौरान केन्द्र या राज्य सरकार की नीतियों या की गई कार्यवाही की आलोचना नहीं करेगा।

नियम-11:- आधिकारिक सूचनाओं का सम्प्रेषण- कोई भी रेल सेवक इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा बनाए गए सामान्य अथवा विषेश आदेशों के अनुपालन में सहस विश्वास के बिना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अपने पद से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के सरकारी दस्तावेज या उसका कोई अंश या कोई वर्गीकृत सूचना किसी अन्य रेल सेवक को नहीं देगा और किसी अनाधिकृत व्यक्ति को ऐसी सूचनाएँ उपलब्ध नहीं करायेगा जो उन सूचनाओं को प्राप्त करने का वैद्यानिक अधिकारी न हो। परन्तु अपने कर्त्तव्य के अनुपालन में सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 एवं इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत किसी व्यक्ति को सूचना का सम्प्रेषण कर सकता है।

नियम-12:-अंशदान- प्रत्येक रेल सेवक सरकार की पूवार्नुमति के बिना किसी प्रकार का अंशदान न तो स्वयं माँगेगा और न ही स्वीकार करेगा और न ही किसी भी रूप में इस तरह की धन की उगाही गतिविधि से अपने को सम्बन्धित रखेगा।

नियम-13:-उपहार-

1. कोई भी रेल सेवक अपने परिवार के किसी सदस्य या किसी अन्य व्यक्ति को अपनी ओर से उपहार लेने की न तो अनुमति देगा न ही स्वयं स्वीकार करेगा
2. रेल सेवक शादी, वर्षगांठ, श्राद्ध अथवा अन्य धार्मिक उत्सवों पर प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक रीतियों के अनुसार अपने निकटतम रिश्तेदारों से उपहार प्राप्ति कर सकता है, परन्तु उपहार का मूल्य निम्न दर्शायी गई राशि से अधिक हो तो से इसकी सूचना सरकार को देनी होगीः- (RBE 59/04 & 01/15)

i ग्रुप 'ए':- रुपए 25000/- ii ग्रुप 'बी':-रुपये 15000/-

iii ग्रुप 'सी':- रुपए 7500/- iv ग्रुप 'डी':- रुपये 1000/-

3. उपरोक्त वर्णित अवसरों पर रेल सेवक अपने निजी मित्रों, जिनसे उसका शासकीय सम्बन्ध न हो, से उपहार प्राप्त कर सकता है, परन्तु यदि उस उपहार का मूल्य निम्नानुसार निर्धारित सीमा से अधिक हो तो इसकी सूचना सरकार को देनी होगीः-

i ग्रुप 'ए' व 'बी' के मामले में रुपये 1500/-

ii ग्रुप 'सी' व 'डी' के मामले में रुपये 500/-

नियम-13 एः- दहेज-

i कोई भी रेल सेवक न तो दहेज देगा और न दहेज लेगा और न ही ऐसे लेनदेन को प्रोत्साहित करेगा।

नियम-14: रेल सेवक के सम्मान में प्रदर्शन- कोई भी रेल सेवक सरकार की पूर्व स्वीकृति के बिना किसी प्रकार का अभिनन्दन अथवा विदाई भाषण, न तो स्वीकार करेगा और न ही कोई प्रशस्ति पत्र प्राप्त करेगा और नहीं वह अपने अथवा किसी अन्य रेल सेवक के अभिनन्दन समारोह में भाग लेगा। परन्तु यह निम्न मामलों में लागू नहीं होगाः-

i किसी भी रेल सेवक या किसी सरकारी कर्मचारी के स्थानान्तरण, सेवानिवृति या वह व्यक्ति जिसने हाल ही में सरकारी नौकरी छोड़ दी है, के विदाई समारोह पर आयोजित व्यक्तिगत एवं औपचारिक समारोह आदि।

ii ऐसे अवसरों पर जनसंस्थाओं के द्वारा आयोजित कम खर्चीले मनोरंजन के कार्यक्रम भी इस नियम की सीमा में नहीं आयेंगे।

नियम-15:- निजी व्यापार या नौकरी-

कोई भी रेल सेवक सरकार की बिना पूर्व स्वीकृति के किसी व्यापार या व्यवसाय से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा।

न तो कोई अन्य रोजगार ग्रहण करेगा और ना ही उसके लिए कोई वार्ता ही करेगा हालांकि रेल कर्मचारी कभी-कभी किये जाने वाले सामाजिक व चेरीटेबल प्रकृति के कार्य अथवा साहित्यिक कलात्मक अथवा वैज्ञानिक प्रकृति के कार्य कर सकता है।

नियम-15 एः सरकारी आवास को किराये पर देना तथा आवासों को खाली न करना- (RBE 12/97)

i कोई भी रेल सेवक अपने नाम से आबंटित सरकारी आवास को किसी अन्य व्यक्ति को किराये पर अथवा पट्टे पर रहने के लिए नहीं देगा।

ii रेल सेवक के सरकारी आवास के आबंटन को निरस्त करने पर, आबंटित अधिकारी द्वारा निर्धारित समयावधि में आवास को खाली करना होगा।

नियम-16: निवेश, धन उधार देना या लेना -

1. कोई भी रेल सेवक किसी स्टाक, शेयर अथवा अन्य निवेश में सट्टा नहीं लगायेगा। लेकिन यह उपनियम उस अवस्था में लागू नहीं होगा जब यदा-कदा निवेश स्टॉक ब्रोकर अथवा अन्य ऐसे व्यक्तियों के माध्यम से जो विधि द्वारा इस कार्य हेतु प्राधिकृत है अथवा जिनके पास सम्बन्धित नियम के अन्तर्गत प्रमाण-पत्र है, के मार्फत् किया जाता है। (RBE 12/97)

नियम-17:-दिवालियापन अथवा आदतन कर्जदारी- कोई भी रेल सेवक अपने खर्च एवं क्रिया कलापों को इस प्रकार अनुशासित करेगा जिससे उसे कर्ज लेने अथवा दिवालिया होने की नौबत न आये। यदि किसी रेल सेवक के विरूद्ध सरकारी या अन्य ऋण वसूली के लिए अदालती कार्यवाही की जाती है तो उसे इसकी सूचना तुरन्त सरकार को देनी होगी।

नियम-18: चल अचल एवं कीमती सम्पति का अर्जन-

1. कोई भी रेल सेवक सरकार की पूर्व जानकारी के बिना स्वयं के नाम अथवा अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम लीज, मोर्टगेज खरीद, बेचान या उपहार के तौर पर अचल सम्पति को खरीद अथवा बेच नहीं सकता।
2. जहां रेल सेवक स्वयं के नाम अथवा अपने परिवार के किसी सदस्य के नाम चल सम्पति का लेनदेन करता है तो उसे इस लेनदेन के एक माह के भीतर अपनी रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत करनी होगी, यदि ऐसे लेनदेन/सम्पति का मूल्य रेल सेवक के दो माह के मूल वेतन से अधिक हो, लेकिन इस तरह का लेनदेन उस व्यक्ति के साथ हो जिसके साथ उसका शासकीय व्यवहार है तो रेल सेवक को सरकार से इसकी पूवार्नुमति लेनी होगी। (RBE 105/11)

नियम-18 ए:-विदेशियों के साथ लेनदेन व भारत के बाहर संपति खरीदने व बेचने पर प्रतिबंध- कोई भी रेल सेवक सरकार की पूवार्नुमति को छोड़कर उसके स्वयं या परिवार के नाम पर खरीद/ बेचान, लीज गिरवी, उपहार द्वारा भारत के बाहर कोई अचल सम्पति न तो खरीद सकता है, और न ही बेच सकता है तथा न ही वह किसी विदेशी के साथ इस प्रकार का लेनदेन कर सकता है।

नियम-19: रेल सेवक के कार्यों एवं चरित्र के सम्बन्ध में प्रचार- कोई भी रेल सेवक सरकार की पूवार्नुमति के बिना किसी राजकीय कृत्य के प्रतिशोध के लिए किसी न्यायालय अथवा प्रेस का सहारा नहीं लेगा, जिसमें किसी की आलोचना या चरित्र हनन का मामला निहित हो। यदि रेल सेवक के इस हेतु किए गए अनुरोध की तिथि से 3 माह के अन्दर सरकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त नहीं होती है तो यह माना जायेगा कि कर्मचारी का अनुरोध स्वीकार कर लिया गया है। (RBE 115/96)

नियम-20: विभागीय अथवा अन्य प्रभाव का उपयोग- कोई भी रेल सेवक सरकार को उसके द्वारा दी जा रही सेवाओं के सम्बन्ध में स्वयं के हित व अन्य लाभकारी कार्य हेतु अपने से उच्च प्राधिकारी पर किसी प्रकार का राजनैतिक अथवा कोई अन्य दबाव न तो लायेगा और न ही लाने का प्रयास करेगा।

नियम-21: विवाह के सम्बन्ध में प्रतिबन्ध-

i कोई भी रेल सेवक ऐसे व्यक्ति के साथ जिसका पति/पत्नी जीवित हो उसके साथ न तो शादी और न ही शादी का करार करेगा। और

ii कोई भी रेल सेवक जिसका पति/पत्नी जीवित है, वह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ न तो विवाह और न ही विवाह का करार करेगा।

नियम-22: मादक पेय और पदार्थ का सेवन-

1 **क.** एक रेल सेवक को ड्यूटी के दौरान मादक पेय या औषधि ग्रहण नहीं करने के नियम का कानूनी रूप से कड़ाई से पालन करना होगा।

ख. किसी सार्वजनिक स्थान पर मादक पेय अथवा मादक पदार्थ का सेवन अवैध है।

2. किसी रेल सेवक द्वारा यह नहीं किया जायेगा -

क. मदहोशी/नशे की हालत में सार्वजनिक स्थान पर जाना।

ख. अत्यधिक मात्रा में मादक पेय/पदार्थ का सेवन।

ग. कोई भी रेल सेवक यदि वह रनिंग श्रेणी (लोको व यातायात दोनों) से सम्बन्धित है अथवा गाड़ी परिचालन सेवाओं से सीधा जुड़ा है, वह ड्यूटी शुरू होने के आठ घण्टों के दौरान मादक पेय/ औषधि लेता है या प्रयोग करता है तो ड्यूटी के दौरान इस प्रकार का पेय या औषधि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

नियम-22 ए:- कोई भी रेल सेवक 14 वर्ष से कम आयु के बच्चे को काम पर नहीं लगायेगा। (RBE 03/2000)

नियम-23:- राष्ट्रपति को उपरोक्त नियम बनाने एवं निर्णय करने का अधिकार है।

नियम-24:- इस अधिकारों का प्रत्यायोजन/डेलिगेशन करने का है।

नियम-25:- इन नियमों को निरस्त करने का अधिकार है।

नियम-26:- सभी प्रशासनिक आदेशों का पालन करने का निर्देश है।

राजभाषा अधिकारी
सह
सहायक कार्मिक अधिकारी
पू.म.रे. डीडीयू

'क' को क्या कहकर पुकारूँ?

- रामजी प्रसाद 'भैरव'

कितनी बे सिर पैर की बात है। भला यह भी कोई बात है। बात की बात में किसी ने पूछ दिया। 'क' को क्या कहकर पुकारूँ। उसके प्रश्न पर मेरा जी जल गया। खोपड़ी सुलग उठी। मन में आया कि कान के नीचे एक पड़ाका जड़ दूँ। होश ठिकाने आ जाय बेहूदे इंसान का। आप ही सोचिए भला यह भी कोई प्रश्न है। मूर्खता से भरा हुआ। पूछ रहा है कि 'क' को क्या कहकर पुकारूँ? क्यों तुम्हें स्कूल में क का मतलब नहीं बताया गया था। अरे.. ये क्या? इसका प्रश्न तो एकदम ठीक है। मुझे तो पहली बार क से कौआ पढ़ाया गया था। थोड़ा बड़ा हुआ तो पता चला कि क से केला भी होता है। क से कबूतर या फिर कुछ भी जिससे क से सम्बंध निकल आये। आप पुकार सकते हैं। लेकिन क्या यह ठीक होगा। आखिर पंडित जी ने इतना जोर देकर क से कौआ ही क्यों पढ़ाया। कुछ और भी तो पढ़ा सकते थे। मगर इसमें उनका कोई दोष नहीं। उन्होंने एकदम सही पढ़ाया था। सौ फीसद सच्चा और खरा। मुझे लगता इसमें बहुत बड़ा मनोविज्ञान छिपा है। क्यों बच्चों को पढ़ाते समय क का मतलब कौआ ही बताया जाता है। कुछ और क्यों नहीं। आखिर उसका प्रश्न भी तो यही था।

अच्छा अब यहाँ से सोचना शुरू कीजिए। भगवान श्री कृष्ण की बाल लीला एक अंश देखिए। माता यशोदा ने कान्हा को नहला धुलाकर, साफ सुंदर कपड़े पहनाए। तेल, फुलेल लगाया। चोटी बनाई। काला टीका लगाया, किसी की नजर न लगे। और फिर माखन चुपड़कर हाथ में रोटी पकड़ा दिया। लो खाओ। कान्हा खाने लगे। मस्ती में ठुमक ठुमक कर। क्या पता कागभुसुंडी महराज पहले से आँख गड़ाए बैठे हैं। रोटी पर नहीं कान्हा पर। वो क्यों भला। अरे बुद्धू इतना भी नहीं जान पाए। अपनी शंका मिटाने के लिए। क्या यही वह परमब्रह्म परमेश्वर है, जो सारी दुनिया को रोटी देता है। सृष्टि को चलाता है। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। चलो चल कर देखूँ तो जरा। सच है या कोरी अफवाह। और उन्होंने कान्हा के हाथ से रोटी छीन लिया। मूर्ख कौआ। किससे बैर ठान लिया। त्रिलोकीनाथ से। बड़ा जुलुम किया अभागे ने।

'काग के भाग बड़ो सजनी, हरि हाथ सो ले गयो माखन रोटी।' पहले तो लगा कौआ मूर्ख है, ऐसी गलती कर बैठा, लेकिन नहीं, वह भाग्यशाली निकला। भगवान भी कहाँ मानने वाले, रोटी छीनने ने लिए हाथ बढ़ाया। कागभुसुंडी महराज को भागते भागते जान पर बन आयी। भगवान की लीला का आनंद सभी देवता ले रहे थे। कान्हा का हाथ उनका पीछा ही नहीं छोड़ रहा था। गलती तो हो गयी। पछता रहे हैं कागभुसुंडी, मगर करें क्या? कहीं गर्दन पकड़ लिया तो मरोड़कर फेंक देंगे। अननाहक जान जाएगी। लगे त्राहि माम् करने। परन्तु बीच में पड़ने की किसकी हिम्मत। सारे देवता कागभुसुंडी के मूर्खता पर हँस रहे थे। थक हार कर वापस लौटे, रोटी वापस दिया। चरणों में गिरकर क्षमा माँगी।

क्या क से कौआ पढ़ाने के पीछे यही असली मनोविज्ञान था। कौआ ही पहला पक्षी है, जो सबसे पहले बच्चों को अपने मुंडेर पर कांव कांव करता दिख जाता है। मां बच्चे को रोटी देकर पहला पाठ पढ़ाती है। सावधानी से खाना, नहीं तो कौआ छीन लेगा। बच्चा भी कौवे से सावधान हो उठता है। उसी कौवे का परिचय जब पंडी जी एक आकृति से कराते हैं, तो वह सहज ही अपनी स्मृति में बैठा लेता है। कौआ उसे जीवन भर स्मरण रहता है।

इसे छोड़िए, कौवे को लेकर एक पर्व निर्धारित है। उस दिन कौआ महराज को खूब अच्छे अच्छे पकवान खाने को मिलते हैं। न दिखाई पड़ने पर मनावन करना पड़ता है। मान्यता है उस दिन पितर कौआ के रूप में पधारते हैं। हिन्दू धर्म की इस मान्यता के अनुसार, पितरों का एक दिन निर्धारित किया गया है। उनका आना समृद्धि सूचक होता है। उस दिन उसके सारे दोष भुला दिए जाते हैं। वैसे कौआ बड़ा उपेक्षित पक्षी है। लोग उसे देखना पसंद नहीं करते। बहुत दृष्टि दौड़ाने पर यह समझ में आता है। यह मांस और गू खाने वाला पक्षी है। मगर एक दूसरी बात भी याद आती है। रामायण के अनुसार इंद्र का पुत्र जयंत कौवे का वेश बनाकर धरती पर आया। उस समय राम को चौदह साल का वनवास मिला था। साथ में उनकी पत्नी सीता और लक्ष्मण जी भी चले आये थे। जयंत जिस समय उनके पास आया, लक्ष्मण जी नहीं थे। रामजी, सीताजी के गोंद में सिर रखकर सोए थे। जयंत ने बड़ी धृष्टता की, दुस्साहस किया। अमर्यादित आचरण किया। उसने सीता जी के स्तन और पैरों में चोंच मार दिया। और भाग खड़ा हुआ। सीता जी विचलित हो उठी। वैसे इस प्रसंग को तुलसीदास ने मर्यादित बनाने के लिए केवल चरण का ही उल्लेख किया है। खैर, बात यह हुई कि प्रभु श्री राम ने जयंत के इस आचरण से क्षुब्ध होकर तिनके का बाण बनाकर चला दिया। कौवे ने देखा एक बाण सनसनाता हुआ उसकी ओर चला आ रहा है। वह शक्ति भर भागने लगा। वह जहाँ-जहाँ जाता, बाण उसका पीछा करता। वह भयभीत हो उठा। वह देव लोक के सारे

देवताओं से राम के बाण से बचाने की गुहार लगाई। लेकिन सबने राम के बाण से उसे बचाने से मना कर दिया। जयंत थक हार कर राम का शरणागत हुआ। अपने किये की क्षमा माँगी। राम ने दण्ड स्वरूप उसकी एक आँख फोड़कर काना बना कर छोड़ दिया। तब से आज तक हर कौवा एक आँख का काना बना घूम रहा है। कौवे की उपेक्षा का एक कारण यह भी हो सकता है। हिंदी वर्णमाला में किसी बच्चे को अक्षर पहचान 'अ' की बजाय 'क' से कराया जाता है। इसके पीछे मुझे यही मनोविज्ञान लगता कि 'अ' से अनार का परिचय पाने से काफी पूर्व बच्चा कौवे से परिचित हो जाता है। हमारे यहाँ गाँवों में अब भी कौवे की बोली सुनकर किसी मेहमान के आने का संकेत समझा जाता है। कौआ उपेक्षित होकर भी आत्मीय होता है। साहित्य में विरहणी नायिका अपने प्रिय के आने की मनौती कौवे से माँगती हैं और आश्वासन देती हैं, तुम्हारी चोंच सोने से मढ़वा दूँगी। मैंने खुद बचपन में कौवे को नथिया पहने देखा है। हो सकता है यदा कदा अब भी कोई कोई स्त्री ऐसा करती हो। कौवे का स्वर अच्छा नहीं माना जाता। उसकी बोली कर्कश है। अप्रिय है। कर्ण प्रिय नहीं है। कौआ प्रायः उपेक्षित रहने वाला है। उसकी उपेक्षा उसके स्वभाव के कारण होती है। उसे व्यवहारिक रूप से चंठ भी कहा जाता है। उसके द्वारा किसी खाद्य सामग्री को जूठा कर देने पर निष्प्रयोज्य हो जाता है। मुझे याद है बचपन में मेरे आजा (परदादा) को नहाने के लिए रखे पानी को कौवे द्वारा जुठार देने पर, नाराजगी व्यक्त करते हुए पानी फेंकवा दिए। जबकि उस समय पानी कुएँ से आता था। मैं 'क' का दुर्भाग्य तो नहीं कहूँगा, लेकिन कौवे का दुर्भाग्य जरूर कहूँगा। क्योंकि उसकी तुलना कोयल से की जाती है। कहाँ कोयल की सुरीली तान, कहाँ कौवे की कर्कश ध्वनि। दोनों में जमीन आसमान का अंतर है। यह अंतर यहीं खत्म नहीं होता। बल्कि कौवे के स्वार्थी होने का प्रमाण भी बनता है। कौआ अपने बच्चे खुद नहीं पालता, वह अपने अंडे कोयल के खोते में रख देता है। बेचारी कोयल ठहरी सीधी-साधी वह कौवे के अंडे को अपना अंडा समझकर जतन करती है। समय आने पर जब उससे चूजे निकलते हैं। तो वह कोयल के बच्चों की तरह काले होते हैं। कोयल कौवे के छल को समझ नहीं पाती और उसे अपना बच्चा समझ कर पालती है। यह रहस्य खुलता भी तब है, जब कौवे के बच्चे कर्कश ध्वनि में बोलते हैं।

कौवे से जुड़ी इतनी बातें हैं कि किसी बच्चे के मानस पटल पर सहजता से अंकित होना स्वाभाविक है। कोई बच्चा जब पहली बार कौवे की कांव कांव सुनता है तो वह मुग्ध हो उठता है। क्योंकि वह बेसुरा तान प्रभात के साथ ही सुनने को मिलती है। दूसरे वह सहजता से रोज उपलब्ध होने वाला पक्षी है। किसी अबोध बच्चे को उसके बेसुरे होने का अनुमान हो न हो परन्तु, उसे आनन्द तो पहुंचा ही आता है। शायद ही कोई ऐसा बच्चा हो जो कौवे को बचपन में देर तक निहारा न हो। बच्चा कौवे का गुण दोष परखे बिना ही उसका आत्मीय हो उठता है। यही वजह जब स्कूल में पहली बार किसी आड़ी तिरक्षी लकीर को कौवा शब्द से सम्बोधित किया जाता है तो बच्चा कौतूहल से उन लकीरों में कौवे की आकृति तलाशता है। कुछ ही दिनों में उसका विश्वास पुष्ट हो जाता है कि यही कौआ 'क' है। बरबस ही मुझे एक प्रसंग स्मरण हो आ रहा है, जिसे सुनकर शायद आप का भी विश्वास दृढ़ हो जाए। बात यह है कि किसी गाँव में रोज राम कथा कहने की परंपरा थी, जिसे कोई न कोई पढ़कर सुनाता था, कुछ भक्त लोग राम कथा का आनंद लेते। एक दिन हुआ यह कि उस गाँव में किसी के दामाद आये। लोगों ने आग्रह किया आज की कथा दमाद जी सुनाएंगे। दमाद जी ने बड़ा ना नुकुर किया, लेकिन गाँव वाले सहमत न हुए। थक हार दमाद जी ने मौन सहमति दे दी। नियत समय पर गाँव के लोग इकठ्ठा हुए, उसमें स्त्री और पुरुष, बालक, वृद्ध सब थे। मजे की बात यह थी कि दमाद जी की सास, स्वसुर और बेटी भी कथा में उपस्थित थे। एक चौकी पर गद्दा बिछा कर आसन लगा दिया गया। राम चरित मानस रेहल पर रख कर, धूप अगरबत्ती वगैरह जला दिया गया। पूरा वातावरण भक्तिमय था। दमाद जी चौकी पर बैठे तो थोड़ी दुविधा में आ गए, लोगों ने कहा- 'अब शुरू करिए, सब लोग आ गए हैं।'

दमाद जी ने पुस्तक के बीच में हाथ डालकर किताब खोला, लोग बड़ी उत्कंठा से उनकी ओर देख रहे थे। अचानक दमाद जी ऊँगली एक जगह ठहर गयी, और लगे सिसक सिसक कर रोने, उनको रोता देख सास की आँखों में आँसू आ गए, वह भी रोने लगी। माँ को रोता देख बेटी रोने लगी। माँ, बेटी को रोता देख, गाँव की स्त्रियाँ रोने लगी। यह देख सभी पुरुष भी रोने लगे। पूरा गाँव भाव विह्वल होकर रो रहा था। अचानक एक व्यक्ति बोला - 'भाई देखो तो जरा, कौन सा ऐसा प्रसंग है कि दमाद जी बिना एक शब्द बोले पूरे गाँव को रुला दिए।' एक व्यक्ति ने देखा तो राम वन गमन का प्रसंग खुला हुआ था। लोग फुसफुसाए भाई प्रसंग ही ऐसा है कि दमाद जी रो दिए। जब पूरी अयोध्या रो रही है राम के वियोग तो हम लोगों की बात ही क्या है।

दमाद जी चिल्लाए - 'नहीं भाइयों, ऐसी बात नहीं है। जब मैं पहली बार स्कूल गया तो मास्टर साहब ने कौआ 'क', बहुत बड़ा लिखा था। मैं खुश था कौआ 'क' इतना बड़ा होता है। उस दिन के बाद मैंने आज देखा तो आँसू निकल आये, बेचारा कितना छोटा हो गया है।'

लोग समझ गए, यह तो पूरा बौड़म है। इसे हटाओ किसी दूसरे से कथा आगे बढ़ाओ।

प्राचार्य
जनता जनार्दन इंटर कालेज, चहनियां, चन्दौली

बुद्धू

- विनोद कुमार

बुद्धुओं का इतिहास तो मुझे आज तक नहीं पता। बुद्धू कौन और कहाँ पैदा होते हैं मुझे ज्ञात नहीं परन्तु मेरी धर्मपत्नी मुझे हमेशा ही बुद्धू समझती हैं। अफसोस कि पूरे 32 वर्ष हो गए विवाह हुए लेकिन मेरे बारे में उनकी धारणा आज तक वही की वही है। शुरू के दिनों में तो मुझे बहुत असहज लगता था परंतु एडजस्टमेंट शब्द को बार-बार मैं याद करके एडजस्ट हो गया। मैं जब 21 वर्ष का हुआ ही था कि मेरा विवाह पूरे विधि विधान के साथ हो गया। धर्मपत्नी नामक प्राणी का मेरे घर में गृह प्रवेश धर्म-कर्म के साथ हुआ। मैं भी उनके साथ धर्म की पत्नी मानकर धीरे-धीरे धैर्यपूर्वक गुजर-बसर करने का आदी हो गया। जहाँ तक मुझे पक्का याद है मेरे सहपाठियों में मैं एक मात्र शादी-शुदा विद्यार्थी था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय का मेरा कोई भी सहपाठी मित्र यह नहीं जानता था कि मैं शादी-शुदा हूँ। मेरे अधिकांश गुरूजन विशेषकर डॉ. ए.एन. द्विवेदी साहब अक्सर रघुपति सहाय उर्फ फिराक गोरखपुरी साहब की चर्चा किया करते थे और बताते थे कि उन्हें उनका शिष्य होने का गौरव प्राप्त है। उसी तरह डॉ. एम.एम. दास साहब भी पोएट्री की कक्षा में फिराक साहब की चर्चा करना नहीं भूलते थे। जब तक विश्वविद्यालय परिसर और मित्रों के बीच रहता तब तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता था, परन्तु अपनी पत्नी के लिए घर पर वही बुद्धू पति! मुझे कुंठा न हो इसलिए मैं गांव के अपने अन्य शादी-शुदा मित्रों से इस पर चर्चा करने लगा कि 'यार! जाने क्या बात है कि मेरी पत्नी मुझे बुद्धू समझती है।' मेरी बात सुनकर मेरे मित्रों ने भी गम्भीरतापूर्वक बताया कि उनकी पत्नी भी उन्हें बुद्धू ही समझती है। अन्य का भी हाल मेरे जैसा है जानकर मेरे लिए किसी खुशखबरी से कम आनन्ददायी बात नहीं थी। मुझे आत्म संतोष हुआ कि दुनिया में मैं अकेला बुद्धू पति नहीं हूँ।

मेरा अनुभव कहता है कि पत्नी इंसान की सबसे बड़ी आलोचक/ समालोचक होती है। इस विषय पर गंभीरता से चिन्तन-मनन करने लगा। अपने मित्रों का हाल जानकर एक प्रकार से इस विषय पर मैंने सर्वे करने का निर्णय लिया। इस काम को मैंने पहले अपने घर से ही श्रीगणेश किया। सर्वप्रथम मैं अपनी माँ की बात बताता हूँ। मेरी माँ भी मेरे पिताजी को बुद्धू समझती थी। जहाँ तक बड़े भाई लोगों की बात है मेरी भाभियाँ भी भैया लोगों को बुद्धू समझती हैं। मुझे लगता है कि देश भर के भैया लोगों की कमोबेश यही दशा होती होगी। गाँव के अन्य शादी-शुदा मित्रों से हटकर मुझे अब अन्य लोगों से भी अप्रत्यक्ष रूप से इस प्रश्न को पूछने की सनक सवार हो गयी। इस मामले में प्रायः सबका एक ही जवाब रहता था कि सबकी पत्नी उन्हें निरा एक दर्जे का बुद्धू समझती हैं।

नौकरी लगने के बाद भी मेरा यह सर्वेक्षण का कार्य जारी रहा। शुरू-शुरू में तो मैं कार्यालय में भी अपने सहकर्मियों से अप्रत्यक्ष रूप से कहता था कि 99 प्रतिशत पत्नियाँ अपने पति को बुद्धू समझती हैं तो मेरे इस बात को कोई नकारता नहीं था अर्थात सबकी मौन स्वीकृति थी। मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि अब मुझे कुंठित होने की आवश्यकता नहीं है। मैं बेवजह अपनी पत्नी से क्रोधित होता था और क्रोधवश कभी-कभी किसी बहाने को लेकर डांट भी देता था। पुरखे-पुरनियों के कथानुसार 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात 'जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।' इस सूत्र में मेरी आस्था अटूट होती गयी तथा दूसरों से भी ऐसी ही उम्मीद बंधती रही कि महाजनों येन गतः सपन्था। धीरे-धीरे मुझे 99.9 प्रतिशत यह आंकड़ा सरकारी आंकड़े की तरह बताने में गुरेज नहीं रहा। मेरे सहयोगी श्री शैलेन्द्र सिंह, जो मुझसे आयु में लगभग एक दशक छोटे हैं, उनसे भी मैंने इस गम्भीर विषय पर चर्चा की तो उनका भी वही उत्तर मिला कि उनकी भी पत्नी उन्हें बुद्धू समझती हैं। इसी तरह मेरे एक और अनन्य मित्र श्री सुरेश मिश्र, जो मुझसे उम्र में एक दशक बड़े हैं उनका भी उत्तर सुनकर मैं हैरान था। उनके अनुसार 'भाई साहब यदि आपकी पत्नी आपको साठ प्रतिशत बुद्धू समझती है तो मेरी पत्नी मुझे अस्सी प्रतिशत बुद्धू समझती है। उनके इस स्वीकारोक्ति से पुष्टि हो ही गयी कि मुझसे वह हर दृष्टि से बड़े हैं। क्योंकि यहां उनका अनुभव बोल रहा था जबकि उनका पूरा विभाग उन्हें शेर दिल इंसान समझता है। मेरा दिल जानता है कि उस शाम को मैंने दो रोटी ज्यादा खायी थी। सर्वे का यह मेरा कार्य लगातार चलता रहा है। इस क्रम में मैंने अपने ही कार्यालय में कार्यरत एक और सहयोगी श्री कैलाश नाथ से कई दिन मुफ्त वाली चाय पिलाने के बाद इस मसले पर हिम्मत करके उनके दिल का हाल जानना चाहा। तन मन से बूढ़े हो चुके श्री कैलाश जी ने उपदेश देते हुए कहा कि मुझे अपने शब्द वापस लेना चहिए। यह बात अलग है कि मैंने उनसे कहा था कि शत प्रतिशत महिलाएं अपने पति को बुद्धू समझती हैं। शायद यह उनकी कमजोरी थी या दुखती रग पर मैंने हाथ रख दिया था, सो उनका नाराज होना लाजमी था और मैं उनके चेहरे के हाव-भाव से भांप गया था। चूँकि कैलाश जी से मेरा पारिवारिक संबंध रहा है इस लिए

उनकी धर्म पत्नी को मैं भली भाँति जानता हूँ। निश्चित रूप से वह बहुत मृदुभाषी एवं संस्कारी महिला हैं लेकिन वह अपने पति को बुद्धू नहीं मानती होंगी, इस पर मुझे हमेशा संदेह होता है। फिर भी मान भी लिया जाय कि उनकी धर्म पत्नी उन्हें बुद्धू नहीं समझती हैं तो यह आँकड़ा एक हजार से अधिक लोगों के बीच में मात्र एक है अर्थात ऐसे व्यक्ति को अपवाद स्वरूप में रखा जाना चाहिए। हालाँकि, कई लोग पत्नी के डर से इस रायशुमारी में शामिल नहीं हुए। उन्होंने बताया कि 'मैं अमेरिका एवं रूस पर टीका टिप्पणी कर सकता हूँ, लेकिन पत्नी पर अपनी कोई राय नहीं रख सकता।'

मेरे सोच विचार के क्रम में चन्दौली जिला के वरिष्ठ उपन्यासकार एवं कथाकार श्री रामजी प्रसाद 'भैरव' की विशेषज्ञ राय भी मुझसे अलग नहीं थी। इस सर्वे में किसी राजपत्रित अधिकारी की राय अपनी नौकरी को ध्यान में रखते हुए शामिल नहीं की है। उनकी राय लेने की मैं हिम्मत नहीं जुटा पाता हूँ। मेरे इस कटु सत्य परन्तु बेतुके सवाल से पता नहीं कब कौन नाराज हो जाय। भविष्य में मैं मौका मिलते ही अधिकारियों की भी राय लेने की कोशिश जरूर करूँगा। वहाँ भी मामला मुझे संदेह नहीं बल्कि संदेहास्पद लगता है। ऊपर फिराक गोरखपुरी साहब का जिक्र मैंने इस लिए किया है कि उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है कि 'मेरी शादी मेरे जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी थी।'

मैंने अब तक हार नहीं मानी है और भविष्य में भी नहीं मानूँगा। मैं उस खुश नसीब इंसान को दुनिया के सामने लाना चाहता हूँ, जो यह कहे कि मेरी धर्म पत्नी मुझे बुद्धू नहीं समझती है और इसकी पुष्टि उनकी धर्म पत्नी निष्पक्ष भाव से करे। समाज में तो सभी लोग अपने-अपने अहं का दिखावा करते हैं परन्तु सच्चाई तो कुछ और ही होती है। मुझे प्रसिद्ध गीतकार समीर साहब की साफगोई बहुत पसंद है। एक मंच पर उन्होंने कहा था कि 'मेरी धर्मपत्नी मेरी सबसे बड़ी आलोचक है।' निश्चित रूप से मुझे ऐसे लोग बहुत पसंद हैं। इसी तरह मेरे एक पड़ोसी श्री आश्रय दास से जब मैंने उनकी राय जाननी चाही तो उनका जवाब था 'विनोद भाई! आप दौ सौ प्रतिशत सही हैं। वह तो मुझे पक्का रामध्यान समझती हैं। ऑफिस में मेरा अपना सम्मान है, मेरी अपनी प्रतिष्ठा है, न कोई सम्मान करे कोई बात नहीं वह मैं अपना सम्मान खुद ही कर लेता हूँ लेकिन घर में तो पत्नी मुझे बुद्धू ही समझती है।' क्योंकि उनकी पत्नी का सख्त आदेश रहता है कि ऑफिस से छूटते ही बिना इधर-ऊधर देखे, सब्जी लेकर सीधे घर आ जाऊँ। बताइये भला यह भी कोई बात हुई। इसके आगे उन्होंने किसी का शेर अर्ज किया-

'तुम्हारे हुस्न का हुक्का तो कब का बुझ चुका
वो हम हैं जो गुड़गुड़ाये जा रहे हैं।'

इतनी रायशुमारी के आधार पर कहा जा सकता है कि पति बाहर कितना भी बड़ा सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्ति हो घर पर वह पत्नी की नजर में सिर्फ एक 'बेचारा पति' ही है। पति का अपना पता पत्नी के पते के अलावा कुछ भी नहीं होता। इस सर्वे में बहुत से लोग अपनी राय इस लिए नहीं दे पाए कि कहीं उनकी धर्मपत्नी नाराज न हो जाएं और घर पर उनका राशन पानी बंद हो जाए। कभी-कभी तो पत्नी नाराज हो जाती है, तो बच्चे स्वतः ही नाराज हो जाते हैं। इसलिए घर के बाहर शत्रु से जंग तो आसानी से जीती जा सकती है, लेकिन घर में तो मधुर रिश्ता बनाये रखने के लिए जीना पड़ता है। यानि कि असली योद्धा वही होता है जो घर में बिना लड़े जीता रहे। मेरे प्रति आप की सहानुभूति बनी रहे और मेरी सहानुभूति तो आप के साथ जन्म से ही है।

-राजभाषा विभाग
डीडीयू मंडल

बसमतिया

- रवि भूषण

दोपहर अपने ढलान की ओर अग्रसर थी। गर्मी का मौसम था ही। अचानक आसमान में उत्तर-पश्चिम दिशा से काले बादलों का काफिला पूरब दिशा की ओर बढ़ने लगा। शीतल हवा उमस भरी गर्मी से शरीर को अपनी ठंडक से तृप्त करने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे शरीर किसी आत्मीय सुकून को प्राप्त कर रहा हो। बसमतिया को लगने लगा कि बारिश बहुत जल्द आने वाली है। इसलिए अपने हाथ की हँसुआ को घासों की जड़ों में जल्दी-जल्दी चलाने लगी ताकि बारिश आने से पहले अपनी गायों के लिए पर्याप्त मात्रा में चारा इकट्ठा कर सके। थोड़ी ही दूरी पर उसकी बगलगीर राधिका भी घास काट रही थी। उसने बसमतिया को आवाज लगाई, 'अरे बसमतिया। अब रहने दे। चल, जल्दी घर चलते हैं नही तो बारिश में घिर जाएंगे।' बसमतिया का मन थोड़ा और घास काट लेने को था। माँ जिस तरह अपने बच्चों को भूखा या आधा पेट भी रहना सहन नहीं कर सकती, उसी तरह बसमतिया भी अपनी गायों के लिए कम घास लेकर घर लौटना उचित नहीं समझ रही थी। उसने अपना हाथ और तेज चलाना शुरू कर दिया और घास को जितना अधिक हो सके, उतना काटने का प्रयास करने लगी।

उधर राधिका अपने घास का गट्ठर बना कर चलने को तैयार थी। औपचारिकतावश उसने एक बार फिर बसमतिया को टोका,

'अब कितना घास काटोगी? हो तो गया। कल तो फिर काटना ही है। कल काट लेना।' बसमतिया घास काटते हुए बोली, 'तुम चलो। मैं आ रही हूँ। थोड़ा सा और काट लेती हूँ।' राधिका अपना गट्ठर बसमतिया की सहायता से उठवा कर घर को जाने लगी। उसके जाने के कुछ देर बाद बसमतिया पूरी तरह आश्वस्त हो गई कि गायें इतना चारा में आराम से खा लेंगी। मचान पर बैठे घूरल चाचा को आवाज लगाई, 'चाचा जरा आइए। गट्ठर उठा दीजिए। घूरल चाचा अपनी लाठी लिए हुए बसमतिया के पास आए और गट्ठर को उठवा दिये। बसमतिया भी घर चल पड़ी।'

बसमतिया का परिवार छोटा किन्तु संस्कार प्रिय था। उसके परिवार में तीन बेटे और दो बेटियां थी। बड़ा बेटा दसवीं में फेल हो गया तो उसने पढ़ाई छोड़ दी और मेहनत मजदूरी करके घर गृहस्थी में हाथ बंटाने लगा। दो बेटे और एक बेटी स्कूल जाते थे। छोटकी अभी बहुत छोटी थी। खैर किसी तरह हँसी खुशी परिवार का गुजर बसर हो रहा था। जिंदगी बहुत सुखद तो नहीं लेकिन ग्रामीण परिवेश में उतनी कष्टमय भी नहीं थी। बस एक ही चिन्ता रहती थी कि बेटे का ब्याह अब कर दिया जाय और एक अच्छी बहू घर में लाकर रख दे जिससे उसके परिवार में भी खुशियाँ आ सके और दादी बनकर अपने पोते-पोती को गोद में बिठा कर खेत बधार, मुहल्ला घुमा सके। संयोग से बसमतिया के भैया रोहन के लिए एक रिश्ता भी लेकर आ गए। वह बोले- 'अरे बहिन! बहुत बढ़िया लड़की है। कामकाजी, घरेलू और सब काम में माहिर। तुमको बहुत सुखी रखेगी।'

बसमतिया भी अपने भैया द्वारा लाए गए प्रस्ताव को मंजूर कर ली और अपने बेटे रोहन की शादी के लिए हामी भर दी। पंडित जी से शादी का मुहूर्त निकलवा लिया गया। बैसाख में दिन रखा गया। गरीब आदमी के लिए शादी का दिन गर्मी के मौसम में ही अनुकूल रहता है क्योंकि एक तो आने वाले रिश्तेदारों के लिए अलग से ओढ़ना/ बिछौना की व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है कहीं भी आंगन में, द्वार पर, छत पर सो जाते हैं तथा दूसरे, कि सभी जरूरत की चीजें थोड़ी सस्ती मिलती हैं।

बसमतिया के पास तीन महीने का समय था। गरीब परिवार के लिए यह विडम्बना ही होती है कि किसी भी विशेष कार्यक्रम या प्रयोजन के लिए पैसे-कौड़ी का जुगाड़ करना पड़ता है। घर या बैंक में रखा तो नहीं है कि जब चाहा काम कर लिया। इसके लिए उन्हें अपनी आमदनी, घर के गहने और साहूकारों के मुँह तक ताकने पड़ते हैं। बसमतिया के सामने भी यही समस्या थी। खैर, बेटे की शादी अच्छे से हो जाए, यही सब सोचते-सोचते दिन बीतने लगे। उधर रोहन के मन में भी विवाह को लेकर सुखद कल्पनाएँ परवान चढ़ रही थीं। वह सुखद पलों और परिवार के बीच अपनी विचार मीमांसा को स्थापित करने के बारे में भी सोचता रहता था। वह अपने भाई-बहनों को कैसे रखेगा, उनसे संबंध और लगाव के बारे में भी विचार करता। विवाह की तारीख वाला महीना आ गया। सभी तैयारियां हो चुकी थीं। एक सप्ताह तक घर में विवाह का उत्सव चलता रहा। हित, कुटुम्ब, रिश्तेदार सभी शादी में अपना भरसक योगदान दिए। बसमतिया का चेहरा बेटे और बहू को देखकर प्रफ्फुलित था। उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। गर्व से गाँव की औरतों से कहती, 'बेटे का बियाह धूम धाम से किया। बहू भी बहुत अच्छी मिली है। मैं बहुत खुश हूँ।' हो भी क्यों न, उसका एक अरमान तो पूरा हुआ था। औरतें भी बसमतिया की हाँ में हाँ मिला देती। सच भी है कि बेटे की शादी में सबसे ज्यादा खुश बेटे की माँ होती है। सास कहलाने का हक जो मिल जाता है।

परिवार के दिन हँसते-खेलते बीतने लगे। बहू भी घर-परिवार का ख्याल बहुत ही अच्छी तरह से रखती थी। लेकिन कहते हैं न कि समय सदा एक सा नहीं रहता है। बसमतिया के घर में भी यही परिस्थिति आ गई। हालात बदलने लगे। बेटे बहू की मानसिकता भी बदलती चली गईं। रोहन का मन अब काम में नहीं लगता था। नई पत्नी से लगाव हो या काम न करने की मानसिकता, बसमतिया के लिए समझना थोड़ा मुश्किल था। रोहन कभी घर पर ही रह जाता तो कभी बाहर बगीचे में ताश खेलने वालों के साथ उसका समय बीतता। बसमतिया उसे समझाती, 'काम धाम नहीं करोगे तो घर कैसे चलेगा? तुम्हारी पत्नी का भी तो खर्चा है। उसका भी तो ख्याल करो।' रोहन के मन में कोई विचार नहीं बदलता। वह सुनकर भी अनसुना कर देता। उसकी पत्नी भी अब घर के काम में अपनी रूचि नहीं दिखाती थी। कभी खाना बनाती, कभी देर से बनाती, कभी कोई शारीरिक कष्ट का हवाला देकर नहीं बनाती। तब उस हालत में बेचारी बसमतिया को ही चूल्हा फूँकना पड़ता। तब सभी को खाना मिलता। धीरे-धीरे यह रोज की बात हो गई। घर में कलह बढ़ने लगा। रोहन की तरफ से उसकी पत्नी भी झगड़े में उसका साथ देने लगी। बेचारी बसमतिया खटिया के पौवे के सहारे बैठ माथे पर हाथ रखकर सिसकियां लेने लगी कि क्या सोचा था, क्या हो रहा है।

एक दिन रोहन अपनी पत्नी के साथ बसमतिया के कमरे में गया और बोला, 'अब इसका मन यहाँ नहीं लग रहा है। यह शहर में रहना चाहती है। हमलोग कल सबेरे शहर चले जाएगें। वहीं पर काम धंधा करेंगे।' बसमतिया को जैसे सांप सूंघ गया। उसका कलेजा धक-धक करने लगा। उसने सोचा भी नहीं था कि उसकी कोख से निकला बेटा अपनी पत्नी के कहने पर मेरे कलेजे से अलग हो जाएगा। बसमतिया अपने भीतर उमड़ रही वेदनाओं को भरसक दबाने की कोशिश की। कहा, 'जैसा तुम लोग चाहो, करो। जहाँ भी रहो, खुश रहो।' उसने लोटा उठाया चापाकल पर जाकर मुँह धोने के बहाने अपने आँसुओं को धोने का प्रयास करने लगी।

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग/डीडीयू

रामभरोसे

दिनेश चंद्र

एक आदमी था। रामभरोसे था। साधारण सा, बहुत दुबला, पतला भी नहीं था। लेकिन आज के जमाने के हिसाब से उलट बेमिसाल था। उसकी अपनी ही ऑफिस, ऑफिस नहीं होती थी, बल्कि पूरी बिल्डिंग ही उसकी अपनी ऑफिस थी। राजभाषा विभाग के अगल-बगल वाले स्थित अनुभाग के सहकर्मी भी उसकी उपस्थिति मात्र से खुश हो जाते। समय पर ऑफिस आने वाला कोई भी कर्मचारी जिसका पहला सामना उससे होता, उसको देखते ही भोजपुरी में बोल उठता, 'का हो रामभरोस, आ गईला'। उसको देखने वाले को यह लगता था कि वह कहीं ऑफिस के लिए लेट तो नहीं हो गया। ऑफिस में जब सबकी उपस्थिति हो जाती तो सभी रामभरोसे हो जाते।

ऑफिस के खुलने का समय भले साढ़े नौ बजे था। लेकिन रामभरोसे के लिए एक घण्टा पहले ऑफिस पहुँचना जरूरी था। रोजाना अल-सुबह नहा धो कर, जो मिला नाश्ता किया, नहीं किया, साइकिल से ऑफिस आ जाता। मानो वह सफाईकर्मियों का जमादार होता था। तुरन्त सबसे पहले सफाई कर्मी को पकड़ता, चैम्बर, ऑफिस के साथ-साथ लाइब्रेरी में झाड़ू लगवाता। इस दौरान वह सफाईकर्मी उसका रिश्तेदार जैसा होता। उससे हालचाल करता। उनका दुःख सुनता, अपनी सुनाता। एक तरफ झाड़ू चलती तो दूसरी तरफ रामभरोस मेज, कुर्सी पोछता और मेज पर पड़ी फाइलों के धूल झाड़ता, बाहर से आलमारी साफ करता। सब कुछ चमका के रखता। एक नजर ऊपर नीचे घुमा के देख लेता कि कहीं कोई कागज तो नहीं गिरा है। जब सफाई से इत्मीनान हो लेता तो सबके पानी की बोतल उठाये नल पर जाता, अपना हाथ-मुँह धोता, बोतल में पानी भरता और गलियारे में सफाईकर्मियों को सब ठीक से साफ करने और कूड़ा जगह पर फेंक देने के लिए कहते हुए आता। सब उसकी बात का कत्तई बुरा नहीं मानते और अच्छा भैय्या कह कर हँस देते।

इन सबके बावजूद भी ऑफिस खुलने और सबके समय पर आने में अभी भी आधा घण्टा शेष होता, तब रामभरोस पास के चाय पान की अदालत में जाता और मुँह में पान दबाए किसी के आने से पहले दफ्तर में हाजिर हो जाता। भले ही आया हुआ कर्मचारी लेट होता था लेकिन सवाल रामभरोस से ही भोजपुरी में करता, 'का हो रामभरोस, आ गइला'। फिर दोनो हँस देते। रामभरोस के अभिवादन का भी तरीका नायाब था। सीधा खड़ा होता, फिर आधा झुकता, सीने पर अपना दांया हाथ रखता, सिर झुकाता और धीरे से बोलता, 'प्रणाम सर'। फिर से दोनो लोग हँस पड़ते। सुबह-सुबह का कार्यालयी माहौल गुलजार हो जाता। जिस किसी दिन वह छुट्टी में होता, या बिना सूचना के गायब होता तो साहब सहित ऑफिस वालों को लगता कि उनकी खुद की बीबी मायके चली गयी हो। रामभरोस था तो राजभाषा विभाग के रोजमर्रा का कार्य शुरू हो जाता था। अगल-बगल के अनुभाग वाले कर्मचारी तो छोड़िए उस फ्लोर के अधिकारी तक रामभरोस को खोजते। उनके अपने प्यून के नहीं रहने पर रामभरोस ही होते। कमाल का मिलनसार, सहयोगी और सबका शुभचिंतक आदमी था। कुल के बाद भी अपने ऑफिस के काम का हर्जा नहीं होने देता था। कभी छुट्टी में जाता तो किसी न किसी को बोल के जाता, 'तनी हमार ऑफिस देख लिहा'। और कोई न कोई प्यून देख भी लेता था। यह उसका अपना व्यवहार था।

ऑफिस में कागज पत्तर, फाइल, डिक्शनरी, किताब, कप-प्लेट, गिलास, कम्प्यूटर, प्रिंटर सब साफ हो, अपनी जगह पर हो और दुरुस्त रहे, इसका पूरा पूरा ध्यान रखता था। ध्यान भी इतना कि जितना गृहिणी अपने घर का रखे। विनोद बाबू तो रोज उसको कहते कि 'तू त पिछला जनम में कुशल गृहिणी रहल'। राजभाषा की निकलने वाली हर चिट्ठी लगभग सब जगह बंटती थी। पावती में सब हुई कि नहीं, इसका पूरा ध्यान रखा जाता। विभाग से जो पत्र-परिपत्र जारी होते, रेल के सभी ब्रांचों और कभी कभी तो उनको सभी अनुभागों को भी देना होता था। राजभाषा विभाग से ऐसे पत्र लगभग दो तीन दिन पर जारी होते ही रहते थे और उन्हें रिसीव कराना जरूरी होता। ऐसे पत्र लोकल स्तर पर तीस से ज्यादा कार्यालयों में ले जाना होता। बड़ी भाग दौड़ करनी होती थी।

रामभरोस के लिए तो चिट्ठियों का पूरा झोला होता। उन पत्रों में मंडल में स्थित सभी स्टेशन, कार्यालय, अनुभाग के पत्र के अलावा मुख्यालय के लगभग सत्तर से अस्सी से ज्यादा पत्र होते। जब वह पत्रों को रिसीव कराकर लौटता और ऐसे बाबुओं का किस्सा अपने अंदाज में सुनाता और हँसता, तो विभाग के सभी बाबू हँस देते। उन विभाग के बाबुओं का काम बढ़ जाता। कारण उन पत्रों में सर्कुलर के अलावा कुछ प्रोफार्मा होता, जिनमें से कुछ के मासिक तो कुछ के त्रैमासिक हिंदी के आंकड़े देने होते थे। पत्रों के जबाब देने में बाबू की अकड़ उसके साहब से ज्यादा होती

थी। तब मैन्युअली कागज पर उत्तर प्रत्युत्तर का जमाना था। अब तो सारी चिट्ठी पत्री ई-ऑफिस में होती है। पहले तब ऊ-ऑफिस में होती थी। रामभरोस का बाहर ऑफिसों में दिखाई देना, आना-जाना, चलता-फिरता राजभाषा का प्रयोग प्रसार था।

गाँव का मध्यमवर्गीय तो नहीं बल्कि कह लें कि मेहनत मजदूरी कर खाते कमाते घर का गवई व्यक्ति रामभरोस एक मात्र कमाऊ पुत्र था। जिसकी नौकरी भी रेल में गैंगमैन में रहे पिता की मृत्य पर मिली अनुकम्पा की क्लास फोर की नौकरी थी। संयुक्त भाईयों का बड़ा परिवार, मेहनत मजूरी करखाने वाले घर के लोग रामभरोसे पर धीरे-धीरे आश्रित होते चले गए। मसलन घर, रिश्तेदारी में शादी-ब्याह, जन्म-मृत्यु के कामों के अलावा सब भाईयों के साढूआन, ससुराल, समधियान, सारी रिश्तेदारी का ठेका इसी के जिम्मे था। यहां तक कि गाय के अलावा नसलदार कुत्ता भी पाल रखा था। लिहाजा, इसकी आय से ज्यादा खर्चे थे। उसकी अपनी ब्याहता के अतिरिक्त दो पुत्र और एक पुत्री की भी भारी जिम्मेदारी थी। ऊपर से संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी के चलते अपने बच्चों का ठीक से पढ़ाई लिखाई देखभाल नहीं कर सका। बड़े होके बच्चे दूर शहर दो पैसे कमाने क्या लगे उन सब का और यहां तक कि उम्र में छोटी बेटी का भी जल्दी से शादी-ब्याह कर के खाली हो गया। बच्चों के

बच्चे हो गए। माया मोह बढ़ा। लेकिन साथ साथ आर्थिक तंगी भी बढ़ी, परन्तु घर मे कोई काम या व्यवहार कभी रुका नहीं। एक आदमी कैसे इतना करता था इसका सरोकार पत्नी को छोड़ और किसी को था भी कि नहीं। यह तो वही जाने। लेकिन दिन पर दिन उसके गिरते स्वास्थ्य के साथ अंत मे आते आते शुगर जैसी बीमारी ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। आर्थिक तंगी और कुछ हथफेर के फेर ने उसे खोखला कर दिया था। हालाँकि इतने के बाद भी मानसिक रूप से मजबूत था।

रामभरोस को अपने साहब के अलावा सहकर्मियों के परिवार के बीबी-बच्चों के बाद उनके माँ-बाबूजी, रिश्तेदार तक पहचानते और व्यक्तिगत रूप से जानते थे। घरों में हाल चाल के बाद लोग रामभरोस का भी हालचाल पूछते थे। कारण सभी के घरों में होने वाले छोटे बड़े उत्सव का हिस्सा होता था। सबके दुःख में घर से लेकर अस्पताल तक सगा होने जैसा साथ निभाता। किसी की मृत्यु में तो घाट से लेकर तेरहवीं तक के सभी क्रिया कर्मो में उपस्थिति रहती थी। बच्चों के लिए तो रामभरोस अंकल है न, उसकी उपस्थिति का मतलब 'सब ठीक हो जाएगा' की गारंटी होती थी।

काल की अपनी नियति होती है। जन्म और मृत्यु का कोई मुहूर्त नहीं होता और न ही इसके आने-जाने की पदचाप ही सुनाई देती है। अगर मृत्यु को जीवन बकसना होता है तो उस शख्स को छू कर बकस जाती है। लेकिन जब आती है तो अक्ल काम करना बंद कर देता होगा, मष्तिष्क चेतना शून्य हो जाता होगा। कदम कहीं के कहीं पड़ रहे होते होंगे। मन अनिर्णय की स्थिति में होता होगा। दिन अंधेरा और रात्रि प्रकाशवान होती होगी। चित्त की गति विचित्र होगी। परन्तु जाने वाला वहां चला ही जाता है जहां उसे काल खींच के ले जाना चाहता होगा। ऐसा ही कुछ उसके साथ भी हुआ होगा। सप्ताहांत होने पर जिस रेल पर सवार होकर वह घर जाता था। जिस रेल लाइन को क्रॉस करके रोज ऑफिस आता जाता था। आखिरकार एक रोज ऐसा भी आया कि रेल का पहिया ही उसका कालचक्र बनी। कोई चित्कार भी नहीं सुन सका। उसके आस-पास एक्का दुक्का लोग, दो एक सिपाही, दरोगा, कुछ शुभचिंतक थे। परिवार के लोग रह रह कर रोने लगते फिर अगले ही क्षण काठ का कलेजा वाले पुलिस के निर्देश पर अगली कारवाई में जुट जाते। नगर, गाँव मे दुगार्पूजा की तैयारी जोरों पर थी। रेलकर्मी बोनस पाकर खरीदारी में जुटे थे। पोस्टमार्टम के लिए लाश जा चुकी थी। जितनी मुँह उतनी बातें जन्म ले रही थी। धर्मावती का धर्म टूट गया था। सात जन्म का भरोसा भी टूट गया। शेष बचे उसके लोग रह गए रामभरोसे।
अलविदा रामभरोस...!

पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
पूर्व मध्य रेल, डीडीयू

ताड़ीघाट का पुल

- शिव प्रसाद सिंह

ए बाबू बुलाते हैं... नदी के जल से रोही मछली की तरह मुँह निकालकर कमली बोली और बालों से टपकते हुए पानी को गालों से पोंछती हुई मुस्कुराई। कमली जब मुस्कुराती तो उसके औसत से अधिक छोटे-छोटे होठ रोही की तरह मुलायम गलफर की तरह खुल जाते, जिनके पीछे उसके सफेद-सफेद दाँत बहुत भले लगते। जरूर यह रोज इन्हें गंगा की अभ्रकनुमा चमकीली बालू से घण्टों रगड़ती होगी, तिलक सोचता। कमली साँवली थी, पर उसकी देह की चमक रोही की पीठ की तरह जल की पारदर्शी चादर के भीतर से झलका करती थी। तिलक न चाहते हुए भी पानी की धार से खिंच जाता था और उसकी आँखें कमली के मुँह गले के नीचे उभरी हुई चमकदार हड्डियों और उनके नीचे कसकर बाँधी काली पट्टी पर केन्द्रित हो जाती। कमली तब थोड़ी परेशान होती-उसकी आँखें तिलक की आँखों की राह रोककर खड़ी हो जातीं, एक हल्की सी टकराहट होती, साँवला रंग थोड़ा ललछौंहा होता और वह पानी में तुरन्त डुबकी मारती तो यों आवाज होती कि कोई अनजानी लहर चमककर बोल गयी, 'धत्'।

थोड़ी देर बाद जल से मुँह निकालकर कमली गम्भीर हो जाती, 'मैंने कहा न कि बाबू बुला रहे हैं।'

उसकी गम्भीरता से तिलक को न जाने क्यों गुस्सा आ जाता, 'तो क्या मैं तेरे बाबू का नौकर हूँ कि जब मन हुआ हुकुम दाग दिया कि चले आओ! हुँह, भाग यहाँ से और जाकर कह दे कि मैं नहीं आता।'

तिलक की बात पर कमली को गुस्सा बिल्कुल नहीं आता, वह सिर्फ हँसती रहती। मगर उसे हँसते देख तिलक गुस्से से उफन जाता। पास से कोई कंकड़ खींचकर वह उसकी ओर तेजी से फेंकता, मगर इसके पहले कि कंकड़ कमली के सिर पर गिरे, वह डुब्से गोता मारती और जल के भीतर ही भीतर घाट की ओर चल देती। बुज्जियों की एक कतार उसके जलीय मार्ग की सूचना देने के लिए सतह पर उभर जाती। तिलक बुदबुदाता और चुपचाप घाटी की ओर चल देता।

तिलक कगार पर बैठा है पिछले कई दिनों की बातें नीरस बादलों के झुण्ड की तरह सामने के क्षितिज पर जीम हुई हैं- आँच में झुलसी छाली की तरह। पर कौन जाने अभी पुरवा हवा का एक झोंका चले और सामने के छालीनुमा बादल गुमसकर साँवले हों और चिग्घाड़ते हाथियों की तरह अपनी सूँड हिलाते, झूमते हुए पूरे आसमान को घेर लें। पर ऐसा कुछ नहीं होता। बादलों की सेंध से नीला आसमान उसी तरह झाँकता रहता और तिलक के भरे-भरे मन को थोड़ी राहत मिल जाती।

ताड़ीघाट नाम जिसने भी रखा हो, काफी सोचकर रखा था। क्योंकि गंगा के कगार पर पूरब मुँह करके खड़े हों, तो दाहिनी तरफ आपको ताड़ के पेड़ों की एक पूरी कतार दिखाई पड़ेगी, जिसे लगता है किसी ने हरी जमीन पर सीधे रूल से हाशिया खींचकर बिठा दिया है। एक तरतीब से बराबर दूरी पर जमीन की छोटी-बड़ी इच्छाएँ मानो सिर उठा-उठाकर आसमान से बात कर रही हों। बायीं ओर गंगा पूरे कगार को अपने इठलाते शरीर से रोमांचित करती हुई खिलखिलाती रहती है जिसके दूधिया वक्ष में इक्के-दुक्के पेड़ों की छाया शीर्षासन करती प्रतीत होती है। सामने गाजीपुर का शहर है उस पार, जहाँ घाटों पर माल और मुसाफिरों से लदी नावें अपने नुकीले मुँह को लहरों के थपेड़ों में यो हिलाती रहती है जैसे अनगिनत सूँस धारा में कलाबाजियाँ खेल रहे हैं। अब इन दोनों घाटों को जोड़ने के लिए पीपे का पुल बिठा दिया गया है जिसके काले-काले पुश्ते पानी पर जमनापारी भैंसों की तरह तैरते रहते हैं और उनकी पीठ से करीब दो गज चौड़ी सड़क उस भूरे अजगर की तरह पड़ी रहती है जो गरमी की वजह से बहुत परेशान हो जाता है और जिसकी गरम-गरम तपती साँसें पानी की सतह पर बीन की गों-गों आवाज का जाल फैलाती हैं और उसके मुँह से निकला ढेर-सा झाग किनारों पर वैशाखी धान और पूजा के लिए निवेदित फूलों को अपनी गोद में भरे रूई के गाले की तरह मटक-मटककर सिर हिलाया करता है।

अभी-अभी दिलदार नगर से आयी पैसेंजर रूकी है जिससे उतरकर तरह-तरह चेहरे और पोशाकों वाले लोग तेजी से घाट की ओर ढुलक रहे हैं। दशहरे के दिन से, जब गंगा का पानी बढ़ने लगता है, पुल तोड़ दिया जाता है, तब यात्रियों को उस पार पहुँचाने का काम केवल स्टीमर और नावें करने लगती है।

सामने स्टीमर आदमियों से भर चुका है। बहुतेरे आदमी घाट पर खड़े अब भी चिल्ला रहे हैं जिन्हें अपनी योग्यता और नावों की विशेषता समझाते हुए मल्लाह अपनी ओर बुलाने की कोशिश कर रहे है। यह सभी शोर-शराबा, धमा-चौकड़ी, उठा-धापी का आलम एक लम्हें में अपनी अंतिम साँसें तोड़ देगा। तब एक अजीब तरह की खामोशी सब जगह छा जायेगी- एक ऐसी खामोशी कि जिससे बचने की जितनी कोशिश करो। उतनी ही तेज आवाज में अपने होने का इजहार करती रहती है। कभी अनजानी लहरों की सरसराहट में, कभी सूँस और दूसरे जलजीवों की लम्बी साँसों की रफ्तार में, कभी अचानक बिना सूचना दिये

खड़खड़ा उठने वाले भुतहे पीपल के पन्नों में जैसे यह खामोशी अपना बसेरा ढूँढ रही हो...।

तिलक चुपचाप यह सब कुछ देख रहा है अथवा देखने का अभिनय कर रहा है, क्योंकि वह खुद नहीं जानता कि जब वह इन्हें देखता होता है तो अचानक उसकी आँखों में कहाँ की शक्ति आ जाती है कि वे सामने फैले विशाल परदे को फाड़कर किसी ऐसे अदृश्य नेपथ्य में खो जाती हैं, जहाँ अजीब तरह के मुखोश लगाये, दाढ़ी-मूँछ के नकली बाल लगाये, तरह-तरह के लोग बड़ी संजीदगी से कुछ बातें कर रहे हैं, जिनके अधरों का कम्पन तो वह देख पाता है पर बातें साफ नहीं सुनाई पड़ती।

आज कमली नहीं आयी है- आज उसके बाप ने उसे बुलाने को नहीं भेजा। अब शायद कभी न भेजे या पता नहीं भेज ही दे, कौन जाने? इन लोगों की माया समझ में नहीं आती। तब तिलक को लगता है कि कमली को जरूर आना चाहिए। मगर कुछ देर हो गयी, शायद नहीं ही आये। कमली का साँवला मुख नदी की धार पर तैरता है- लहरें टेढ़ी होती है। और उसका मुख जैसे ईथर का गोला हो, जो लहरों की तरह ही उनके हर मोड़ पर मुड़ता हुआ, फैलता-फैलता अदृश्य हो जाता है। तभी एक दूसरी लहर आती है, हर लहर से मोटी, हर लहर से ज्यादा जिन्दगी वाली। विसू पण्डा- तिलक के पिताजी जैसे उनके गोरे-चिट्टे छरहरे बदन में इस तरह का मुख किसी ने गलती से बैठा दिया था। कितना सीधा मुँह है यह, बस सिर्फ दो-चार रेखाएँ उसके सारे नक्श को बाँध ले सकती है। नाक के दोनों तरफ ठुड्डी की सीमा बनाती दो तिरछी रेखाए जो उनके मन के अगाध वात्सल्य को सूचित करती थीं, और दो रेखाएँ भौंहों के ऊपर जिनका अर्थ तिलक ठीक से सोच नहीं पाता, क्योंकि वे अपने अस्तित्व की सूचना तब देती थीं जब घाट से कमली के बाप का कोई सन्देश मिलता। विसू महराज तर्जनी को मोड़कर त्रिपुटी में अड़ा देते, आँखें मुँदते और तभी ये कुंचित तिर्यक रेखाएँ ललाट पर उभर आती। इन रेखाओं के उभरने से सिर्फ विसू महराज ही नहीं परेशान होते तिलक भी परेशान हो जाता, क्योंकि उसे लगता कि पिताजी का मुँह उलट गया है, ललाट सिकुड़ गया है-ठुड्डी की तरह, और ठुड्डी बड़ी हो गयी है-उनके चौड़े ललाट की तरह।

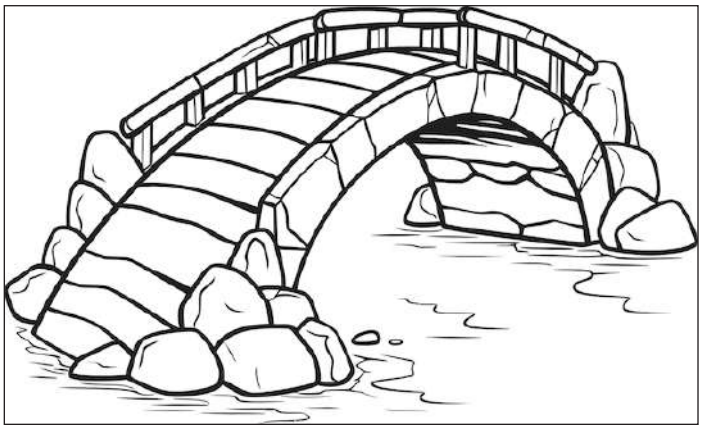

विसू महराज तुरन्त अपनी लाठी लेते, ललछौंही नुकीली गाँठों वाली जिसे मिजार्पुर के किसी जजमान ने दिया था, जिससे कपड़े का एक पतला तेल-चक्का कलाई की सफेद चूड़ी की तरह झूलता रहता, जिसके सहारे वह लाठी रोज सुबह-शाम एक छटाँक तेल पी जाती।

'कहाँ चले इत्ती रात को?' दरवाजे से माँ टोकती।

'घाट पर।'

'अरे, इतनी रात गये कौन-से व्यापारी आ गये....!' माँ ऐसे कहतीं मानो वह व्यापारियों के आने-जाने के पूरे विवरण से वाकिफ हो।

लट्ठे, बल्लियाँ, कोरइयाँ लादे आधी रात गये गाड़ी हाँक दी, सूरज उगते-उगते गाँव हाजिर। लू-लपट से जान बच जाती है।'

'हूँ!' माँ कहतीं, पर उनकी मुख-मुद्रा पिताजी की इस कर्त्तव्यपरायणता से जरा भी प्रसन्न नहीं मालूम होती।

'मुन्ना!' चलते वक्त विसू महराज तिलक के कन्धे को थपथपाते। तिलक तिरछी आँखों से उनके चेहरे को देखता जो अब बिलकुल सीधा मालूम होता। स्नेह और वात्सल्य वाली वे ही रेखाएँ उभरी होतीं-नाक के पास !

'तुम सुबह फीस के लिए कह रहे थे न, ये लो रुपए। काम से कुछ अधिक हैं, कुछ खा-पी लेना। अब इम्तहान आ रहा है बेटे, जरा मन लगाकर पढ़ना -हाँ....।'

और तिलक रुपए लेकर यों सिकुड़ जाता जैसे वह नन्हा बच्चा हो, जो पिताजी की गोद में चिपक जाने के लिए आतुर हो गया है।

'ए....ए...बाबू....' तिलक आवाज सुनकर ही जान जाता है कि कमली है, पर वह उसकी ओर नहीं देखना चाहता। मन मारे चुपचाप बालू को मुट्ठी में भरकर उठाता है और उसे अनजाने अँगुलियों के बीच से बिखर जाने देता है।

'ए...सुनते नहीं, बाबू बुला रहे हैं।'

कमली पास आ जाती है। उसके शरीर से खरबूजे-जैसी महक आती है। तिलक न चाहते हुए भी धीरे से कनखी ताककर उसे देखता है। उसका साँवला गोल मुख डूबते सूरज की रोशनी में सिन्दूरी लगता है। उसकी हलकी-सी नुकीली ठुड्डी जैसे गालों में छिप जाने की कोशिश करती है। उसके ढेर सारे काले-काले केश हवा से टकरा-टकराकर उसके मुख पर काली जाली बुनने लगते हैं। तिलक देखता है, और देखता रहता है। अचानक वह जमीन पर हाथ का बल देकर झटके से उठता है और कमली को भुजाओं में बाँध लेता है। वैशाखी धान की करवाइन गन्ध से जैसे उनकी नाक पूरी तरह भर जाती है और फिर गन्ध का एक बड़ा-सा डला फिसलकर फेफड़े में उतर जाता है। एक अजीब तरह की आत्मसात कर लेने वाली गन्ध से उसकी

तनी नसें, जलती हुई आँखें, धड़कती कनपटें शान्त हो जाती हैं।

'हिश, कोई आ जावेगा!....' कमली उसकी बाँहों की गुँजलक को अन्यमनस्क भाव से छुड़ाकर अलग हो जाती है। फिर दोनों चुपचाप घाट की ओर चल पड़ते हैं।

तिलक जब घाट पर पहुँचा तो अँधेरा गहरा हो चुका था। नदी के किनारे दो-तीन जगह उपले के अहरे जल रहे थे, जिन पर लकड़ियाँ खरीदने के लिए आये हुए किसान बाटियाँ बना रहे थे। ऊपर कगार पर दो बैलगाड़ियाँ खड़ी थीं- सिपाये के सहारे-जिनमें जुए के नीचे लटके बोरे के झोले में मुँह हिला-हिलाकर बैल भूसा खा रहे थे। उनके गले की घण्टियाँ बीच-बीच सन्नाटे को चीरकर टुनटुना उठती थीं।

कगार पर फूस की एक झोपड़ी है तीन खानों वाली, जिनमें से एक में खाना पकता है, एक में सबसे भीतर कमली सोती है, एक में उसके बाप गोलू की चारपाई है जिसके पास ही कभी-कभी जब विसू महराज आते थे तो उनके लिए भी एक चारपाई डाल दी जाती थी। तिलक झोंपड़ी के पास पहुँचकर ठिठक गया। भीतर गोलू दो आदमियों से फुसफुसा-फुस-फुसाकर कुछ कह रहा था। पैरों की आहट से उनके कान चौंकन्ने हो गए। सामने तिलक को देखा तो गोलू बेहद प्रसन्नता दिखाते हुए ललककर उठा।

'आ जाओ, तिलक भैया, बाहर काहे खड़े हो!' फिर उसने पास के आदमियों की ओर आँखें घुमाकर गरदन को थोड़ा झटका दिया और वे चुपचाप टाँग के झटके से जूतों को पैरों में डालते पास टेकी लाठियों को समेटते झोंपड़ी के बाहर चले गये।

तिलक चारपाई पर बैठ गया। उसने अजीब तरह से झोंपड़ी में इधर-उधर, गालू के चेहरे पर, देखा और फिर एक क्षण के लिए ठुड्डी को छाती में अड़ाकर खामोश पड़ा रहा। उसके मन के किसी कोने में कहीं नागफनी का काँटा करक उठता था। वह उसे निकाल फेंकने के लिए बुरी तरह उकता रहा था, 'ये लोग कौन थे, गोलू चाचा? लकड़ी खरीदने वाले किसान तो नहीं लगते थे ये।'

गोलू एक क्षण तिलक की आँखों में देखता रहा। नदी की धार काफी तेज थी। कूदने के पहले लहरों की भयंकरता देखता हुआ-सा गोलू एक क्षण चुप ही रहा, फिर बोला, 'अब जब बात खुल ही गयी है तिलक भैया, तो साफ-साफ कर लेना ही ठीक है। कई दिनों से मैं ये सब बातें आपसे करना चाहता था, लेकिन जाने क्यों हिम्मत न पड़ी। कई दफे कमली को भेजा। आप नहीं आये तो बुरा लगा, पर बाद में खुशी भी हुई कि यह सब कहने की तकलीफ से बच गया। पर अब तो यह सुनना ही पड़ेगा, क्योंकि यह काम-धाम ही ऐसा है कि इसमें ढील हुई तो करा कराया सब चौपट हो जायेगा। विसू महराज थे तो सब ठीक था। अब जब वे नहीं रहे तो सब कुछ आपको करना है-चाहें तो उसे चलायें, चाहें तो बन्द कर दें। मगर हाँ, जो भी करिए, सोच लीजिए। दुनिया में धन से बड़ी कोई चीज नहीं है। वह है तो आप शरीफ हैं, ईमानदार हैं, इज्जत वाले हैं, बुद्धिमान हैं, दो आदमी आस-पास बैठते, हाँ में हाँ भरते हैं, मुँह जोहते हैं, धरम-करम सब तो उसी पर है...।'

तिलक को गोलू की बातें अजब लग रही थीं। लम्बी-लम्बी मूँछों से उसके मुँह का आधा से अधिक हिस्सा ढँका रहता था। तिलक को इत्मीनान था कि लकड़ी, बल्ले-बल्लियाँ, कड़ियाँ, धरन तथा मन-सेर के वजन और बहुत हुआ तो दो-चार गन्दी-भद्दी गालियों के अलावा इस मुँह से और कुछ बात नहीं निकल सकती, पर उसे यह देखकर बड़ा अचम्भा हुआ कि गोलू बड़ी बारीक-बारीक बातें कर लेता है। वह इसी अचम्भे में चुपचाप गोलू की ओर ताकता रह गया। थोड़ी श्रद्धा भी हुई गोलू के लिए।

'आपको शायद बड़ा धक्का लगे यह सुनकर तिलक भैया कि....' गोलू थोड़ा हकलाया, 'विसू महराज का यह अड्डा सिर्फ लकड़ी के लेन-देन पर कायम नहीं है। असली रोजगार कुछ और है। लकड़ी की टाल तो सिर्फ बहाना है-एक परदा, बस ! असली रोजगार तो अफीम और गाँजे का लुका-छिपा व्यापार है।'

तिलक को लगा कि उसके मन की नीली दीवार पर टँगी कोई तस्वीर झटके से नीचे गिर पड़ी, मालाए उलझकर टूट गयीं, शीशा चाक-चाक हो गया और तरह-तरह के आकार के तीखे टुकड़े उसके फेफड़े में, आँतों में, हृदय में धँस गये। वह एकदम गुरचकर रह गया।

'गोलू-', उसकी आँखें में ढेर-सा खून बहने के लिए अकुला उठा जैसे।

'मैं जानता था कि यह आपको बुरा लगेगा। विसू महराज खुद कहा करते थे कि तिलक को यह सब मालूम न हो। वे बड़ा डरते थे अपने मन में। आपकी माताजी को भी जब यह सब मालूम हुआ तो विसू महराज कई दिन तक परेशान रहे। हालाँकि आपकी माताजी ने कभी उनसे कुछ कहा नहीं, पर महराज को शक था कि वे जान गयी हैं। लेकिन भैया, यह सब उतना बुरा नहीं है जितना आप सोचते है। बुरा है बेशक, मगर करें भी क्या? आप तो पढ़े-लिखे आदमी हो। नौकरी खोजने के लिए क्या कुछ नहीं किया आपने, क्या मुझे मालूम नहीं? माताजी ने हमेशा आपको घाट पर आने से रोका। मगर जब कोई दूसरा रास्ता नहीं मिला तो वे भी मन मार कर बैठ गयीं। है कि नहीं? बदमाश, घमण्डी, घूसखोर लोगों के सामने एक इज्जतदार का जलील होना अच्छा है या यह सब कुछ करना जिसमें किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना है, आरजू-मिन्नत नहीं करनी है? इसमें सरकार को करना भी कुछ नहीं है, गोलू के सिर पर हाथ रख देना है, बस। करूँगा तो मैं सब कुछ। विसू महराज का

अफसरों से बड़ा हेल-मेल था। वो लोग भी आपसे आस लगाये हैं। कभी-कभी मिलते-जुलते रहने से बड़ा काम हो जाता है। शरीफ लोगों पर कोई शक भी नहीं करता....।'

तिलक कुछ न बोला, चुप बैठा रहा। फिर धीरे से उठा और अँधेरे में गुम हो गया। वह पुल के पास कगार पर बैठ गया। नदी में लहरों का उठना धीरे-धीरे बन्द हो रहा था। एक निष्क्रिय थकावट का अचेतन भाव किनारे पर टकरा-टकराकर गाज उगल रहा था। तिलक को लगा कि जैसे उसके सारे जिस्म को बालू का अजदहा धीरे-धीरे निगल रहा है। उसे पिताजी का वह चेहरा याद आया जो उस रात बिल्कुल उल्टा नजर आ रहा था। ललाट सिकुड़ गया था और ठुड्डी का हिस्सा फैलकर सपाट हो गया। माँ की वे शंकाभरी आँखें, पिताजी की ग्लानि और गुस्से से भरी टेढ़ी भौंहें, एक-एक करके उसके मन में जलती उल्का से खिंची तसवीरों की तरह उभरने लगीं। उँगलियाँ पसीने से चिपचिपा उठीं। तिलक मुँह को गीली हथेली में दबाकर साँसों को शान्त करने की असफल कोशिश किये जा रहा था, तभी धान की दूधिया बालों की गन्ध उसके जिस्म को छू गयी।

'तिलक बाबू...! कमली उसके पास सटकर बैठ गयी। तिलक थोड़ा खिसककर बैठ गया।

'क्यों, क्या मेरे बदन में ऐसी छूत भर गयी?' कमली मुँह नीचे किये ही बोली, 'बेबसी में आदमी जो काम करता है उससे मन मलिन नहीं हो जाता तिलक बाबू।'

'तुम्हें बेबसी किस बात की हैं? गुण्डे-बदमाशों के साथ सैर-सपाटा करो और अफीम-गाँजे के रूपयों से मौज उड़ाओं ! बेबसी काहे की?'

कमली अधमरे साँप की तरह लहर कर खड़ी हो गयी। 'तुमने शायद यह नहीं सुना है तिलक महराज, कि अफीम खाने से नशा भी होता है-और यदि आदमी ज्यादा खा ले तो मर भी जाता है....।' वह एक झटके से मुड़कर दौड़ती हुई अँधेरे में गुम हो गयी।

'जा मर !' तिलक बुदबुदाया। उसने पैर को बालू में जोर से अड़ा दिया जिससे ढेर-सी बालू फिसलकर नीचे की ओर मरे साँप की तरह रेंगने लगी। पर पता नहीं क्यों, वह पहले से भी अधिक बैचैन हो उठा और धीरे-धीरे पीपे के पुल से शहर की ओर चल पड़ा। रात गहरी होती जा रही थी। पुल से मुसाफिरों का आना-जाना प्रायः बन्द हो चुका था। बीच नदी में आकर तिलक एक क्षण के लिए रूक गया। सामने के घाट की बत्तियाँ पहले से कहीं अधिक चमकीली हो गयी थीं और ज्यों-ज्यों रात घनी होती जाती थी उनके इर्द-गिर्द फैला रोशनी का चक्का भी ज्यादा चमकीला और गाढ़ा होता जा रहा था।

काफी रात गये वह घर पहुँचा। दरवाजा बन्द था। माँ शायद सो गयी थी। उसने धीरे से कुण्डी खटखटायी।

'तिलक...इतनी रात को आ रहा है?' माँ ने दरवाजा खोलकर पूछा।

'हूँ।'

दरवाजे को फिर बन्द करते हुए माँ बड़बड़ाई, 'कुछ खाया-पीया भी है कि नहीं?'

'खाया है,' तिलक झूठ बोल गया। वह धीरे से आँगन में पड़ी एक चारपाई पर लुढ़क गया।

माँ ने कुछ कहना चाहा पर उसे एकदम चुप देख सहम गयी।

सुबह तिलक बहुत खामोश था। मुँह-हाथ धोकर चुपचाप बैठके में पड़ा रहा। सामने किसी सेठ की कोठी है-चौतरफा बगीचे से घिरी हुई। छोटे-बड़े अनेक पेड़ों के बीच ताड़ का एक लम्बा पेड़ है जो हवा के आधात से नुचे पंछी की तरह प्रतीत होता है। उसके कई बड़े-बड़े छितनार पत्ते टूटकर लटक गये हैं- सूखे-सूखे, पीले। आगे सड़क में मोड़ पर कुछ लड़के लुका-छिपी का खेल कर रहे है। घर के आँगन में धुआँ भरा है शायद, क्योंकि बैठके की खिड़की से कड़वाहट की फुहारें उड़कर फेफड़े को खरोंचने लगी हैं। उधर घण्टी की आवाज उठने लगी है, जो धीरे-धीरे तेज होती जा रही है, जो एक लमहे में अपनी पूरी ऊँचाई पर चढ़कर यों खामोश हो जायेगी मानों पालने में झुलाने वाले हाथ ने ही उसका गला घोंट दिया हो। माँ शायद पूजा कर रही हैं। तिलक चुप बैठा यह सब सोचता रहा।

'तिलक!' माँ दबे पाँव कमरे में घुस आयीं, 'अरे, ये देख न पुष्पा आयी है।' तिलक एक क्षण यों ही माँ की ओर देखता रहा।

'पंखा चला ले न! तू तो पसीने से नहा गया है।' माँ ने स्विच दबाये-उठाये, एक के बाद एक, तब पंखा चला।

'नहीं याद पड़ा तुझे? अरे वो पड़ोस वाले शोभनाथ मिसिर की लड़की। तू तो इसके साथ बचपन में बहुत खेला-कूदा है।'

'पर वे लोग तो कहीं बाहर थे बहुत दिनों से। पता नहीं पलामू या कहाँ....।'

'हाँ थे तो, पर अब मिसिर जी रिटायर हो गये हैं। अब घर पर ही रहेंगे सब लोग। कल मैं गयी थी पुष्पा की माँ से मिलने। बहिन जी तनिक भी नहीं बदली हैं। वही भरा-पूरा मुँह, वैसे ही बात-बात में हँसी का फुहारा।' माँ एकाएक चुप हो गयीं। उनका मुख अचानक जाने क्यों उदास होकर रह गया।

पुष्पा शायद द्वार पर ही खड़ी थी, भीतर आ गयी। उसके हाथ में माँ ने पूजा का थाल थमा दिया है। आरती की लौ मद्धिम हो चुकी है, पर सुवास तो वैसी ही है। कमरा एक क्षण के लिए जलते घी की सुगन्ध से भर जाता है जिसमें फूल और चन्दन की ही नहीं, माँ के हाथों की गन्ध भी मिल गयी है शायद। इस खुशबू का तिलक पर एक ही असर होता है कि वह न चाहते हुए भी ऊबने लगता है। शरीर जैसे

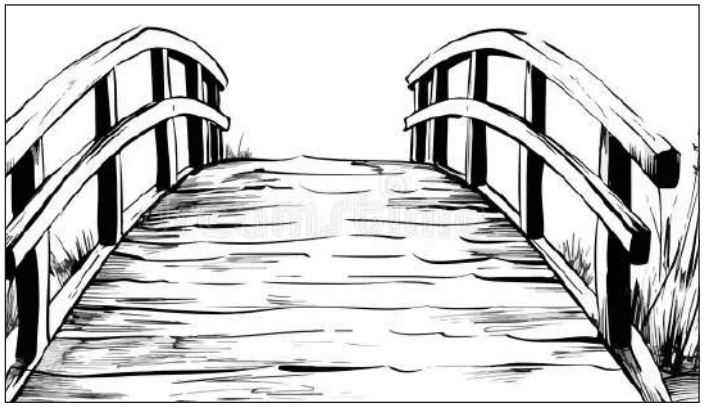

कुनकुने पानी में शिथिल होकर डूबा जा रहा हो। माँ पुष्पा के हाथ से थाल लेकर आँगन में चली जाती है।

'बैठ जा बेटी, तुम लोगों के नाश्ते के लिए कुछ लेती आऊँ ...।'

'मैं तैयार कर देती हूँ अम्मा ...।' पुष्पा माँ के साथ ही चली जाती है। पर पता नहीं क्यों तिलक को लगता है कि वह गयी नहीं, आयी है। दरवाजे से जितनी बाहर निकली है, कमरे में उतनी ही भीतर धँसी है। पुष्पा-उसके बचपन की डाल पर खिली गोलमटोल, रंगहीन, गन्धहीन कोंढ़ी-आज एक खुशबू-भरे रंगीन पुष्प में बदल गयी है। हँसी की एक हिलकोर उठती थी-आँगन में माँ और चाचा की बातें एक-दूसरे से टकराती थीं, फिर दो लहरें मिलकर एक दिशा में, एक धारा में बह चलती थीं- चलो बहन, आपने तो मुझे एकदम से उबार लिया। पुष्पा और तिलक... तिलक और पुष्पा...माँ की आँखें सुदूर छिपे भविष्य की प्यास से चमक उठती थीं। और आज पुष्पा सामने है, आत्मा की सारी प्यास का इकट्ठा उत्तर लिये-पीड़ा, निराशा, थकान के ऊपर चम्पई गन्ध का सम्मोहन फैलाती पुष्पा। और तभी उसे याद आयी कमली....धान की गन्ध, रोही मछली की तरह चमकदार त्वचा-और वह एक बार के लिए उस क्षण को पास खींचकर उसी में डूब-सा गया, जब उसने झटके से कमली को भुजाओं में भर लिया था। पर नहीं, कमली उसकी आत्मा तक पहुँच नहीं पाती। उसके स्पर्श में कोई रूकावट है, जो अतल को छूने को मचलती आत्मा को स्थूल बन्धन में बाँध लेता है-कमली कभी भी मेरे मन के संघर्ष को समझ नहीं पायेगी।

'क्यों, बहुत परेशान-से लगते हो?' नाश्ता रखते हुए पुष्पा बोली, 'कोई खास बात है क्या, या मेरा आना अच्छा नहीं लगा?'

तिलक उसकी ओर देखकर हँस दिया, जैसे यह हँसी कह रही हो कि उपकार के बोझ से अब ज्यादा न लादो, तुम खुद से पूछो कि तुम्हारा आना कैसा लगा। और शायद इन उभरते चित्रों के पूरे अर्थ को पुष्पा समझ गयी, नहीं तो तिलक की हँसी में ऐसा क्या था कि वह हलके से मुसकराकर गरदन झुका लेती।

उसके सिर्फ दो रोज बाद बड़ी उतावली करके माँ मिसिरजी के घर चलने को तैयार हुई। उनकी खुशियों का समुद्र झुर्रियों में जैसे अँट नहीं पाता था।

'आज मैं सब बातें पक्की करके ही लौटूँगी।' तिलक की ओर बड़े उत्साह से देखती हुई माँ बोली, 'पुष्पा आ जाये तो मुझे चैन मिले। सारी गृहस्थी उसे सौंपकर निश्चिंत हो जाऊँ। पुष्पा रहेगी तो सब ठीक रहेगा...।' माँ पता नहीं क्यों थोड़ा गंभीर हो गयी। तो क्या उन्हें मुझ पर सन्देह है या मजबूरी से लड़ने की तैयारी है यह, जिसने माँ के मन को भी परास्त कर दिय है। शायद वह सोचती है कि तिलक को किसी अदृश्य के चंगुल से पुष्पा ही छुड़ा सकती है। तो पुष्पा मेरे लिए जीमूतवाहन का अवतार बन कर आने वाली है...। क्या करे माँ बेचारी। खुद तो हार गयी है। खैर...और जाने कितने उलझावों में अपने को लपेटता बुनता तिलक सो गया।

उठा तो माँ आ चुकी थीं, पर बिलकुल चुप थीं। चूल्हे पर चाय की केतली रख रही थीं कि तिलक जाकर पास के पाटे पर बैठ गया।

'क्या बातें हुई माँ, तुम इतनी गुम-सुम क्यों हो?'

'पता नहीं किसने उलटी-सीधी बातें जोड़ दी है मिसिर जी से ! लगे उपदेश देने कि लड़के को किसी ठीक-ठाक काम-धन्धे में लगाओं। कोई अच्छी-सी नौकरी कर लेनी चाहिए। जमाना बड़ा खराब है और फिर बुरी संगत आदमी को कहाँ नहीं खींच ले जाती?... मैं कुछ न बोली, क्या कहती? वो तो मैं दोपहर में ही चल देती, मगर पुष्पा ने रोक लिया। कहने लगी, चाची, लू तेज है, शाम को चली जाना। क्या करती, मन मारकर रूक जाना पड़ा।'

'पुष्पा ने नहीं कहा कुछ....?'

'वह क्या कहती बेचारी? कभी सामने आँखें हुईं तो गर्दन झुका ली। उसकी माँ ने उसे दूसरे कमरे में भेज दिया।'

तिलक बाहर आया तो गर्द में शाम डूब रही थी, पीली रोशनी मटमैली हो रही थी। हवा अब भी गरम थी, पर नदी की मुरदा रेत से छूकर ऐसी महकती थी कि दम घुटने लगे। अँधेरे की चादर शहर के मकानों पर, चिमनियों पर, घाटों पर, अफीम की कोठी पर, विक्टोरिया स्कूल पर-सब जगह धुएँ का गोटा लगा रही थी। तिलक चुपचाप चलता गया। वह नदी के किनारे आ पहुँचा। जरा हटकर बगल से पीपे का पुल शुरू होता है, जो उस पार के घाट को जोड़ता है। तिलक कुछ देर वैसे ही खड़ा रहा, फिर वह पीपे के पुल पर आ गया। नदी में नावें थीं, स्टीमर थे। उन सबसे अलग एक पुल था, जिस पर तिलक था। तिलक को लगा कि वह पुल उसके पैरों में बुरी तरह सट गया है, अब वह चल नहीं पायेगा। वह पुल की छोटी रेलिंग पर पीठ टिकाकर बैठ गया, जैसे वह कोई चेतन प्राणी न होकर उस पुल का ही एक हिस्सा है, जो पानी कम होने पर इस पार से उस पार जाने वालों के लिए नदी की धार पर बिछा दिया जाता है और फिर बरसात के आने पर बीच से तोड़ दिया जाता है।

* * *

सुरक्षा की नई कहानी भारतीय रेल की जुबानी

- अजय कुमार

लोहे की पटरियों पर बसी है एक दुनिया,
जहाँ चलती है उम्मीदों की गुनगुनाहट सुनहरी।
हर इंजन की गूंज, हर डिब्बे की थिरकन,
कहती है - 'सुरक्षा से ही है प्रगति का संगमन।'
बीते सफर ने हमें ये सिखाया,
कि हादसों का साया कितना डराया।
पर अब लक्ष्य है एक उज्ज्वल भविष्य बनाना,
जहाँ हर यात्री सुरक्षित हो, हर गाड़ी मुस्कुराना।
छोटी-सी भूल भी कर सकती है बड़ा नुकसान,
नियमों की अनदेखी नहीं है कोई सम्मान।
क्रॉसिंग पर रुकना, संकेतों को मानना,
यही है असली जागरूकता को पहचानना।
रेलवे की सुरक्षा सिर्फ मशीनों की नहीं,
हर इंसान की सजगता है इसमें सही।
पटरियों पर खेलना हो या लापरवाही करना,
यह सिर्फ नियम-तोड़ना नहीं, जीवन को खोना।
आज की रेल है बदलाव की मिसाल,
तकनीक से सज्जित, आधुनिक ख्याल।
कैमरों की निगरानी, सेंसर का जाल,
अंक और सिस्टम देंगे सुरक्षा को ढाल।
कर्मचारी हों या हों यात्री महान,
सबका प्रयास ही है असली अभियान।
इंजन की सीटी से लेकर गार्ड की पुकार,
हर आवाज कहती है - 'सुरक्षा है सब से खास उपहार।'
आओ मिलकर नई दिशा में कदम बढ़ाएँ,
सावधानी के दीप हर मन में जलाएँ।
सिर्फ अपने लिए नहीं, सबकी भलाई के लिए,
सुरक्षा को आदत बनाएँ, जीवन की रीत के लिए।
भविष्य की रेल होगी यही पहचान,
सुरक्षित, तेज और आत्मनिर्भर महान।
जहाँ हर सफर होगा गर्व की कहानी,
सुरक्षा बनेगी भारतीय रेल की जुबानी।

सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी

लू से बचें और सहेजें जीवन

-डॉ. चंद्रशेखर झा

तप रही धरती, जल रहा है गगन,
हवा हुई गरम, बढ़ गया तपन,
यह लू लिए आई है, गर्मी की छन-छन।
धूप की चुभन, हवा की मार,
अब जरा गरम हवा और लू से बचाव पर करें विचार।
छांव की ओट में रहना अब प्यारा,
क्योंकि सूरज उगल रहा आग का अंगारा।
टोपी, छाता साथ में रखना, सिर-तन को ढँक कर चलना।
पानी पीते रहना है बार-बार,
प्यास लगे ना, फिर भी पानी पीने का रखें विचार।
नारियल पानी, नींबू रस है इस ऋतु में प्यारा,
गर्मी में ये है सबसे बड़ा सहारा।
धूप में ना, ना दोपहर को निकलें, निकलें तो पूरा पानी पी लें,
जैसे डीजल पेट्रोल गाड़ी का ईंधन,
बस वैसे ही शरीर में भरा जल ही है जीवन।
धूप में निकलें तो कहीं ठंडी छांव में कुछ पल रह लें,
सर पर टोपी गमछा, आँखों पर काला चश्मा पहन लें,
बुजुर्ग हों या बच्चे नन्हें, धूप से बचें और ये कुछ नियम समझ लें।
हल्के कपड़े, सूती हो जाएं, गाढ़े रंगों से दूरी बनाएँ।
शरीर को शीतल रखना कला, वरना गर्मी करेगी हल्ला।
खान-पान में ठंडा लाएं, खीरा, ककड़ी, तरबूज सजाएं।
लू लगे तो मदद को चिल्लायें,
ओ.आर.एस. घोल तुरंत पिलायें।
शरीर के कपड़े थोड़े कर दें ढीले,
लू से पीड़ित को सावधानी से उठा कर छांव में ले चलें।
चलें सभी को अब हम समझाएं,
लू से खुद भी बचें, औरों को भी बचाएं।
गर्मी की इस तपी कहानी में, ये कुछ सावधानी है सबको जाननी,
क्योंकि गर्मी से हम सब को है जान बचानी।
रेल हमारा चले निर्बाध,
हम रेल के कर्मयोगी सदा रहे आबाद,
सतर्कता गई, दुर्घटना हुई हमारा मंत्र,
गर्मी से बचाओ का सतर्कता और सावधानी ही मंत्र,
आयें हम इन सावधानी के मंत्र को अपनायें,
गर्मी के दुष्प्रभाव से खुद भी और औरों को भी बचाएं।
क्यों ले रहे राड़, काट रहे पेड़ धरती का सीना फाड़,
चहूँ और कंक्रीटो का जाल,
बढ़ रहा पर्यावरण का तापमान कमाल।
आओ पर्यावरण के तापमान को कम करने की संभालें कमान,
लगाये सब एक पेड़ 'माँ' के नाम,
और यही होगा सही में भारत माता को अपना सलाम।

अपर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक,
पूर्व मध्य रेलवे, गया

कविता

राजमणि मिश्र

(1)

सपने दिखा गया कोई
हमको तो नींद नहीं आती
पर सपने दिखा गया कोई
अब मंजिल रही बस चंद कदम
यह बात बता गया कोई
नींद गहरी जगा गया कोई
हमको तो नींद नहीं आती
पर, सपने दिखा गया कोई
दिल पर चोट है मरहम लगा गया कोई
हम तुम्हारे हैं, तुम्हारे रहेंगे
यह भरोसा दिला गया कोई
हुकूमत की दौड़ में हारा है हाकिम
मेरे हाल-ए-दिल बता गया कोई

(2)

मन नदी के दीप सा
दूर तक फैला हुआ तट
चाँदनी में खो गया है
मन नदी के दीप सा
बिल्कुल अकेला हो गया है
दूर कहीं बजती रही बाँसुरी
नदिया किनारे
क्या कहें आज मेरा मन
कान्हा हो गया है
देखता रहा सपना मिलने का
उम्र के इस ठौर तक
खुश हूँ मैं, आज बेहद
मेरे मन का मीत
मुझको मिल गया है।

(3)

बहुत उमस भरा है
बहुत उमस भरा था दिन
अब शाम हुई
चलो कहीं से धूम आते हैं
दिल पर नहीं लेते
किसी बात को
मत करो फिक्र
ऐसी बातों को
अतल में डूबो आते हैं
आवारगी करता चाँद
अच्छा नहीं लगता
सड़क से सीधे चलकर
चल-चलो आज उसका
पीछा करते हैं
छत के मुंडेर पर, जब
आएगी चाँदनी
पूछेंगे चाँद की कैफियत
फिर बह्म मुहूर्त में प्रभाती गाते
अपने घर द्वार लौट आते हैं।

पूर्व राजभाषा अधिकारी
दानापुर मंडल

हिंदी तो दिल में

प्रेम प्रकाश प्रेम

(1)

हिंदी तो दिल में है बस इसे मुख पर लाना है
ये बहुमुखी भाषा है इसे पूरे विश्व में फैलाना है
है जोड़ती हमारे देश को
उत्तर से दक्षिण को पूर्व से पश्चिम को
भारत माता की बिंदी बनाकर इसका मान बढ़ाना है
देश के वीरों ने इसका पूरा व्याख्यान किया
बड़े-बड़े रचनाकारों ने इसका हरदम उत्थान किया
स्वतंत्रता संग्राम में भी भारत को भारत से जोड़ा था
अंग्रेजों के गर्दन को हिंदी ने खूब मरोड़ा था
मैकाले या डलहौजी को इसने भीतर से तोड़ा था
हर भारतवासी को इसने निद्रा से जगाया था
अब वक्त आ गया है फिर से इसे जगाने का
इसके मूल रूप में फिर से इसको लाने का
हम भावी पीढ़ी में इसका गुणगान करें
जीवंत हो जाए हिंदी अपनी
हम इतना इसका सम्मान करें
अब भेद भुला दो भाषाओं का
हिंदी में संवाद करो, इस भारत माता की बेटी को
पल पल तुम आबाद करो
आप सभी को हिंदी दिवस पर ढेरों बधाई।

(2)

गुरु आप वंदनीय हैं, आदरणीय हैं
माँ के बाद आप ही पूज्यनीय हैं
शिक्षा के मंदिर में ज्ञान का ज्योत जलाते।
गरीब हो या अमीर सबको एकसमान अपनाते
ककहरा से गणित का प्रमेय तक बतलाते।
भटके हुए छात्रों को सही मार्ग दिखलाते
अपने अंतःकरण से हमें बोध कराते।
अपनी समस्त विद्या को अपने शिष्य को दे जाते।
अर्जुन के लिए गुरु द्रोण और
राम के लिए वशिष्ठ बन जाते।
गुरुवर ऐसे ही सन्मार्ग पे हमे लेकर चलें
सत्कर्म और सद्बुद्धि से हम आगे बढ़ें।
बदले में मैं क्या दे सकता हूँ
आप कहे तो मैं एकलव्य भी बन सकता हूँ।
आप सभी गुरुजनों को
शिक्षक दिवस पर सादर नमन।

उप स्टेशन अधीक्षक
मानपुर

1. बचपन

वो छोटी सी दुनिया, वो छोटा सा आँगन,
वो जाड़ा वो गर्मी बरसता वो सावन,
वो चलना वो गिरना वो गिरकर संभलना,
पिता का सहारा वो माँ की दुआएँ,
तेरी याद में कब तलक गुनगुनाएँ,
चले आओ बचपन तुझे हम बुलाएँ।।

वो रोने का कंधा वो प्यारी-सी बाँहें,
चमकता - सा मुखरा वो तेरी पनाहें,
वो छुट्टी की घंटी मटर वाली बुढ़िया,
दादी की कहानी वो नहरी का पानी,
वो मस्ती का आलम कहाँ से हम पाएं,
चले आओ बचपन तुझे हम बुलाएँ।।

थोड़ी-सी शरारत थोड़ी-सी नजाकत,
कंचे का निशाना, प्रथम श्रेणी लाना,
पढ़ाई - लिखाई वो छुप्पम छुपाई,
छोटी-छोटी बातों पर तगड़ी लड़ाई,
वो मेले का रेला, वो कमसिन अदायें,
चले आओ बचपन तुझे हम बुलाएँ।

वो हँसना हँसाना बनाना बहाना,
कभी डाँट खाना, कभी भाग जाना,
वो जीरे के डब्बे से सिक्के चुराना,
छुहारे और मिश्री का भोग लगाना,
उन्हें याद कर दिल को कितना रुलायें,
चले आओ बचपन तुझे हम बुलाएँ।।

धान की रोपाई वो गेहूँ कटाई,
होली के गीतों से सुर का मिलाना,
वो क्रिकेट की दुनिया वो स्वछंद लम्हें,
वो छक्के और चौके प्रदर्शन के मौके,
इस व्यस्त चर्या में कैसे हम पाएँ,
चले आओ बचपन तुझे हम बुलाएँ।।

2. माली की चिंता

प्रिंस कुमार

डालियाँ जड़ से कटकर,फूलों को कब तक
भावनाओं का रस वो, पिला पायेंगी।
फल जो अभी ही, फलित हो रहा है
क्या मीठा उन्हें वो, बना पायेंगी?

जो कोमल-सी फुनगी, खुद ही अभी थी
अब जिम्मेदारी उन पर, बड़ी आ पड़ी है।
वो फूलों को अपने, न यूँ सूखने दें जो
बिना जड़ के खुद ही, सूखी जा रही है।।

वे कितना भी उनको, सजाएं-सँवारें
आँधियों, धूप, वर्षा से, उनको बचा लें।
पर मुश्किल दिनों के, उन झंझावतों से
कब तक उन्हें वे, बचा पायेंगी?

कि जिन्हें खुद ही, पोषण की उम्मीद थी
जो जड़ और माली के, खुद आसरे थी।
दिन-रात जग के जिसने, पाला था उनको
क्या ममता उस माँ की, भुला पायेंगी?

जड़ ने जकड़कर, रखा था पकड़कर
तब वो डालियाँ, कितनी लहरा रही थीं।
अब वही डालियाँ, अपने कांधे पर रखकर
क्या फूलों-फलों को नचा पाएँगी?

जो सुरक्षा की दुनिया, रचाई थी माली ने
और उड़ने को सारा, गगन दे दिया था।
उस लगन से चमन को, बचाएगी डाली
क्या वही प्यारी दुनिया, बसा पायेगी?

वो जो भँवरें मँडराते, रहे हैं, रहेंगे
गा-गा के रिझाते रहे हैं, रहेंगे।
उन छद्म गीतों का, असर पड़ न पाए
क्या लोरी कोई ऐसी, सुना पायेंगी?

आज की कोमल कलियाँ, जो चाहेंगी कटना
डालियों की तरह ही, अपने जड़ से बचना।
प्रभंजन के उस निर्णायक घड़ी में
उस बिछुड़न को क्या वो, पचा पायेंगी?

वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग

सीटी–रेल अच्छा खेल

- प्रभंजन कुमार गुप्ता

जीआर 450 यह बताता है,
बजाना सोलह सीटी सिखाता है।
कश्मीर से कन्याकुमारी की है बहुत दूरी,
सीटी बजाना है बहुत जरूरी।।
तीन लंबी सीटी (000...) यह बतलाता है,
गाड़ी फॉलिंग मार्क के अंदर नहीं कहलाता है।
सुरक्षा, संरक्षा पहले बहुत जरूरी,
भले ही जाना हो बहुत कितनी भी दूरी।।
नहीं तो साइड टक्कर हो जाएगी,
गलती एक की, हजारों जान गवाएगी।।
दो लंबी सीटी (00...) पेन्टोग्राफ उठाने को कहता,
लंबी छोटी-छोटी (...00) तो सिग्नल खराब ही रहता।
लंबी छोटी लंबी (...0...) बजे तो
वो चालक पेन्टो नीचे करना,
लंबी छोटी लंबी छोटी (...0....0)
कहता गाड़ी पार्ट होने से डरना।।
छोटी छोटी लंबी (00....) रो-रोकर कहती,
गाड़ी में कही वैकम नहीं है रहता।
अपनी गति छोड़ खतरे की मति में,
या पूर्ण संचार व्यवस्था भंग हो।।
छोटी सीटी (0) बार-बार देकर,

स्वचल लाइन में तरंग हो।।
हो बुलाना पीछे के रेल कर्मचारी को,
या मालगाड़ी की हो चलने की तैयारी।
सुरंग, कुहासा हो या हो तूफान
बिना रूके स्टेशन, फाटक, या कटान।
घुमाव रास्ता या रोक सिग्नल ऑन,
लगातार लंबी सीटी (.....) का हो विधान।।
गाड़ी चलाना हो या रवाना हो,
शेड में लगाना हो या नया इंजन लाना हो।
भाई मुझे सहायता मत करना,
एक छोटी (0) सीटी का बजाना हो।।
आईबीएस ऑन, टेलीफोन खराब हो,
एक लंबी सीटी कहती है।
ना प्रेशर पच्चर हटाओ,
स्वचल रोक पर जब जाने को रहती है।।
आईबीएस ऑन, पर संचार ठीक, टेलीफोन से हो बात।
चश्मा, सीटी देकर गार्ड बाबू को
अवगत करायें गाड़ी के हालात।।
जब गाड़ी नियंत्रण से बाहर हो जाए,
चालक सहायक ब्रेक न लगाए।
तब चालक तीन छोटी सीटी (000) बजाएगा,
तभी तो गार्ड साहब ब्रेक लगाएगा।।
गाड़ी कई कारणों से जब आगे नहीं बढ़ती है,
चार छोटी सीटी (0000) देकर चालक तब कहता है।
सामान बचावकर चार पटाखा रखना,
गार्ड बाबू नहीं तो इसका मजा चखना।।
दे लंबी दो छोटी सीटी (.....00) देकर,
चालक, गार्ड को लंबी दूरी बुलाता है।
दो छोटी सीटी (00) देकर चालक,
स्टेशन मास्टर और गार्ड को जगाता है।
है गाड़ी किनारे लाइन साफ है,
गार्ड अपना ब्रेक हटाना,
लंबी छोटी सीटी (...0) देकर,
जनता को जल्दी चढ़ाना।
टोकन मिले न, या चूक जाए,
या गलत हो प्रस्थान प्राधिकार।
छोटी लंबी छोटी (0.....0) (चश्मा सीटी) देकर,
छोड़े स्थान और अधिकार।।

लोको पायलट शंटर डीजल
पूर्व मध्य रेल, डीडीयू
मो. नं.: 9507175119

डीडीयू मंडल की गतिविधियां

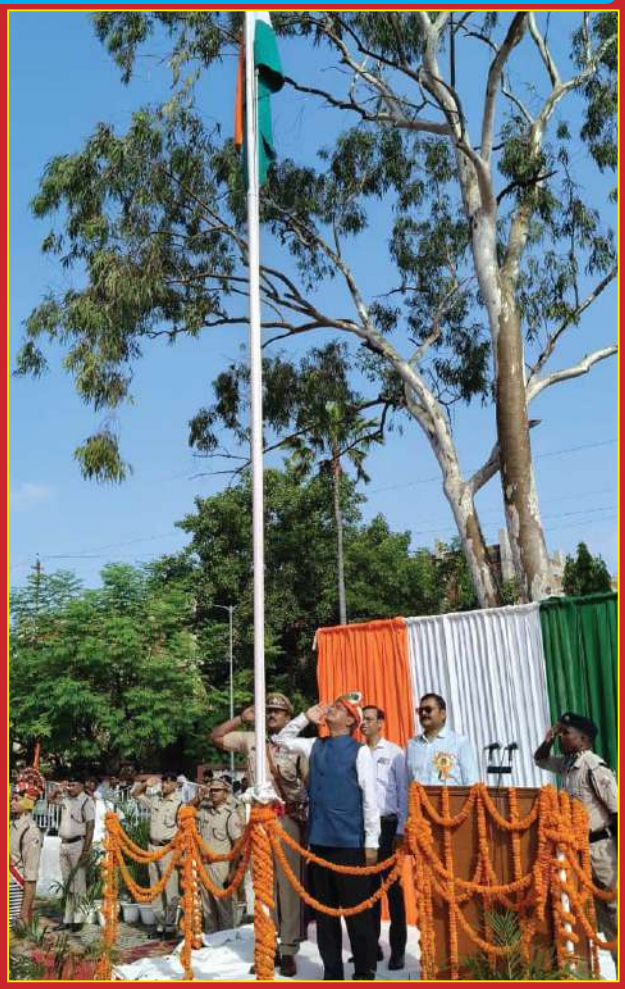

डीडीयू मंडल की गतिविधियां

डीडीयू मंडल की गतिविधियां

डॉ. हरिवंश राय बच्चन

27 नवंबर 1907 – 18 जनवरी 2003